रोग निदान (परिभाषा एवं महत्व)

जिस विज्ञान में दोष ,दूष्य ,मल, स्त्रोतसो की विकृति का ज्ञान होता है , उसे रोग निदान कहते है।
रोग निदान अर्थात रोग व रोगी की परीक्षा कर रोग को सुनिश्चित करना है।

परिभाषा :-

" रोगाणां विशेषेण वातजत्वादिसाध्यासाध्यत्वादिरुपेण निश्चयो ज्ञानं येन स रोगविनिश्चयो ग्रन्थो। "

मधुकोष टीका के अनुसार रोग विनिश्चय हेतु निम्न ज्ञान परमावश्यक है -

1) रोगों के वातादि भेद का ज्ञान करना।
2) रोगों का साध्यता व असाध्यता की दृष्टि से ज्ञान करना।

रोग निदान को आधुनिक मतानुसार Medical diagnosis है।

Medical Diagnosis :- Determining cause and effect. It is a process of determining by history taking of patient, Physical examination and one or more diagnostic procedures.

महत्त्व :-

1) आयुर्वेद के त्रिसूत्रात्मक ज्ञान **" हेतुलिङ्गौषध ज्ञान "** हेतु ,लिङ्ग और औषध के लिए रोग निदान का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।

2) **" व्याधेतत्व परीज्ञानं वेदनायाश्च निग्रह। "**

व्याधि की परीक्षा ठीक प्रकार करना व वेदना का निग्रह करने के लिए रोग निदान का ज्ञान आवश्यक है।

3) रोग उत्पन्न करने वाले कारणो को दो भागों में विभाजित किया गया है -

1) सूक्ष्म घटक (Microscopic Pathology)
2) स्थूल घटक (Clinical Pathology)

(i) सूक्ष्म घटक या आधारभूत घटकों-की विकृतावस्था का ज्ञान विभिन्न चरणों में किया जाता है।

1) दोष की विभिन्न अवस्थायें- प्रकोप , क्षय , विभिन्न भेदों की विकृत अवस्था का ज्ञान करना
2) धातु व उपधातु की विभिन्न अवस्थायें क्षय , वृद्धि , प्रदोषज विकार
3) मल की विभिन्न अवस्थायें - क्षय , वृद्धि , प्रदोषज विकार 1
4) अग्नि दुष्टि का ज्ञान करना
5) दोषों की विभिन्न गति का ज्ञान करना
6) स्रोतो की दुष्टि का ज्ञान करना

(ii) स्थूल घटक- की विकृतावस्था का ज्ञान व्याधि के लक्षणों की परीक्षा (Sign and symptoms से किया जाता है।

इन सभी बातो का ज्ञान भी हमे रोग निदान के ज्ञान के द्वारा ही हो सकता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

दोष वृद्धि, क्षय,एवं प्रकोप

" वायु: पित्तं कफश्चोक्त: शरीरे दोषसंग्रह: । मानस: पुनरुदिष्टो रजश्च तम एव च।। " (च. सू. 1/57)

रोग के अधिष्ठान शरीर एवं मन है अत: दोष भी दो प्रकार के है -

दोष

शारीर दोष ⇨
1) **वात**
2) **पित्त**
3) **कफ**

मानस दोष ⇦
1) **रज**
2) **तम**

वात के सामान्य कर्म –

" उत्साहोच्छवासनि:श्वासचेष्टा धातुगति: समा । समो मोक्षो गतिमतां वायो: कर्माविकारजम् ।। "

उत्साह (कार्य करने की मानसिक एवं शारीरिक प्रवृत्ति) , **उच्छवास, नि: श्वसन क्रिया** , **चेष्टा** (कायिक, वाचिक तथा मानसिक चेष्टायें) धातुओं (रसादि) की समयक् प्रकार से गति, मलादि का सम्यक् प्रकार से शरीर मोक्षण (निष्कासन), क्रियायें अविकृत वात के कर्म हैं।

वात वृद्धि लक्षण :-

" वात वृद्धौ वाक्पारुष्यं कार्श्यं कार्ष्ण्यं गात्रस्फुरणं उष्णकामिता निद्रानाशो अल्पबलत्वं गाढवर्चस्त्वं च । "

1) भाषण मे कर्कशता
2) दुबलापन (Emaciation)
3) त्वचा का कृष्ण होना (Blackish discolouration)
4) स्फुरण (Throbbing pain)
5) उष्ण द्रव्यों के सेवन की इच्छा (Desire for warm food intake)
6) निद्रा का नाश होना (Insomnia)
7) अल्प बल (Loss of strength)
8) विबन्ध अथवा मलसंग अथवा गाढ़वर्च (Constipation)

वात भेद
1) प्राण वायु
2) उदान वायु
3) व्यान वायु
4) समान वायु
5) अपान वायु

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वातक्षय के लक्षण :- " वातक्षये मन्दचेष्टताऽल्पवाक्त्वमप्रहर्षो मूढसंज्ञता च । "

1) चेष्टा का मन्द होना (Diminished Activities)
2) वाक् शक्ति का दुर्बल होना (Dull voice and less speech)
3) हर्ष का अभाव (Loss of cheerfullness)
4) संज्ञा का नाश होना (Loss of sensation)

वात प्रकोप के हेतु :-

" व्यायामादपतर्पणात् प्रपतनाद्भङ्गात् क्षयाज्जागराद्वेगानां च विधारणादतिशुचः शैत्यादतित्रासातः ।
रुक्ष क्षोभ कषायतिक्तकटुकैरेभिः प्रकोपं व्रजेत्, वायुर्वारिधरागमें परिणते चान्नेऽपराह्णेऽपि च।। "

आहारज निदान	विहारज निदान	मानसिक निदान
1. रुक्ष द्रव्यों का अतिसेवन	1. अतिव्यायाम	1. अतिशोक
2. कठिन द्रव्यों का अतिसेवन	2. अपतर्पण	2. अतित्रास
3. तिक्त द्रव्यों का अतिसेवन	3. ऊंची जगह से गिरना	
4. कषाय द्रव्यों का अतिसेवन	4. भग्न या अंग भंग	
5. अति शीत द्रव्यों का सेवन	5. धातु क्षय	
	6. जागरण	
	7. वेग विधारण	
	8. अधिक बलवान से लड़ना	
	कालानुसार- वर्षाकाल, भोजन जीर्ण होने के पश्चात्, अपराह्न में।	

प्रकुपित वात के लक्षण :-

" कुपितस्तु खलु शरीरे शरीरं नानाविधैर्विकारैरुपतपयति बलवर्णसुखायुषामुपघाताय मनोव्याहर्षयति,
सर्वेन्द्रियाण्युपहन्ति, विनिहन्ति गर्भान् विकृतिमापादयन्ति कालमवाधारयति,
भयशोकमोहदैन्यातिप्रलापाञ्जनयति प्राणांश्चोपरुणद्धि । "

Ayurvedic Formulation

1) नानाविध विकार से उपतप्त (Manifestation of various diseases)
2) बलवर्णसुख आयु का उपाघात (Reduced Strength, Complexion, Peace, life Expectancy)
3) मन दुखी (Sorrowness)
4) सभी इन्द्रियों का हनन (Loss of sensations)
5) गर्भ नष्ट (Intra uterine death)
6) गर्भ में विकृति उत्पन्न (Deformities in embryo)
7) गर्भ को सुखा कर दीर्धकाल तक धारण (Intrauterine growth retardation)
8) भय (Fear)
9) शोक (Grief)
10) मोह (Confusion)
11) प्रलाप (Delerium)
12) प्राण नष्ट (Death)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पित्त के सामान्य कर्म –

" दर्शनं पक्तिरूष्मा च क्षुत्तृष्णादेहमार्दवम् । प्रभा प्रसादो मेधा च पित्तकर्माविकारजम् ।। "

देखना, पचाना [भोजन आदि का] , शरीर की स्वाभाविक **ऊष्मा** को बनाए रखना, **भूख तथा प्यास** को उत्पन्न करना, शरीर की **मृदुता** बनाए रखना, **प्रभा** [कांति], **प्रसाद** [मानसिक प्रसन्नता], **मेधा** [धारणात्मक बुद्धि] को कार्यरत रखना ये अविकृत पित्त के कर्म हैं।

पित्तवृद्धि के लक्षण :-

" पित्तवृद्धौ पीतावभासता संताप: शीतकामित्वमल्पनिद्रता मूर्छा बलहानिरिन्द्रियदौर्बल्यं पीतविण्मूत्रनेत्रत्वं च । "

1) त्वचा का वर्ण पीत होना (Yellowish discolouration of skin)
2) शरीर का ताप बढ़ना (Febrile)
3) शीत पदार्थो के सेवन की इच्छा (Desire for cold food)
4) अल्प निद्रा (Insomnia)
5) मूर्छा (Faint)
6) बल की हानि (Strengthlessness)
7) इन्द्रियों द्वारा विषय ग्रहण करने में दुर्बलता (Diminished sensation of sensory organs)
8) मूत्र, मल व नेत्रों का पीत वर्ण का होना (Pale urine or stool or eyes)

पित्त भेद

1) रंजक पित्त
2) साधक पित्त
3) भ्राजक पित्त
4) आलोचक पित्त
5) पाचक पित्त

Ayurvedic Formulation

पित्तक्षय के लक्षण :-

" पित्तक्षये मन्दोष्माग्निता निष्प्रभत्वं च । "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

1) शरीर का ताप कम होना (Low temprature)
2) अग्नि का दुर्बल होना (Impaired digestion)
3) प्रभा का क्षय (Lusterless)
4) अरोचक (Anorexia)
5) अविपाक (Indigetion)

पित्तप्रकोप के हेतु :-

" कट्वम्लोष्णविदाहितीक्ष्णलवणक्रोधोपवासातपस्त्रीसंपर्कतिलातसीदधिसुराशुक्तारनालादिभिः ॥
भुक्ते जीर्यति भोजने च शरदि ग्रीष्मे सति प्राणिनां मध्याह्ने च तथाऽर्धरात्रि समये पित्तं प्रकोपं व्रजेत् ॥ "

आहारज निदान	विहार निदान
कटु रस सेवन	क्रोध
अम्ल रस सेवन	उपवास
लवण रस सेवन	आतप
उष्ण भोजन सेवन	स्त्री संपर्क
विदाही भोजन	**कालानुसार** - भोजन के जीर्ण होते समय , शरद व ग्रीष्म ऋतु , मध्यान्ह व अर्धरात्रि में
तीक्ष्ण भोजन	
तिल	
अतसी	
दधि	
सुरा	
आरनाल	

प्रकुपित पित्त के लक्षण –

" मरीचिरुवाच- अग्निरेव शरीरे पित्तान्तर्गत: कुपिताकुपित: शुभाशुभानिकरोति:, तद्यथा- पक्तिमपक्तिं दर्शनमदर्शनं मात्रामात्रत्वमूष्मण: प्रकृतिविकृतिवर्णी शौर्यं भयं क्रोधं हर्ष मोहं प्रसादमित्येवमादीनि चापराणि द्वन्द्वानीति । "

आचार्य मरीच ने पित्त के अन्तर्गत रहने वाली अग्नि के कुपित अथवा अकुपित होने पर शुभ व अशुभ कर्मों का वर्णन किया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) पक्ति अथवा अपक्ति (Digestion or indigestion)
2) दिखाई देना अथवा दिखाई नहीं देना (Normal vision or vision loss)
3) शरीर का ताप कम अथवा बढ़ना (Temprature reduced or increased)
4) प्राकृत अथवा विकृत वर्णो का उत्पन्न होना (Complexion normal or abnormal)
5) शौर्य, भयं (Courage or fear)
6) क्रोधं, हर्ष (Anger or cheerfull)
7) मोह, प्रसाद (Confusion or delightfullness)
8) सुख, दुख (Happy or sorrow)
9) इच्छा, द्वेष (Desire and hate) आदि का होना अथवा नहीं होना।

कफ के सामान्य कर्म –

" स्नेहो बन्धः स्थिरत्वं च गौरवं वृषता बलम् । क्षमा धृतिरलोभश्च कफकर्माविकारजम् ।। "

शरीर में **स्नेह** (स्निग्धता), **बन्ध** (विभिन्न रचनाओं का परस्पर अनुबन्ध), **स्थिरत्व** (शारीरिक अवयवों में दृढ़ता) **गौरव** (गुरुता), **वृषत्व** (वीर्यवत्ता), **बल** [शारीरिक एवं मानसिक शक्ति तथा रोगप्रतिरोधक शक्ति] एवं **क्षमा, धैर्य तथा अलोभता** आदि मानसिक प्रवृत्तियों का सम्यक् सम्पादन, अविकृत कफ के कर्म हैं।

कफवृद्धि के लक्षण :-

" श्लेष्मवृद्धौ शौक्ल्यं शैत्यं स्थैर्य्य गौरवमसादस्तन्द्रा निद्रा सन्ध्यस्थिविश्लेषश्च । "

1) त्वचा का वर्ण श्वेत होना (Whitish discolouration of skin)
2) शीतता का अनुभव (Feeling of coldness)
3) स्थिरता (Stability)
4) गुरुता (Heaviness)
5) अवसाद (Depression)
6) तन्द्रा (Drowsiness)
7) निद्रा (Sleep)
8) सन्धियों में शिथिलता या ढीलापन (Looseness of joints)

Ayurvedic Formulation

कफक्षय के लक्षण :-

" श्लेष्म क्षये रुक्षताऽन्तर्दाह आमाशयेतरश्लेष्माशय शून्यता सन्धिशैथिल्यं तृष्णादौर्बल्यं प्रजागरणं च । "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) रुक्षता (Dryness)
2) आन्तरिक दाह (Internal burning)
3) आमशय तथा अन्य स्थानों पर श्लेष्मा की शून्यता (Loss of shleshma from their own site)
4) सन्धियों में शिथिलता (loss of strength of joints)
5) तृष्णा (Thirst)
6) दुर्बलता (Weakness)
7) रात्रि जागरण (Night awakening)

कफप्रकोप के हेतु :-

" गुरुमधुररसातिस्निग्धदुग्धेक्षुभक्ष्यद्रवदधिदिननिद्रापूपसर्पिष्प्रपूरैः ।
तुहिनपतनकालेश्लेष्मणः संप्रकोपः प्रभवति दिवसादौ भुक्तमात्रे बसन्ते । "

आहारज निदान	विहारज निदान
गुरु भोजन	अधिक निद्रा करने से
मधुर भोजन	**कालानुसार -** दिन व रात्रि के आदि काल में , भोजन करने से, बसन्त ऋतु में
अतिस्निग्ध	
दुग्ध विकार	
इक्षु विकार	
द्रव भोजन	
दधि सेवन	
सर्पि प्रयोग	

प्रकुपित कफ लक्षण :-

" काप्य उवाच - सोम एव शरीरे श्लेष्मान्तर्गतः कुपिताकुपितः शुभाशुभानि करोति, तद्यथा- दार्ढ्यं शैथिल्यमुपचयं कार्श्यमुत्साहमालस्यं वृषतां क्लीवतां ज्ञानमज्ञानं बुद्धिं मोहमित्येवमादीनि चापराणि द्वन्द्वानीति।। " (च. सू. 12/12)

आचार्य काप्य ने कफ में रहने वाले सोम के कुपित, अकुपित होने पर उत्पन्न होने वाले शुभ अशुभ कर्म निम्न बताये हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) दृढता. शिथिलता (Compact or Loosenes)
2) उपचय व कार्ष्य (Healthy or emaciation)
3) उत्साह व आलस्य (Excitment or lazyness)
4) वृषता व क्लीवता (sexual activity increased or decreased)
5) ज्ञान व विज्ञान (Sensefull or senseless)
6) बुद्धि व मोह (Mindfullness or confusion) आदि कर्मो में प्रवृत्त होता है।

मेदोवहस्त्रोतस परिचय

मूल - **'मेदोवहानां स्त्रोतसां वृक्कौ मूलं वपावहनं च।' (च. वि. 5/7)**

आचार्य **चरक** अनुसार - वृक्क , वपावहन

मेदोवहे द्वे, तयोर्मूलं कटि वृक्कौ च । (सु. शा. 9/16)

आचार्य **सुश्रुत** अनुसार कटि, वृक्क

स्त्रोतोदुष्टि हेतु -

" अव्यायामाद्दिवास्वप्नान्मेद्यानां चातिभक्षणात् । मेदोवाहीनि दुष्यन्ति वारुण्याश्चाति सेवनात् ।। "

- व्यायाम न करना,
- दिन में शयन करना,
- मेद धातु को उत्पन्न करने वाले पदार्थों यथा मेद युक्त मांस का सेवन करना,
- वारुणी नामक मद्य (ताड व खर्जूर से निर्मित) का अधिक सेवन करना

स्त्रोतोदृष्टि लक्षण -

" निन्दितानि प्रमेहाणां पूर्वरूपाणि यानि च। (च. सू. 28 / 15) "

अष्टनिन्दित पुरुषों में वर्णित अष्ट विकार मुख्यतः स्थौल्य व कार्य, प्रमेह के पूर्वरूप

Ayurvedic Formulation

अष्टोनिन्दितीय पुरुष :-

" इह खलु शरीरमधिकृत्याष्टौ पुरुषा निन्दिता भवन्ति , तद्यथा - अतिदीर्घश्च , अतिह्रस्वश्च ,अतिलोमा च , अलोमा च , अतिकृष्णश्च , अतिगौरश्च , अतिस्थूलश्च , अतिकृशश्चेति ।। " (च . सू. 21/3)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चरक संहिता सूत्रस्थान के अष्टौनिन्दितीय अध्याय में इसका वर्णन किया गया है। आचार्य चरक ने आठ प्रकार के निन्दित पुरुष माने है -

1) अतिदीर्घ (Gigantism)
2) अतिह्रस्व (Dwarfism)
3) अतिलोमा (Excess hair on body)
4) अलोमा (Hairless body)
5) अतिकृष्ण (Nigro body)
6) अतिगौर (Albinism)
7) अतिस्थूलम (Obese)
8) अतिकृश (Emaciation)

स्थौल्य निदान

ग्रन्थ निर्देश - चरक संहिता, सूत्र स्थान, अध्याय - **21 "अष्टौनिन्दितीय अध्याय"**

सामान्य व्याधि परिचय - आधुनिक सामाजिक परिवेश में स्थौल्य अर्थात् मोटापा सामान्य रूप से देखा जा सकता है। अनुचित आहार विहार का सेवन करने से तथा कुछ अन्य कारणों से समाज में लगभग हर आयु वर्ग इस समस्या से ग्रसित है। वर्तमान चिकित्सा शास्त्र में इसका सामञ्जस्य Obesity से स्थापित किया जाता है।

निरुक्ति -

" स्थूल परिबृंहणे "

स्थौल्य शब्द से शरीर की अत्यधिक वृद्धि होना अर्थ ग्रहण करने योग्य है।

अतिस्थूलता के कारण :-

" तदतिस्थौल्यमतिसम्पूरणादगुरुमधुरशीतस्निग्धोपयोगादव्यायामादव्यवायादिवास्वप्नाद्धर्ष नित्यत्वादचिन्तनाद्बीजस्वभावाच्चोपजायते। "

1) **अतिसंपूरणाद् :-** मात्रा में अधिक भोजन करने से,
2) गुरु, मधुर, शीत, स्निग्ध पदार्थों का सेवन करने से,
3) **अव्यायामाद् -** व्यायाम न करने से,
4) **अव्यवायाद् -** मैथून न करने से,
5) **दिवास्वप्नाद् -** दिवाशयन करने से,
6) नित्य हर्षित, प्रसन्न रहने से,
7) **अचिन्तनाद् -** चिन्ता मुक्त रहने से,
8) **बीजस्वभाव -** माता पिता के आनुवांशिक गुणों से

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अतिस्थूलता के लक्षण -

" मे दोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः। अयथोपचयोत्साहो नरोऽतिस्थूल उच्यते ।। "

मेद और मांस के बहुत बढ़ जाने के कारण श्रोणिमण्डल , उदर और स्तन मोटे होकर लटक जाते हैं और चलते समय हिलते हैं। जिस व्यक्ति के शरीर का संगठन अव्यवस्थित रूप से बहुत मोटे अंगोंवाला होता है और उसमें शरीर के अनुपात से उत्साह नहीं होता , उसे अतिस्थूल कहते हैं।

स्थौल्यो सम्प्राप्ति :-

कफ प्रधान - आहार सेवन से कफ वृद्धि

⇩

कफ अपने गुणधर्मी धातु (मेद धातु) की वृद्धि करता है

⇩

मेदवहस्रोतस के अतिरिक्त अन्य उत्तरोत्तर स्रोतसों के मार्ग अवरुद्ध

⇩

स्रोतसों के बद्ध होने के कारण ,वायु की कोष्ठ में अधिक वृद्धि

⇩

कोष्ठस्थ अग्नि को वायु अधिक प्रदीप्त करती है

⇩ ⇩

- भोजन की बार - बार क्षुधा
- अधिक भोजन करने से स्थौल्य

- भोजन का शीघ्र पाक करेगी
- अधिक आहार रस उत्पत्ति तथा मेद धातु का अधिक पोषण तथा उत्तरोतर धातु का क्षय
- उपद्रव उत्पन्न (अल्पप्राण , मैथुन शक्तिह्रास)

Ayurvedic Formulation

सम्प्राप्ति घटक -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) **दोष -** त्रिदोष (कफ प्रधान)
2) **दूष्य -** मेद एवं रस धातु
3) **अधिष्ठान** - सर्व शरीर विशेषतः स्फिग, उदर, स्तन
4) **स्त्रोतस् -** मेदोवह
5) **स्त्रोतोदुष्टि -** संग एवं विमार्ग गमन
6) **अग्नि** - प्रारम्भ में अग्निमांद्य (आमरस उत्पत्ति), पश्चात् तीक्ष्ण
7) **साध्यता असाध्यता -** कृच्छ साध्य।
8) **प्रत्यात्मलक्षण :-** मेदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः।

अतिस्थूल पुरुष के दोष :-

" अतिस्थूलस्य तावदायुषो हासो जवोपरोधः कृच्छ्रव्यवायता दौर्बल्यं दौर्गन्ध्यं स्वेदाबाधः क्षुदतिमात्रं पिपासातियोगश्चेति भवन्त्यष्टौ दोषाः । "

1) **आयुषो हासो** - आयु कम होना
2) **जवोपरोधः** - कार्य करने में उत्साहहानि
3) **कृच्छ्रव्यवायता** - मैथून शक्ति का क्षय
4) दुर्बलता
5) शरीर में दुर्गन्ध का होना
6) अत्यधिक पसीना होना
7) अत्यधिक भूख लगना
8) अत्यधिक प्यास लगना

उपद्रव -

प्रमेहपीड़िकाज्वरभगन्दरविद्रधिवातविकाराणामन्यतम्। (सू. सू. 15/37)

- प्रमेहपीडिका
- ज्वर
- भगन्दर
- विद्रधि

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

साध्यतासाध्यता -

- यदि स्थूल पुरुष कफज प्रकृति का है, तो व्याधि कृच्छ्रसाध्य अथवा असाध्य होगी
- माता पिता के बीज दोष से उत्पन्न स्थूलता- असाध्य।
- यदि रोगी बलवान तथा आहार विहार का पालन करने वाला है तो व्याधि साध्य होती है।

कार्श्य निदान

संदर्भ ग्रन्थ - चरक संहिता, सूत्रस्थान, अध्याय **21 " अष्टौनिन्दितीय अध्याय "**

सामान्य व्याधि परिचय - कार्श्य रोग अथवा कृशता मुख्य रूप से कुपोषण जन्य व्याधि है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्रानुसार कृशता का सामञ्जस्य Emaciation से स्थापित किया जाता है।

निरुक्ति - **'कृश' तनूकरणे**

कृश अर्थात् तनु, सूक्ष्म, अल्प। अतः जो प्रमाण में सामान्य से अल्प हो उसे कृश कहते हैं

अतिकृशता के कारण :-

" सेवा रूक्षान्नपानानां लङ्गनं प्रमिताशनम् । क्रियातियोगः शोकश्च वेगनिद्राविनिग्रहः ॥

रूक्षस्योद्वर्तनं स्नानस्याभ्यासः प्रकृतिर्जरा । विकारानुशयः क्रोधः कुर्वन्त्यतिकृशं नरम् ॥ "

1) रुक्ष आहार और पेय का सेवन ,
2) लंघन (उपवास तथा शोधन आदि),
3) बहुत कम भोजन या एक रस का ही
4) शारीरिक , मानसिक या वाचिक क्रियाओं का अधिक करना ,
5) शोक करना ,
6) मल - मूत्रादि तथा निद्रा के वेगों को रोकना
7) रूक्ष द्रव्यों से बने उबटन का लगाना ,
8) अधिक स्नान करना ,
9) शरीर की वात प्रकृति या माता - पिता का कृश होना
10) वृद्धावस्था ,
11) किसी रोग का दीर्घकाल तक रहना
12) क्रोध करना

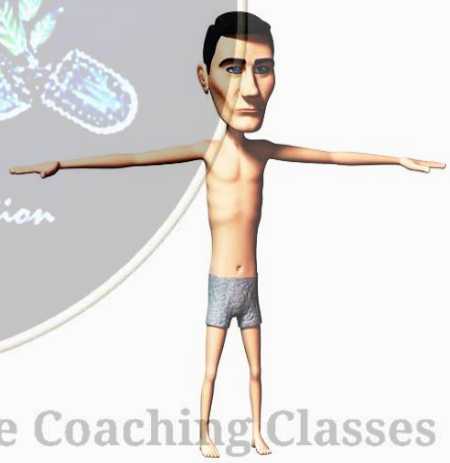

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अतिकृश की लक्षण :-

" शुष्कस्फिगुदरग्रीवो धमनीजालसन्ततः । त्वगस्थिशेषोऽतिकृशः स्थूलपर्वा नरो मतः ॥ "

जिस व्यक्ति के नितम्ब , पेट और गरदन सूखे हों , उन पर मांस न हो , शरीर की धमनियों का जाल दिखलायी देता हो, शरीर में त्वचा और हड्डी मात्र अवशिष्ट हो , जिसकी सन्धियाँ मोटी हों उसे अतिकृश जानना चाहिए।

सम्प्राप्ति -

उपरोक्त कथित निदानों का सेवन करने से रस धातु अल्प मात्रा में उत्पन्न होती है एवं उत्तरोत्तर धातुओं को उचित पोषण प्राप्त न होने से समस्त धातुओं का ह्रास होता जाता है परिणाम स्वरूप व्यक्ति अत्यंत कृश हो जाता है।

सम्प्राप्ति चक्र -

निदान सेवन

⇩

अल्पमात्रा में रसधातु की उत्पत्ति

⇩

उत्तरोत्तर धातु पोषण में कमी

⇩

असम्यक् धातु निर्माण

⇩

कृशता

सम्प्राप्ति घटक -

1) दोष - वात प्रधान
2) दूष्य - रस धातु, मांस, मेद क्षय
3) स्त्रोतस् - रसवह स्त्रोतस
4) स्त्रोतोदुष्टि – विमार्गगमन
5) अग्नि - विषमाग्नि
6) अधिष्ठान - सर्व शरीर।
7) व्याधिस्वभाव - नवीन -अवस्था में मृदु, जीर्ण होने पर दारुण
8) साध्यतासाध्यता- नवीन- साध्य, जीर्ण- कष्टसाध्य
9) प्रत्यात्म लक्षण - स्फिक्, उदर और ग्रीवा शुष्क हो जाते हैं, शरीर में त्वक् एवं अस्थि ही शेष रह जाते हैं, सन्धियाँ स्थूल दिखने लगती हैं

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अतिकृश पुरुष के दोष :-

" व्यायाममतिसौहित्यं क्षुत्पिपासामयौषधम् । कृशो न सहते तद्वदतिशीतोष्णमैथुनम् ॥

प्लीहा कासः क्षयः श्वासो गुल्मोऽस्युदराणि च । कृशं प्रायोऽभिधावन्ति रोगाश्च ग्रहणीगताः ॥ "

अतिकृश व्यक्ति व्यायाम , छककर भरपेट भोजन , क्षुधा , प्यास , रोग का कष्ट , औषध के वीर्य , अतिशीत , अधिक उष्णता और अतिमैथुन को नहीं सहन कर पाता है । कृश पुरुष को प्लीहावृद्धि , खाँसी , राजयक्ष्मा , श्वास , गुल्म , बवासीर , उदररोग और ग्रहणीविकार प्रायः हो जाया करते हैं ।

साध्यतासाध्यता - नवीन अवस्था में कार्य रोग - लघु संतर्पण देने से साध्य होता है

प्रमेह निदान

सन्दर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, सूत्रस्थान, अध्याय- **17 " कियन्तः शिरसीय अध्याय "**
- चरक संहिता, निदानस्थान, अध्याय- **4 " प्रमेह निदानाध्याय "**
- चरक संहिता, चिकित्सास्थान, अध्याय- **6 " प्रमेह चिकित्साध्याय "**

सामान्य व्याधि परिचय -

आयुर्वेद संहिताओं में वर्णित **अष्टमहागद** के अन्तर्गत प्रमेह का वर्णन सभी आचार्यों ने किया है। आचार्य चरक ने प्रमेह का वर्णन निदान स्थान एवं चिकित्सा स्थान में स्वतन्त्र रूप से किया, वहीं मधुमेह का वर्णन सूत्रस्थान में किया है।

निरुक्ति एवं परिभाषा -

" प्रकर्षेण मिहति' इति प्रमेहः "

अर्थात् जिसमें व्यक्ति अधिकता से मूत्रत्याग करता है उसे प्रमेह कहते हैं। प्रमेह शब्द 'प्र' उपसर्ग से मिहक्षरणे से धञ् प्रत्यय लगाकर व्युत्पन्न होता है।

" प्र " + " मिहक्षरणे " + " धञ् " - " प्रमेह "

निदान -

" आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्यौदकानूपरसाः पयांसि।

नवान्नपानं गुडवैकृतं च प्रमेहहेतुः कफकृच्च सर्वम्॥ " **(च. चि. 6/4)**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628, 8962265728

- **आस्यासुखं :-** सुखपूर्वक आसन पर शयन,
- **स्वप्नसुखं :-** सुखपूर्वक अधिक सोना,
- दधि, ग्राम्यमांस, जलीय तथा आनूप देश के पशुपक्षियों का मांस सेवन,
- दूध, नवान्न, नवीन जल का सेवन,
- गुड़ की विकृतियों (शर्करा, मिश्री) आदि का अधिक सेवन करना

सम्प्राप्ति - **" मेदश्च मांसं च शरीरजं च क्लेदे कफो वस्तिगतः प्रदूष्य।**

करोति मेहान् समुदीर्णमुष्णैस्तानेव पित्तं परिदूष्य चापि॥

क्षीणेषु दोषेष्वकृष्य धातून संदूष्य मेहान् कुरुतेऽनिलश्च। " **(च. चि. 6/5-6)**

कफज प्रमेह सम्प्राप्ति - वस्तिप्रदेश में स्थित कफ शरीरस्थ, मेद, मांस तथा जलीयांश को दूषित कर कफज मेह उत्पन्न करता है।

पित्तज प्रमेह सम्प्राप्ति - ऊष्ण पित्त वर्धक पदार्थों के सेवन से बढ़ा हुआ पित्त बस्ति प्रदेश में स्थित पित्त पूर्ववत् मेद, मांस और शरीर के जलीयांश को दूषित करके पैतिक प्रमेह उत्पन्न करता है।

वातिक प्रमेह सम्प्राप्ति :- कफ और पित्त के क्षीण होने पर वायु धातुओं को (वसा, मज्जा, लसीका) को दूषित कर वस्ति में लाकर तथा मूत्र को दूषित कर वातिक प्रमेह को उत्पन्न करता है।

सम्प्राप्ति चक्र -

निदान (कफ तथा मेदवर्धक) सेवन

⇩

प्रधान कफ प्रकोप के साथ त्रिदोष कुपित ⇩ शरीर में शिथिलता , मेद वृद्धि

⇩

शरीर में शीघ्रता से फैल कर बढ़े हुए शिथिल मेद से मिलकर **मेद** को भी दूषित कर

⇩

यह विकृत कफ , दुष्ट मेद के साथ शरीर मे बढ़े हुए अबद्ध **क्लेद** तथा **मांस धातु** को भी दूषित कर ⇩ मेद तथा दूषित क्लेद द्वारा मूत्रवह स्त्रोतस का **अवरोध**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

⇩

दूषित क्लेद से अधिक मूत्र का निर्माण तथा दूषित मांस से शरीर मे पीड़काए उत्पन्न होती है , वस्ति प्रदेश में मूत्र को भी दूषित कर आविल मूत्र का बार-बार त्याग

⇩

प्रमेह रोग

सम्प्राप्ति घटक -

1) **दोष -** 'बहुद्रव श्लेष्मा दोष विशेषः **कफ प्रधान त्रिदोष**
2) **दूष्य -** अबद्ध मेद, मांस, क्लेद, शुक्र, शोणित, वसा, लसीका, मज्जा, रस, ओज
3) **स्त्रोतस -** मूत्रवह स्त्रोतस, मेदावह स्त्रोतस
4) **स्त्रोतोदृष्टि -** संग, अतिप्रवृत्ति
5) **अधिष्ठान -** वस्ति, सर्व शरीर
6) **अग्नि -** धात्वाग्नि मंद।
7) **व्याधिस्वभाव -** चिरकारी, दारुण
8) **साध्यतासाध्यता -** कफज प्रमेह-साध्य, पित्तज प्रमेह-याप्य, वातज प्रमेह - असाध्य
9) **प्रत्यात्म लक्षण -** 'प्रभूताविल मूत्रता'

प्रमेह के भेद :- प्रमेह के 20 भेद बताये गए है -

1) पित्तज - 6
2) कफज - 10
3) वातज - 4

कफज - 10

" तेषामपि तु खलु श्लेष्मगुणविशेषेणैव नामविशेषा भवन्ति; तद्यथा - उदकमेहश्च , इक्षुवालिकारसमेहश्च , सान्द्रमेहश्च , सान्द्रप्रसादमेहश्च , शुक्लमेहश्च , शुक्रमेहश्च , शीतमेहश्च , सिकतामेहश्च , शनैर्मेहश्च , आलालमेहश्चेति ॥ "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

1) **उदकमेह -** रोगी श्वेत वर्ण का , शीतल , स्वच्छ , मात्रा में अधिक ,बिना गन्ध का एवं जल की तरह मूत्रत्याग करता है।
2) **इक्षुवालिकारसमेह -** **" अत्यर्थमधुरं शीतमीषत्पिच्छिलमाविलम् । "**

   रोगी अत्यधिक मधुर , शीतल , कुछ पिच्छिल (गोंद जैसा), गंदला और गन्ने के रस के समान मूत्रत्याग करता है।
3) **सान्द्रमेह** - जिस रोगी का मूत्र कुछ समय तक किसी पात्र में रख देने पर गाढ़ा हो जाता है।
4) **सान्द्रप्रसादमेह -** पात्र में रखने पर जिसका मूत्र नीचे गाढ़ा और ऊपर का कुछ स्वच्छ हो जाता है।

5) **शुक्लमेह -** **" शुक्लपिष्टनिभं मूत्रमभीक्ष्णं यः प्रमेहति । "**

रोगी चावल के आटे के समान मूत्र बार - बार त्याग करता।

6) **शुक्रमेह -** **" शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा मुहुर्मेहति यो नरः । "**

रोगी वीर्य की तरह अथवा वीर्यमिश्रित मूल बार बार त्याग करता है।

7) **शीतमेह -** **" अत्यर्थमधुरं शीतं मूत्रं मेहति यो भृशम् । "**

रोगी अत्यधिक मीठा और शीत मूत्र बार - बार त्याग करता है ।

8) **सिकतामेह** - रोगी बालू के कण के समान कफ के कणों को त्यागता है ।

9) **शनैर्मेह -** **" मन्दं मन्दमवेगं तु कृच्छ्रो यो मूत्रयेच्छनैः । "**

रोगी धीरे - धीरे बिना वेग के कष्ट के साथ मूलत्याग करता है ।

10) **आलालमेह -** **" तन्तुबद्धमिवालालं पिच्छिल यः प्रमेहति । "**

रोगी तन्तु की तरह बंधी हुई लाला (लार) युक्त (गोंद की तरह) पिच्छिल मूत्रत्याग करता है ।

पित्तज 6 :-

" तेषामपि तु खलु पित्तगुणविशेषेणैव नामविशेषा भवन्ति ; तद्यथा - क्षारमेहश्च , कालमेहश्च , नीलमेहश्च लोहितमेहश्च , माजिष्ठमेहश्च , हारिद्रमेहश्चेति ॥ "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) **क्षारमेह -** रोगी क्षार के समान गन्ध , वर्ण , रस तथा स्पर्श युक्त मूत्र का त्याग करता है ।

2) **कालमेह -** रोगी स्याही जैसा काला और उष्ण मूत्रत्याग करत है।

3) **नीलमेह -** रोगी नीलकण्ठ के पंख के समान वर्णवाले अपार नीले रंग के अम्लरसवाले मूत्र का त्याग करता है। ।

4) **रक्तमेह -** रोगी आमगन्धी , लवणरस , उष्णा और रक्त वर्ण के मूत्र का त्याग करता है।

5) **माञ्जिष्ठमेह -** रोगी मजीठ के रंग के समान रक्त वर्ण का और आमगन्धी मूत्र का त्याग करता है ।

6) **हरिद्रमेह -** रोगी हल्दी के जल के सदृश पीला और कटूरस मूत्र का त्याग करता है।

वातज 4 :-

" तेषामपि तु खलु वातगुणविशेषेणैव नामविशेषा भवन्ति ; तद्यथा - वसामेहश्च , मज्जमेहरा, हस्तिमेहश्च , मधुमेहश्चेति ।। "

1) वसामेह - **" वसामिश्रं वसाभं वा मुहुर्मेहति यो नरः । "**

रोगी वसा (चर्बी) मिला हुआ या वसा के रंग का मूणत्याग करता है।

2) मज्जामेह - **" मज्जानं सह मूत्रेण मुहुर्मेहति यो नरः । "**

रोगी के मूत्र से मज्जा आती है और वह बार - बार मूत्रत्याग करता है ।

3) हस्तिमेह - रोगी मतवाले हाथी के समान लगातार अधिक मात्रा में मूत्रत्याग करता है।

4) मधुमेह - **" कषायमधुरं पाण्डु रूक्षं मेहति यो नरः । "**

रोगी कषाय , मधुर , पाण्डु और रक्षा मूत्रत्याग करता है।

पूर्वरूप - **" स्वेदोऽङ्गगन्धः शिथिलाङ्गता च शय्यासनस्वप्नसुखे रतिश्च ।**

हृन्नेत्रजिह्वाश्रवणोपदेहो घनाङ्गता केशनखातिवृद्धिः॥ "

Ayurvedic Formulation

- स्वेद एवं शरीर में गंध होना (Bad odour of sweat and body)
- शरीर में शिथिलता (Lassitude),
- सुखपूर्वक बैठने तथा सोने में रुचि (Desire for comfortable sitting or sleeping),
- हृदय प्रदेश, नेत्र, जिह्वा, कर्ण का मलयुक्त होना (Cardiac region, eyes, tongue, ear are felt as coated with dirt),
- घनाङ्गता (शरीर के अंगों का मोटा होना) (Fatten body parts),
- केश तथा नख का अधिक बढ़ना (Rapid growth of hair and nails),

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सामान्य लक्षण - **" सामान्य लक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता "**

अधिक मात्रा में, आविल मूत्र का बार-बार त्याग करना प्रमेह का सामान्य लक्षण है।

साध्यतासाध्यता -

1) **कफज प्रमेह - समक्रियत्वात्** (दोष और दूष्य की समान चिकित्सा होने से) **साध्य** होते हैं।

2) **पित्तज प्रमेह - विषमक्रियत्वात** (दोष और दूष्य की चिकित्सा में विषमता होने से) **याप्य** होते हैं।

3) **वातज प्रमेह - महात्ययत्वात्** (महात्यायिक यथा मज्जा धातु जैसी सार धातु का शीघ्रता से क्षय होने से) तथा **विरुद्ध चिकित्सा** उपक्रम होने से **असाध्य** होते हैं।

प्रमेह पिडिका

प्रमेह रोगियों, मेदस्वी पुरुषों में प्रमेह की उपेक्षा से संधि, मर्म तथा मांसल भागों में पीड़काएं उत्पन्न होती हैं जिन्हें प्रमेह-पीड़िका की संज्ञा दी गई है।

पिड़िका भेद -

1.	**आचार्य चरक**	भेद - 7	**1)** शराविका, **2)** कच्छपिका, **3)** जालिनी **4)** सर्षपी, **5)** अलजी, **6)** विनता, **7)** विद्रधि
2.	**आचार्य सुश्रुत ,वाग्भट एवं माधव**	भेद - 10	**चरकोक्त 7** **1)** मसूरिका, **2)** पुत्रिणी, **3)** विदारिका
3.	**आचार्य भोज**	भेद - 9	**विनता को नहीं** माना तथा मसूरिका - कुलत्थिका
4.	**काश्यप**	भेद - 8	**चरकोक्त 7** अरुषिका

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अलजी ने जाल से सर्प और कच्छप को निकालकर शराव मे डालकर विनम्रता से दधि दी

LEPROSY

Definition - Leprosy or Hansen's disease is a slowly progressive infection caused by Mycobacterium leprae that mainly affects the cooler parts of the body such as the skin mouth , respiratory tract , eyes , peripheral nerves , superficial lymph nodes and testis involved .

Causative organism -

- M leprae that mainly affects the cooler parts of the body such as the skin , mouth , respiratory tract , eyes peripheral nerves superficial lymph nodes and testis
- M leprae obligate intracellular bacillus .
- The organism is acid fast bacillae that grows very poorly in cultures .

Transmission -

1) Nasal droplet infection
2) Contact with infected person
3) Contact with infected soil
4) Direct dermal inoculation (eg .. during tattooing)
5) Insect vectors (bedbugs and mosquito)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Signs & Symptoms -

- Weakness of the hands or feet .
- Numbness or tingling of the hands or feet .
- Loss or decrease of feeling in the skin patches .
- Hair on the affected skin may be sparse .
- Hypopigmented skin
- Painful or tender nerves .

Etiopathogenesis -

- Leprosy is a slow communicable disease and the incubation period between first exposure and appearance of signs of disease from 2-20 years .
- Fate of the bacterium depends on the resistance of the infected individual.

M. Bacilli enter the body usually through respiratory system

⬇

Bacilli migrate towards the neural tissue and enter the schwann cells also found in macrophages, Muscles cells and endothelial cells of blood vessels.

⬇

Bacilli start multiplying slowly (About 12-14 days for one bacterium to divide two) within cell

⬇

It get liberated from the destroyed cells and enter other unaffected cells

⬇

Bacterial increase in the body and infection is recognized by the immune system .

⬇

At this stage Involvement of nerves with impairment of sensation & skin patch .

⬇

If it is not diagnosed and treated in the early stage further progress of the disease is determined by CMI

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

⬇ ⬇

When specific CMI is effective controlling the infection in the body , Lesions heals spontaneously.

If CMI is deficient , the disease spreads uncontrolled and produces multi bacillary leprosy with multiple system involvement.

Classification : - 2 main type

Feature	Lepromatous Leprosy	Tuberculoid leprosy
Skin lesions	Symmetrical , multiple hypopigmented	Asymmetrical , single or a few lesions hypopigmented
Nerve involvement	Present but sensory disturbance is less severe	Present with distinct sensory disturbance
Immunity	Suppressed (Low resistance)	Good immune response (High resistance)
Lepromin test	Negative	Positive
Histopathology	Clear Zone which represents the collection of Macrophages & Lepra Cells Bet. the dermis & epidermis layer.	Eroding the basal layer of epidermis with No Clear Zone.

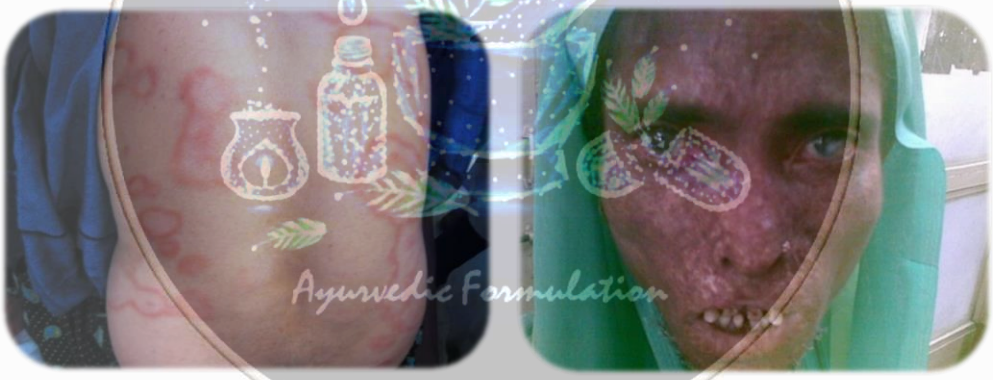

TUBERCULOID LEPROSY LEPROMATOUS LEPROSY

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

⬇

NASAL SEPTUM GETS DISSOLVED IN LEPROMATOUS LEPROSY

Diagnosis -

1) Peripheral neuropathy suggestive of leprosy .
2) Biopsy of lesion areas for histopathological study .
3) Lepromin skin test - not diagnostic test but used for classifying leprosy on the basis of immune response . It is also used for the prognosis of the disease .

Intradermal injection of lepromin (antigenic extract of M. leprae) 0.1 ml

Delayed hypersensitivity reaction	Negative
↓	↓
Tuberculoid leprosy	Lepromatous leprosy

1) Fernandez Reaction – Early Positive Reaction – 24 – 48 Hours'

2) Mitsuda Reaction – Delayed Reaction – 3 – 4 Weeks.

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

षट्क्रियाकाल

क्रियाकाल - क्रिया + काल

क्रिया का अर्थ है - चिकित्सा

काल का अर्थ है - समय या उचित अवसर

क्रियाकाल - समयानुकूल चिकित्सा
क्रियाकाल - चिकित्सा का अवसर

" संचयं च प्रकोपं च प्रसरं स्थान संश्रयम् । व्यक्तिं भेदं यो वेत्ति दोषाणां स भवेद भिषक् ॥ "

(सु . सू. 20/36)

आचार्य सुश्रुत द्वारा **छः क्रियाकाल** की अवस्थाएं बताई हैं ।

1) संचय
2) प्रकोप
3) प्रसर
4) स्थान संश्रय
5) व्यक्ति
6) भेद

इन अवस्थाओं को षक्रियाकाल को संज्ञा दी जाती है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) दोष वृद्धि कारक आहार, विहार का सेवन निरन्तर करने

2) दोष शामक आहारादि का यथावत् उपयोग न करने

दोषो की वृद्धि होती है परिणामतया व्याधि उत्तरोत्तर बलवान होती जाती है

1. संचयावस्था - प्रथम क्रियाकाल :-

" चयोवृद्धः स्वधाम्येव । " (अ.ह. सू. 12/22)

वात - पित्त - कफ के अपने - अपने जो स्थान हैं उन स्थानों पर ये दोष संचित हो जाते हैं।

संचय अवस्था के लक्षण :-

" तत्र सञ्चितानां खलु दोषाणां स्तब्ध पूर्णकोष्ठता पीतावभासता मन्दीष्मता चाङ्गानां गौरवमाललस्यं चयकारणविद्वेषश्चेति लिङ्गानि भवति । तत्र प्रथमः क्रियाकालः ।। " (सु . सू. 21/18)

- **वात का संचय** - स्तब्ध कोष्ठता , पूर्णकोष्ठता
- **पित्त का संचय** - पीतावभावसता, मन्दीष्मता
- **कफ का संचय** - अंग गौरव आलस्य

2. प्रकोपावस्था - द्वितीय क्रिया काल : -

" कोपस्तून्मार्गगामिता " (अ . ह . सू. 12/23)

अर्थात वातादि दोषों का जो उन्मार्गगमन होता है वह ' प्रकोप ' कहलाता है ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रकोप अवस्था के लक्षण :-

" तेषां प्रकोपात् कोष्ठ तोद सञ्चरणाम्लिकापिपासा परिदाहन्द्वेष हृदयोत्क्लेदाश्च जायन्ते। त द्वितीयः क्रिया कालः ।। " (सु . सू. 21/27)

- **वात दोष प्रकोप के लक्षण** - **कोष्ठ तोद** - उदर में सुई चुभने सी पीडा ,

  संचार- वायु का संचार

- **पित्त दोष प्रकोप के लक्षण** - **आम्लिका** - अम्लोद्गार (खट्टी डकार)

  पिपासा

  परिदाह - शरीर में दाह

- **कफ दोष प्रकोप के लक्षण** - **अन्न द्वेष**

  हृदयोत्क्लेश- जी मचलाना

3. तृतीय क्रिया काल (प्रसरावस्था) -

'प्रसर ' का अर्थ है- **फैलना**

इस अवस्था में प्रकुपित दोष प्रसर कर सम्पूर्ण शरीर अर्थात शरीरस्थ अंगो एवं विभिन्न रचनाओं में पहुँचते है।

चक्रपाणि ने प्रसरावस्था को एक उदाहरण स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है जिस प्रकार पिष्टी (चावल आदि से बने पदार्थ) तथा खमीर, यीस्ट को मिलाकर रखने पर कुछ काल के उपरान्त उसमें किण्वीकरण होकर जल आदि चारों तरफ पात्र से उफान युक्त होकर फैलते हैं।

जिस प्रकार जल के अतिसंचय एवं अधिक बढ़ जाने से सेतु को तोडकर दूसरे जल में मिलकर सर्वत्र फैलता है सी प्रकार दोष भी अति संचित एवं प्रकुपित होकर प्रसर अवस्था में शरीर में फैलते हैं।

Ayurvedic Formulation

प्रसर अवस्था के लक्षण :-

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

एवं प्रकुपितानां प्रसरतां च वायोर्विमार्गगमनाटोपौ , औषचोषपरिदाह धूमायनानि पित्तस्य , अरोचकाविपाकाङ्गसादाश्च्छर्दिश्चेति श्लेष्मणो लिङ्गानि भवन्ति। तत्र तृतीयः क्रियाकालः।

(सु . स . 21/32)

- **वात के कारण :** - विमार्गगमन तथा आटोप
- **पित्त के कारण :** - ओष , चोष , परिदाह , घूमायन (धुयें के समान श्वास या डकार)
- **कफ के कारण :** - अरोचक , अविपाक , (भोजन का न पचना), अंगसाद (अंग में दर्द), छर्दि (वमन)

प्रसर के पन्द्रह प्रकारों का उल्लेख सुश्रुत ने किया है।

1) वात
2) पित्त
3) कफ
4) रक्त

1) वात पित्त
2) वात - कफ
3) पित्त - कफ
4) वात रक्त
5) कफ रक्त
6) पित्त - रक्त

1) वात-पित्त- रक्त
2) वात - कफ रक्त
3) पित्त - कफ - रक्त
4) वात - पित्त कफ

1) वात - पित्त – कफ – रक्त

4. चतुर्थ क्रियाकाल (स्थान संश्रयावस्था) :-

" स्थान संश्रयं इति दोषदूष्यस्य संश्रय: ॥ "

जहाँ दोष और दूष्य का संश्रय हो जाता है वह " स्थान संश्रय " कहलाता है।

दोष प्रसरावस्था के बाद सम्पूर्ण शरीर में भ्रमण करते हैं, भ्रमण के दौरान जिस स्त्रोतस में विगुणता (अवरोध) होती है, उस स्त्रोतस पर रुक जाते हैं तथा वहाँ उपस्थित दूष्य ' साथ मिलकर दोष दूष्य समूर्च्छना उत्पन्न करते हैं।

" कुपितानां हि दोषाणां शरीरे परिधावताम्। यत्र सङ्ग: ख वैगुण्याद् व्याधिस्तत्रोपजायते ॥ "

(सु. सू. 24/10)

1) प्रथम स्थिति में ख- वैगुण्य
2) द्वितीय स्थिति में स्त्रोतों दुष्टि होती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

दोष दूष्य संमूर्च्छना से ही स्थान अनुरूप व्याधि प्रारम्भ हो जाती है अत: स्थान संश्रय अवस्था भावी व्याधि की **पूर्वरुपावस्था** है। स्थान संचय अवस्था चिकित्सा करने का चं अवसर अर्थात् चतुर्थ क्रियाकाल है।

स्थान संश्रय जिन - जिन भागों में होता है उसी के अनुसार रोग उत्पन्न होते हैं।

1) उदर में - गुल्म, विद्रधि, उदर रोग, अग्निमाद्य, आध्यान, विसूचिका, अतिसार
2) बस्ति प्रदेश में - प्रमेह, अश्मरी, मूत्राघात, अन्य मूत्र रोग

3) वृषण में - वृद्धि रोग
4) मेढ्र (शिश्न) में - निरुद्ध प्रकाश, उपदंश, शूक दोष
5) गुद में - भगन्दर, अर्श
6) जत्रु (ग्रीवा के ऊपर) - ऊर्ध्व जत्रुगत (नासा, नेत्र, कर्ण, मुख) रोग
7) मेद में - ग्रंथि, गण्डमाला, अर्बुद, गलगण्ड
8) त्वचा, मांस, रक्त में- क्षुद्र कुष्ठ, विसर्प
9) अस्थि में - विद्रधि
10) पाद में - श्लीपद, वातरक्त, वात कण्टक
11) सर्वांग में - वातव्याधि, मेहरोग, पाण्डुरोग, शोष आदि सर्वांग रोग

5. पञ्चमक्रियाकाल (व्यक्तावस्था) :-

" व्याधेः प्रव्यक्तं रूपं व्यक्तिः " (स.सू. 21/34)

अर्थात् व्याधि का प्रत्यक्त रूप ही व्यक्तावस्था होती है। सुश्रुत के अनुसार व्यक्तावस्था व्याधि की वह अवस्था है जिसमें दोष दूष्य संमूर्च्छना के फलस्वरूप व्याधि के लक्षण या चिह्न प्रकट हो जाते हैं।

" शोफार्बुदग्रन्थिं विद्रधि विसर्प प्रभृतीनां प्रत्यक्तलक्षणता , ज्वरातिसार , प्रभृतनाच । तत्र पञ्चमः क्रियाकालः ।। "(सु . सू. 29/34)

जैसे शोफ , अर्बुद , विद्रधि, विसर्प, ज्वर, अतिसार , आदि रोगों के लक्षण पूर्ण रूप में परिलक्षित होते हैं। इसे चिकित्सा का पंचम क्रिया काल माना गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

इसे यदि सरल शब्दों में कहा जाये तो जिस अवस्था में प्रत्येक रोग के मुख्य लक्षण प्रकट होते हैं और उन लक्षणों के उत्पन्न होने से रोग किसी विशेष नाम से जाना जाता है , उस अवस्था विशेष को ' व्यक्तावस्था ' कहते हैं

उदाहरण -

- अतिसार में मल निकलना ,
- आध्यान में पेट फूलना ,
- कामला में नेत्र व त्वचा का पीलापन ,
- ज्वर में ताप का होना आदि

6. षष्ठमक्रिया काल (भेदावस्था) :-

महर्षि सुश्रुत के अनुसार यह रोगोत्पत्ति की वह अवस्था है जिसमें व्याधि अनुतीव्र , जीर्ण अथवा **असाध्य** हो जाती है।

उस समय तक रहने के कारण व्याधि दीर्घकालानुबन्धी हो जाते हैं। क्रिया काल की अवस्थाओं के विपरीत इस अवस्था में यह विशेषता रहती है कि इसमें पहुँचने के पश्चात रोग जीर्ण हो जाता है और इस समय भी यदि चिकित्सा न की जाय तो रोग असाध्यता की श्रेणी में आ जाता है।

क्रियाकाल का महत्त्व -

" चयेऽपहृता दोषालभन्ते नोत्तरा गतीः। ते तूत्तरासु गतिषु भवन्ति बलवत्तराः। " (सु . सू. 21/39)

क्रियाकाल की अवस्थाओं का महत्त्व बताते हुए सुश्रुत ने कहा है कि सञ्चयावस्था में यदि दोषों का निहरण कर दिया जाये तो वे उत्तर गति को प्राप्त नहीं होते। उत्तर गति (प्रकोप, प्रसरादि) प्राप्त होने पर वे उत्तरोत्तर अधिक बलवान हो जाते हैं ।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अष्ट महागद

अष्ट - 8 ← ऐसे रोग हो चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य होते है ← **महागद**

परिभाषा :-

डल्हण के अनुसार - जो रोग मारक स्वभाव वाले होते हैं, व चिकित्सात्मक दृष्टि से भी असाध्य होते है उन्हें महारोग कहा जाता है।

अष्टांगसंग्रह के अनुसार -

" कुर्याद विरुद्धमशनं ज्वरमस्रपित्तमष्टौ गदाश्च महतो विषवच्च मृत्युम् । "

विरुद्ध भोजन के सेवन से होने वाले ज्वर रक्तपित्त आदि अष्ट रोग विष के समान मृत्यु कारक होने के कारण महागद कहलाते हैं।

सुश्रुत संहिता के अनुसार -

उपद्रवस्तु ये जुष्टा व्याध्यो यान्त्यवार्यताम् । रसायनाद्विना... ॥

जो रोग उपद्रव से युक्त होने के कारण रसायन के बिना अवार्य अर्थात अचिकित्य हो जाते है , सम्मिलित रूप से महागद कहा जाता है।

अष्टमहागद में भिन्न भिन्न आचार्यों ने भिन्न भिन्न व्याधियों को सम्मिलित किया है।

चरक संहिता के अनुसार	सुश्रुत संहिता के अनुसार	अष्टांगसंग्रह के अनुसार
1) वातव्याधि	1) वातव्याधि	1) वातव्याधि
2) उदर रोग	2) उदर रोग	2) उदर रोग
3) मधुमेह	3) प्रमेह	3) प्रमेह
4) कुष्ठ	4) कुष्ठ	4) कुष्ठ
5) गुल्म	5) अर्श	5) अर्श
6) राजयक्ष्मा	6) भगंदर	6) भगंदर
7) शोथ	7) अश्मरी	7) अश्मरी
8) अपस्मार	8) **मूढ़गर्भ**	8) **ग्रहणी**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

चरक संहिता निदान स्थान 8 अध्याय (**ज्वर , रक्तपित्त , गुल्म , प्रमेह , कुष्ठ , राजयक्ष्मा , उन्माद , अपस्मार**)

FEVER

Definition -

Increase in body temperature over the normal value of an individual .

1) Normal⟶ 97-100° F on rectal measurement diurnal variation
2) Fever when
   - rectal temp >100.4° F (38 °C)
   - oral temp > 99.5° F (37.5 °C)
   - axillary temp > 99 °F (37.2° C)
3) Hyperpyrexia temp > 107 °F (41.5 °C)

Grade of fever-

- **Low -** 98.4°F-100.6°F
- **High -** 100°F-104°F
- **Hyperpyrexia -** >104°F

- **Site -** everyone degree fahrenheit rise of temperature above 100 degree fahrenheit
- **Pulse rate** increases by 10
- **Respiratory rate** increases by 4

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Etiology :-

- Infections: Bacterial, viral, ricketsial, fungal parasitic etc.
- Neoplasm: In any neoplasmic condition e.g. Carcinoma of pancreas lung etc.
- Vascular: Acute MI, pulmonary embolism.
- Metabolic: Gout, dehydration, porphyria, acidosis.

- Traumatic: Injuries
- Collagen disease; SLE, RA
- Drug fever - Drug induced fever is a symptom of an adverse drug reaction
- Endocrinal: Thyrotoxicosis, Addison's disease Hematological: Acute hemolytic crisis etc.

Hyperpyrexia vs hyperthermia

Hyperpyrexia	Hyperthermia
1) >41.5*C	1) Body temp rises above its set point (say >40.5°C)
2) Sets thermostat above normal body temp	2) Ex - Heat stroke, neuroleptic malignant syndrome
3) Than generates heat to achieve this temp	3) Treatment - fatal, doesn't respond to antipyretics.
4) Ex - I/C hemorrhage, sepsis, & thyroid storm	
5) Treatment using NSAIDs	

Pathogenesis: -

Ayurvedic Formulation

Pyrognes :- Substance that causes fever.

1) **Exogenous Pyrogens :-** Microbial products microbial toxins or whole micro organisms.
   - **Ex :-** Endotoxins produced by all gram negative bacteria.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) **Endogenous Pyrogens :-** Cytokines are small proteins that regulate immune inflammatory and hemopoetic process. Cytokines causes fever are called pyrogenic cytokines. They are produced by activated immune cells and cause the increase in the thermoregulatory set point in the hypothalamus.
   - **Ex-** IL-1, IL-6 (interlukin 1, interlukin 6) , Tumor necrosis factor TNF, Cilliary neurotrophic factor CNTF , Interferon INFa

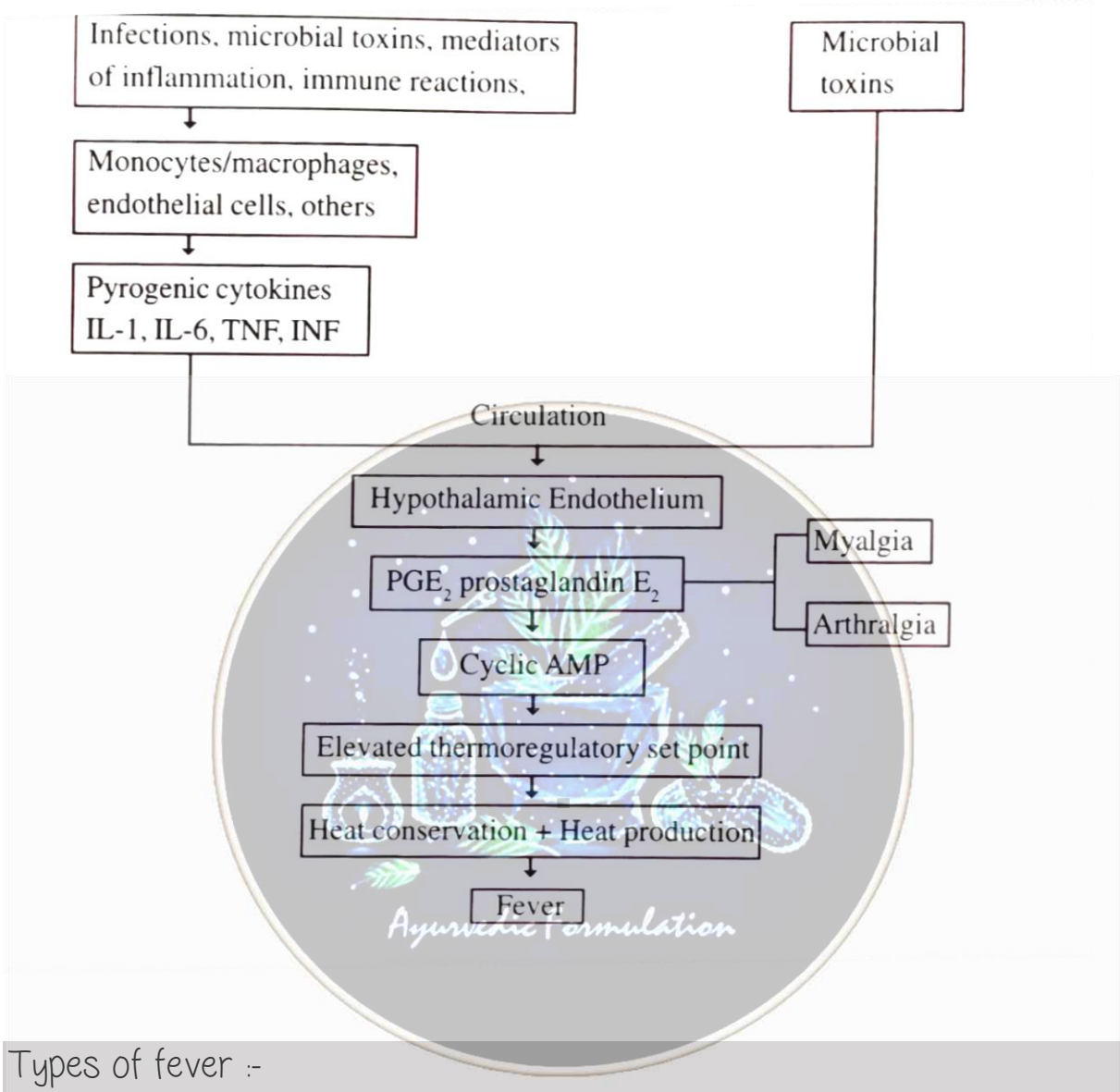

Types of fever :-

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) Continuous fever :- The temperature remains above normal throughout the day and does not fluctuates more than 1°C in 24 hours. Eg. Lobar pneumonia, typhoid UTI etc.

2) Remittent fever :- The temperature remains above normal throughout the day and fluctuates more than 1°C in 24 hrs it is the most common type of fever. eg. Typhoid, infective endocarditis

3) Intermittent fever :- The temperature remains only for some hours in a day and remits to normal for the remaining hours.

- If spike occurs daily-Quotidian fever
- Occurs every alternate day-Tertian fever
- Occurs every third day- Quartan fever
- Ex- Malaria, kalaazar, payemia septicemia etc.

4) Hectic or septic :- The temperature variation between highest and lowest temperature is very large exceeds 5°C eg. Septicemia

5) Pelebstein type :- There is a regular alternation of recurrent bouts of fever and afebrile periods.

The temperature may take 3 days to rise remains high for 3 days and remits in 3 days followed by apyrexia for 9 days seen in Hodgkin's lymphoma. [Hodgkin's lymphoma malignant lymphoma usually a transformed B lymphocyte].

6) Low grade fever :- Temperature is present daily especially in the evening for several days but does not exceed 37.8°C at any time eg. Tuberculosis.

Ayurvedic Formulation

Investigation in febrile adult : -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) Urine analysis and urine microscopy :

- Hematuria, WBC, bacteria, pyuria ⟶ UTI
- Microscopic hematuria, proteinuria etc.

2) Blood tests :-

(a) CBC -

- WBC >12x109/L or <4x10°/L ▶ septic shock.
- CD4 lymphocyte count ~>to assess HIV infection.

- ❖ (CD4 < 500 cell/mm to start ART anti retroviral therapy)
- ❖ Increase Eosinophil count ⟶ worm infestation and drug allergy.

(b) Blood film - For Malarial parasite.

(c) RFT/LFT –

- ❖ Abnormal bacteremia with severe sepsis syndrome.
- ❖ Increase Transaminase in acute hepatitis.

(d) C-RP- increase Bacterial infection.

(e) Serology-

- ❖ Bacterial infection eg syphlis,
- ❖ Protozoan infection eg amoebiasis

3) Culture :-

1) Blood culture -Bacteremia eg. typhoid etc
2) Sputum culture- Pneumococcal pneumonia, tuberculosis
3) Urine culture- Urinary infection.
4) Stool culture + microscopy -
   - ➢ diarrhea
   - ➢ Microscopy for ova, cyst, parasites eg. giardiasis, amoebiasis, Toxin test - Clostridium difficile.
5) CSF culture - Meningitis - bacterial, Viral, fungal.

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4) Polymerase chain reaction

5) Imaging

1) **Chest X-ray-** Pneumonia, TB
2) **USG -** Localizing abscesses, empyema gallstones.
3) **CT scan -** Intra-abdominal or intracranial abscesses, lymphadenopathy.
4) **MRI -** Intracranial lesion, bone and joint infections.

INFLAMMATION

Definition -

- Inflammation is a series of molecular and cellular responses to eliminate foreign agents or damaged (necrotic) cells and to promote repair of damaged tissues.
- Inflammation is fundamentally a protective response, the purpose of which is to destroy the damaging agent, initiate repair processes and return the damaged tissue to useful function.
- In the absence of inflammation, wounds and infection will never heal and progressive destruction of tissues would compromise the survival of organism Cardinal Signs of Inflammation .

Celsus's four Cardinal Sign of Inflammation -

1) **Rubor (Redness)** - Due to vasodilation of small blood vessel
2) **Tumor (Swelling) -** Due to exudation of fluid
3) **Calor (Heat) -** Due to increased blood flow which is caused by vasodilation
4) **Dolor (Pain)** - Due to stretching of tissue from odema
5) **Functio laesa -** Loss of function (A Fifth Clinical Sign **Added by Virchow**)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Type of inflammation -

1. Acute Inflammation
2. Chronic Inflammation

Acute Inflammation

It is a rapid response to an injurious agent and it is relatively of short duration.

Stimuli for Acute Inflammation -

1) Infection (Bacterial, viral, parasitic
2) Trauma
3) Physical and chemical agent
4) Tissue necrosis
5) Foreign body
6) Immune reaction

Patho Physiology of Acute Inflammation - These Inflammatory Change Involve two Main Component :-

1) **Vascular Reaction**- Changes in blood vessels
2) **Cellular Reaction-** Changes in leukocytes

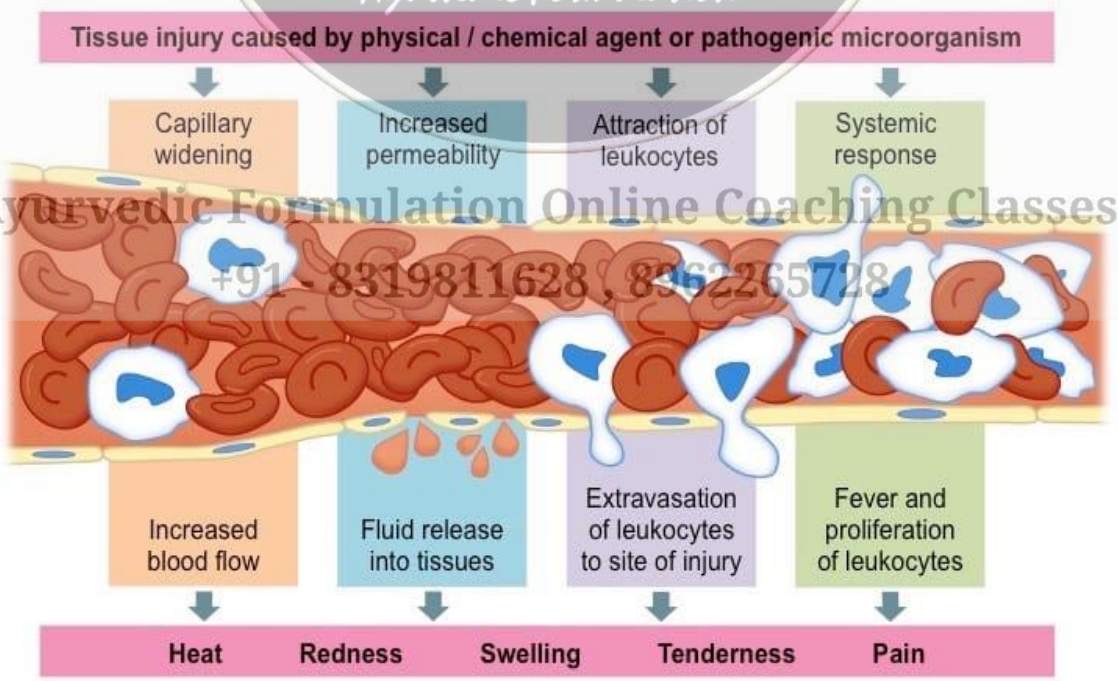

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. Vascular Changes –

Histamine

↓

Relaxation of smooth muscles causing vasodilation

↓

Increase in the flow of blood in arterioles and cappilaries

↓

Due to increase in hydrostatic pressure leads to the outflow of transudate (protein poor fluid).

↓

And due to change in the vascular permeability leads to the outflow of exudates (protein rich fluid).

↓

Accumulate of transudate and exudate in the interstitial fluid.

↓

Loss of fluid result in increase in concentration of red cells and viscosity of blood.

↓

Due to increase viscosity of blood, flow of blood goes slow.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2. Cellular Changes –

A critical function is to deliver leukocyte to the site of injury and to activate the leukocyte to perform their normal function in host defence.

1) **Extravasation -** The sequence of events in the journey of leukocyte from the vessel lumen to interstitial tissue is called extravasation.

1) **Migration -** As stasis develops , leukocyte principally neutrophil accumulate along the vascular endothelium . This is called migration.
2) **Rolling -** The rows of leukocyte move slowly along the endothelium a process called rolling.
3) **Adhesion -** Finally coming at rest , leukocyte adhere firmly to endothelium this mechanism called adhesion.
4) **Pavementing -** The endothelium can be lined by white cells , process called pavementing.
5) **Diapedesis -** It is the process of transmigration of leucocyte across the endothelium .

After firm adhesion , leukocyte migrate through inter endothelial junction and assume a position between endothelium cells and the basement membrane . Eventually they pierce the basement membrane by secreting collagenase and escape into the extravascular space.

2) Chemotaxis - After extra vasation , leukocyte emigrate into tissue towards the site of injury, along a chemical gradient a process known as chemotaxis .

3) Leukocyte Activation - At the site of inflammation, cytokines induce defensive function of leukocyte and are referred as leukocyte activation.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4) Phagocytosis -

Phagocytosis and release of enzyme by neutrophils and macrophages are responsible for eliminating the injurious agents in phagocytosis, engulfment and killing and degradation of injurious agent take place.

When the stressing agent persistently stimulate the tissue and it can not be resolved then acute transits to chronic inflammation

Fate / Outcomes of Acute Inflammation –

The acute inflammation process can culminate in one of the following outcomes -

1. Resolution - It means complete return to normal tissue following acute inflammation. This occur when tissue changes are slight and the cellular changes are reversible example resolution in lobar pneumonia.

2. Healing - When the tissue loss in acute inflammation is superficial, healing takes place by regeneration . However when the tissue destruction is extensive then healing occurs by fibrosis.

3. Suppuration - When the biogenic bacteria causing acute inflammation result in severe tissue necrosis the process progresses to suppuration. Initially there is intense neutrophilic infiltration. Subsequently mixture of neutrophils, bacteria , fragments of necrotic cells, cell debris and fibrin comprise pus which is contained in a cavity to form an abscess. The abscess if not drained may get organised by dense fibrous tissue and in time get calcified.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4. Chronic inflammation - Testing or recurrent acute inflammation may progress to chronic inflammation in which the process of inflammation and healing proceed side by side.

Chronic Inflammation

Chronic inflammation is of prolonged duration in which active inflammation, tissue destruction and attempts of repair are proceeding simultaneously.

Chronic Inflammation is Charectorized by -

1. MONONEUCLEAR CELL INFILTRATION -

Macrophages are accumulated by following mechanism

↓

The macrophages are the major cell involved in chronic inflammation Macrophages are derived from monocytes, when these cells circulate in the blood, they are known as monocytes and when they come out from the circulation and become part of tissue they are called as macrophages.

1) Recruitment of monocyte from the circulation
2) Local proliferation of the macrophages
3) Immobilization of macrophages at the site of inflammation

Ayurvedic Formulation

2. TISSUE DESTRUCTION -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) Activated macrophages secret a products which eliminate injurious agent such as microbes and to initiate the process of repair .
2) These mediators also cause tissue injury because some of these are toxic to host tissue destruction is one of the hallmark of chronic inflammation .

3. HEALING AND FIBROSIS -

Attempt at healing by connective tissue replacement of damaged tissue is accompanied by proliferation of new small vessels (angiogenesis) and fibrosis.

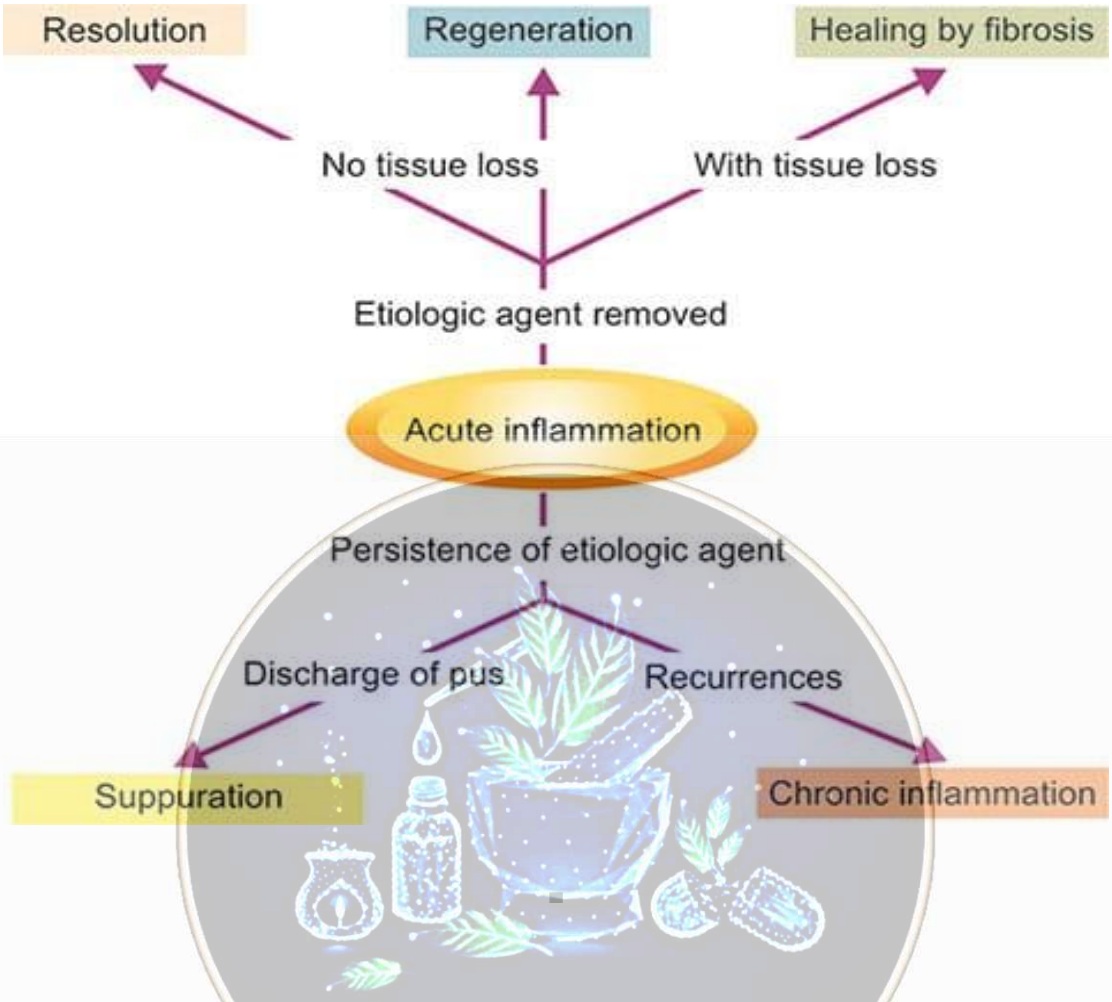

SYSTEMIC EFFECTS OF CHRONIC INFLAMMATION –

Chronic inflammation is associated with following systemic features :-

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) **Fever -** Invariably there is mild fever, often with loss of weight and weakness.
2) **Anaemia -** As discussed in Chapter 10, chronic inflammation is accompanied by anaemia of varying degree.
3) **Leucocytosis -** As in acute inflammation, chronic inflammation also has leucocytosis but generally there is relative lymphocytosis in these cases.
4) **ESR -** ESR is elevated in all cases of chronic inflammation.
5) **Amyloidosis -** Long-term cases of chronic suppurative inflammation may develop secondary systemic (AA) amyloidosis.

TYPES OF CHRONIC INFLAMMATION –

Conventionally, chronic inflammation is subdivided into 2 types :-

1) **Chronic non-specific inflammation** - When the irritant substance produces a non-specific chronic inflammatory reaction with formation of granulation tissue and healing by fibrosis, it is called chronic non-specific inflammation e.g. chronic osteomyelitis, chronic ulcer, lung abscess, A variant of this type of chronic inflammatory response is chronic suppurative inflammation in which infiltration by polymorphs and abscess formation (which are seen in acute inflammation) are additional features e.g. actinomycosis.

2) **Chronic granulomatous inflammation** - In this, the injurious agent causes a characteristic histologic tissue response by formation of granulomas e.g. tuberculosis, leprosy, syphilis, actinomycosis, sarcoidosis etc .

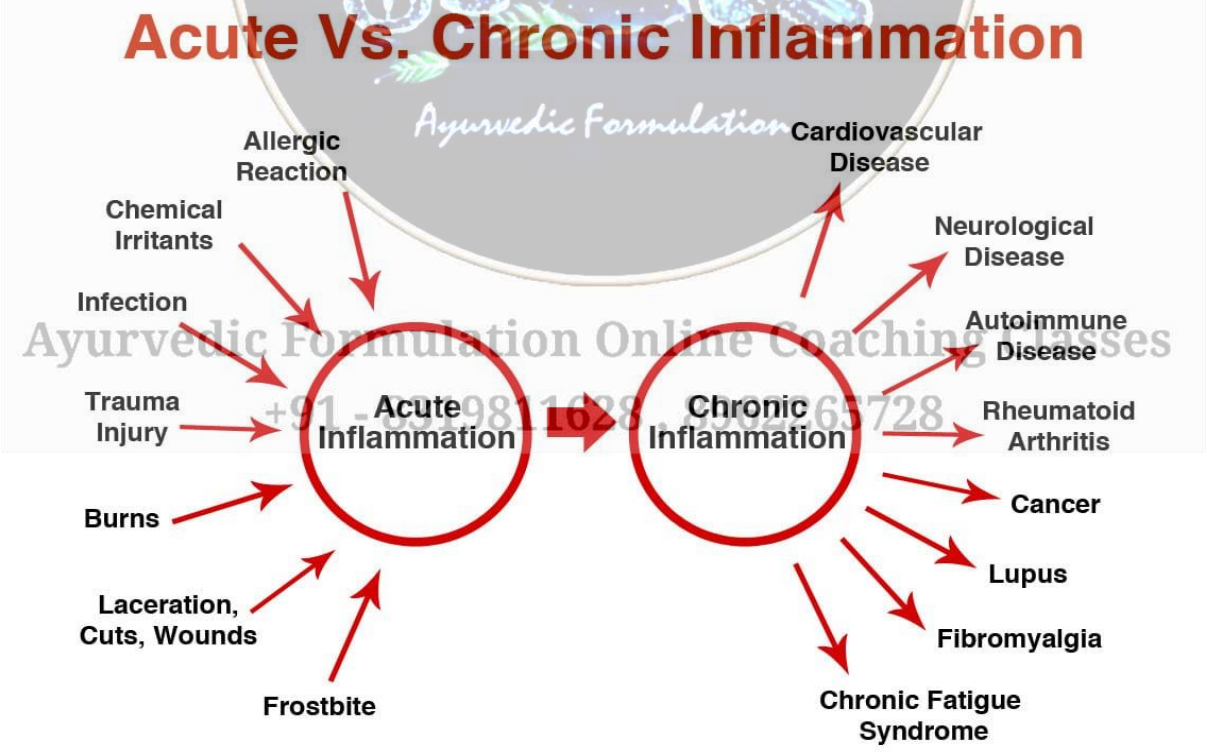

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पाण्डु निदान

संदर्भ ग्रन्थ :- चरक संहिता , चिकित्सा स्थान , अध्याय - **16 " पाण्डु चिकित्सा "**

व्याधि परिचय :-

इस रोग में रोगी का वर्ण पाण्डु (श्वेत पीत) हो जाता है अतः इसे पाण्डुरोग कहते हैं। पाण्डु रोग में रक्ताल्पता प्रधान लक्षण है , अतः वे सभी रोग जिसमें रक्ताल्पता के कारण शरीर का वर्ण पाण्डु हो जाता है।

व्युत्पत्ति एवं निरुक्ति : - **" पाण्डुस्तु पीतभागार्ध केतकीधूलसन्निभः। "**

अर्थात् केतकी पुष्प की धूलि के समान सफेदी लिए हुए पीलापन , इस प्रकार पाण्डु वर्ण से उपलक्षित रोग को पाण्डु रोग कहते हैं। पाण्डु शब्द से पाण्डु रोग में होने वाले हरित , हरिद्रादि वर्ण विकृति का भी ग्रहण हो जाता है

निदान- **" व्यायाममम्लं लवणानि मद्यं मृदं दिवास्वप्नमतीव तीक्ष्णम्।**

निषेवमाणस्य प्रदूष्य रक्तं दोषास्त्वच पाण्डुरता नयन्ति। "

अधिक व्यायाम , अधिक अम्ल , लवण रस का सेवन , मद्य सेवन , मृद भक्षण , दिवास्वप्न , अधिक तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन करने से , दोष रक्त को दूषित कर त्वचा को पाण्डु वर्ण का कर देते हैं।

सम्प्राप्ति -

" दोषाः पित्तप्रधानास्तु यस्य कुप्यन्ति धातुषु। शैथिल्यं तस्य धातूनां गौरवं चोपजायते॥

ततो वर्णबलस्नेहा ये चान्येऽप्योजसो गुणाः। व्रजन्ति क्षयमत्यर्थं दोष दूष्य प्रदूषणात्॥

सोऽल्परक्तोऽल्पमेदसको निःसारः शिथिलेन्द्रियः। वैवण्यं भजते तस्य हेतु श्रुणु सलक्षणम्॥ "

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पित्तप्रधान वातादि दोष जिस व्यक्ति के रक्तादिधातु में प्रकुपित हो जाते हैं , उनकी धातुओं में शिथिलता गौरव आ जाता है। तदोपरान्त दोष , दूष्य के शरीर में प्रदूषित हो जाने से बल , वर्ण , स्नेह और ओज के अन्य गुणों की अत्यन्त क्षीणता हो जाती है। इन धातुओं के गुणों के क्षीण हो जाने से व्यक्ति के शरीर में रक्ताल्पता , मे अल्पता , ओज की हीनता और इन्द्रियों में शिथिलता हो जाती है एवं शरीर का वर्ण विकृत हो जाता है , उसे पाण्डु रोग कहते हैं।

सम्प्राप्ति चक्र : - पित्त प्रधान वातादि दोष से रक्तादि धातु दूषित होना

⬇

धातु शैथिल्य एवं गुरुता

⬇

दोष - दूष्य प्रदूषित होने से बल वर्ण स्नेह ओज के गुणों में हानि

⬇

रक्ताल्पता , मेदाल्पता , ओज की हानि , इन्द्रिय शैथिल्य

⬇

शरीर का वर्ण विकृत होकर

⬇

पाण्डु रोग की उत्पत्ति

सम्प्राप्ति घटक :-

दोष - पित्त प्रधान त्रिदोष (साधक पित्त)	**अधिष्ठान** - सर्व शरीरगत त्वक
दूष्य - रस , रक्त , त्वक , मांस ।	**आशय** - आमाशयोत्थ ।
स्रोतस - रसवह , रक्तवह	**अग्नि** - धात्वाग्निमांद्य
स्रोतोदृष्टि - संङ्ग	**व्याधिस्वभाव** - चिरकारी ।
साध्यतासाध्यता - साध्य ।	

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

भेद -

1) वातज पाण्डु
2) पित्तज पाण्डु
3) कफज पाण्डु
4) सन्निपातज पाण्डु
5) **मृद्भक्षण जन्य पाण्डु**

(i) वातिक पाण्डु -

1) त्वक्, मूत्र, नेत्रादि रुक्ष, कृष्ण तथा अरुण वर्ण के (Blackish-reddish discoloration of skin, urine eyes),
2) सूचिकाविद्धवत् पीडा, कम्पन (Pricking needle like pain, tremors),
3) आनाह (Flatulence)

(ii) पैत्तिक पाण्डु -

1) मल , मूत्र तथा नेत्र पीत वर्ण के (Yellowish color of eyes, feces, urine etc.)
2) रोगी का वर्ण अति पीत वर्ण का हो जाता है (Yellowish color of body),
3) शरीर में दाह, (Burning sensation),
4) तृष्णा तथा ज्वर (Thirst and fever)

(iii) कफज पाण्डु -

1) त्वचा मल मूत्र तथा मुख का वर्ण श्वेत (Whitish discoloration of skin, fecus, urine etc).
2) मुख से कफ प्रसेक (Excessive salivation)
3) श्वयथु (Swelling)
4) तन्द्रा (Drowsiness)
5) आलस्य (Laziness)
6) गौरव (Dizziness)

(iv) त्रिदोषज पाण्डु -

1) ज्वर (Fever),
2) अरुचि (Anorexia)
3) हल्लास, छर्दि (Excessive salivation, vomiting)
4) तृष्णा (Thirst),
5) क्लम (Tiredness without exertion)

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

(v) मृत्तिकाजन्य पाण्डु रोग सम्प्राप्ति एवं लक्षण सम्प्राप्ति -

मृतिका सेवन के अभ्यस्त व्यक्ति का वातादि में से कोई दोष कुपित हो जाता है , यथा **कषायरस प्रधान मृतिका** सेवन से **वात** , **ऊषर क्षार युक्त मिट्टी** से **पित्त** , **मधुर रस प्रधान मृतिका** से **कफ** प्रकुपित हो जाता है।

मृत्तिका अपने रुक्ष गुण के कारण आहार रस तथा रसादि धातुओं को रुक्ष बना देती है। मृत्तिका का परिपाक अग्नि द्वारा न होने पर इन रक्तादि धातुओं का वहन करने वाले स्रोतसों का मार्ग अवरुद्ध जो जाता है जिससे धातुओं का पोषण उचित रूप से नहीं हो पाता। मृतिका भक्षण से प्रकुपित दोष इन्द्रियों के बल को नष्ट कर तेज , वीर्य , ओज को नष्ट कर बल , वर्ण , अग्नि को नष्ट करने वाले पाण्डु रोग को उत्पन्न करते है।

लक्षण -

शूनगण्डाक्षिकूटभ्रू - अक्षिकूट , गण्डप्रदेश , भ्रू प्रदेश में शोथ (Swelling arround eyes , face and eyebrows)

शूनपान्नाभिमेहन - पैर , नाभि , मूत्रेन्द्रिय में शोथ (Swelling on feet , umbilicus and penis) ,

पूर्वरूप- **" हृदयस्पन्दनं रौक्ष्यं स्वेदाभावः श्रमस्तथा ।। "**

1) रौक्ष्यं (Dryness of skin) ,
2) हृदयस्पन्दन (Palpitation) ,
3) स्वेदाभाव (Lack of sweating) ,
4) श्रम (Fatigue)

सामान्य लक्षण :-

1. **शूनाक्षिकूट -** अक्षिकूट में शोथ (Swelling arround eyes) ,
2. **हरितशीर्ण लोमा -** रोम का वर्ण हरित होना या रोम झड़ जाना (Discoloration or fall of hairs) ,
3. **हतप्रभा -** शरीर की कान्ति नष्ट हो जाना (Loss of radiance) ,
4. **अल्पवाक -** कम बोलना (Talkless / feeble speech)
5. **पिण्डिकोद्वेष्टन -** पिण्डिलियों में ऐठन (Cramps in calf region) ,
6. **भवन्तयारोहणायासै-** ऊँचे स्थान पर चढ़ने में परिश्रम (Fatigue on climbing high)

साध्य - असाध्यता :-

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) बहुत पुराना पांडु रोग समय बीत जाने पर असाध्य हो जाता है
2) जो पांडु का रोगी सभी वस्तुओ को पीत वर्ण का देखता हो
3) अधिक पुराना शोथ युक्त पांडु
4) जिसका शरीर श्वेत वर्ण से लिप्त हो
5) जिसका मल हरा , बद्ध और अल्प मात्रा मे हो गया हो

ऐसे पांडु ऑरगी **असाध्य** माने गए है ।

आमवात निदान

सन्दर्भ ग्रन्थ :- चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय 15 'ग्रहणी चिकित्सा अध्याय'।

व्याधि परिचय :-

आमवात संधिगत व्याधियों में मुख्य रूप से पायी जाने वाली व्याधि है। आहार का पाक सम्यक् रुप से न होने पर उत्पन्न आमविष वात दोष के साथ मिलकर विभिन्न संधियों में आश्रय लेकर पीडा उत्पन्न करता है। जिसे आमवात कहते हैं।

संहिताओं में आमवात का स्वतंत्र वर्णन **सर्वप्रथम माधव निदान** में किया गया है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में आमवात का साम्य **Rheumatoid artheritis** से किया जाता है।

निरुक्ति :-

" आमेन सहितः वातः आमवातः। "

आम एवं वात दोष दोनों को एक साथ होने पर आमवात संज्ञा दी जाती है।

निदान :-

" विरुद्धाहार चेष्टस्य मन्दाग्निः निश्चलस्य च। स्निग्धं भुक्तवतो ह्यन्नं व्यायाम कुर्वतस्तथा ।। "

(मा. नि. 25/1)

- विरुद्ध आहार सेवन यथा अजीर्ण अवस्था में भोजन, अधिक स्निग्ध भोजन, दूषित-पर्युषित भोजन।
- विरुद्ध चेष्टायें (विहार) यथा अजीर्णावस्था में व्यायाम, व्यवाय, जलप्रतरण इत्यादि,
- स्निग्ध भोजन उपरान्त तुरंत व्यायाम करने से

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आम :-

" ऊष्मणोऽल्पबलत्वेन धातुमाद्यमपाचितम्। दुष्टमामाशयगतं रसमामं प्रचक्षते ।। "

अग्नि की दुर्बलता से अपक्व, एवं वातादि दोषों से युक्त आमाशयगत आद्य प्रथम रस धातु को आम कहते हैं। दूषित (वातादि दोषों से युक्त) प्रथम धातु 'रस' को आम कहते हैं।

सम्प्राप्ति :-

" वायुना प्रेरितो ह्यामः श्लेष्मस्थानं प्रधावति । तेनात्यर्थ विदग्धोऽसौः धमनीः प्रतिपद्यते ।।

वातपित्त कफैर्भूयोः दूषितः सोऽन्नजो रसः। स्रोतांस्यभिष्यन्दयति नानावर्णोऽतिपिच्छिलः।।

जन्यत्याशु दौर्बल्यं गौरवं हृदयस्य च। व्याधीनामाश्रयो ह्येष आमसंज्ञोऽतिदारुणः।।

युगपत्कुपितावन्तस्त्रिकसन्धिप्रवेशको । स्तब्धं च कुरुतो गात्रमामवातः स उच्यते ।। "

उपरोक्त निदान सेवन से उत्पन्न आमरस, प्रकुपित वायु से प्रेरित होकर श्लेष्मा के मुख्य स्थान आमाशय, सन्धि, सिर एवं कण्ठ की ओर जाता है। अधिक विकृत, विदग्ध अवस्था में होने पर यह आमरस वायु द्वारा धमनियों में पहुँच जाता है।

धमनियों में स्थित दोषों (वात-पित्त-कफ) से मिलकर यह अन्नरस और अधिक दूषित होकर विभिन्न वर्णो वाला होता है तथा पिच्छिलता से युक्त होकर शरीर के विभिन्न स्रोतों में क्लेद उत्पन्न कर देता है।

इससे शीघ्र ही दौर्बल्य तथा हृदय में भारीपन उत्पन्न हो जाता है। यह आमरस अनेक व्याधियों का आश्रय होने से अत्यंत दारुण होता है।

वात दोष एवं आम एक साथ प्रकुपित होकर कोष्ठ, त्रिक प्रदेश तथा संधियों में प्रविष्ट हो जाते है। एवं समस्त शरीर को स्तब्ध (जकड़) कर देते हैं। यह रोग आमवात कहलाता है।

Ayurvedic Formulation

सम्प्राप्ति घटक :-

- **दोष-** वात, कफ प्रधान त्रिदोष+आम
- **दूष्य-** रस, रक्त, मांस, स्नायु, अस्थि, संधि, कण्डरा
- **स्रोतस-** रसवह, अस्थिवह, मज्जावह
- **स्रोतोदुष्टि-** संङ्ग

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **अधिष्ठान -** सर्वसन्धियाँ
- **अग्नि-** मन्द
- **व्याधिस्वभाव-** चिरकारी
- **साध्यतासाध्यता-** नवीन-साध्य, द्विदोषज - याप्य, त्रिदोषज-असाध्य

प्रत्यात्म लक्षण - सशूलं सशोथं- संधियों का शोथ एवं वेदना युक्त होना

सम्प्राप्ति चक्र :-

निदान सेवन

↓

गुरु स्निग्धादि निदान सेवन

↓

अग्निमांद्य

↓

आमदोष

व्यायामादि निदान सेवन

↓

वातप्रकोप

↓

आम+वात

↓

विदग्ध आमरस वायु द्वारा प्रेरित होकर धमनियों में पहुँच जाता है

- हृदय- गौरव
- संधि स्थान- वृश्चिक दंशवत् वेदना, शोथ
- सर्वाङ्ग - दौर्बल्य, आलस्य, गुरुता

↓

त्रिदोष से मिलकर और अधिक दूषित होकर विभिन्न वर्ण युक्त एवं अतिपिच्छलता युक्त

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

↓

स्रोतोऽभिष्यन्द

↓

आम व वात एक साथ कुपित होकर त्रिक प्रदेश व संधि स्थानों में प्रवेश कर जाते हैं

↓

सम्पूर्ण शरीर में स्तब्धता, दौर्बल्य, गौरव आदि लक्षण

↓

आमवात उत्पत्ति

पूर्वरुप :-

" अङ्गमर्दोऽरुचिस्तृष्णा यालस्यं गौरवं ज्वरः। अपाकः शूनताऽङ्गानामामवातस्य लक्षणम् ॥ "

(मा. नि. 25/6)

- विभिन्न अंगों में पीडा (Pain in body parts)
- अरुचि (Anorexia),
- तृष्णा (Thirst),
- गौरव (Heaviness),
- अविपाक (Indigestion),
- आलस्य (Lassitude),

आमवात लक्षण : -

- हाथ, पैर, गुल्फ, त्रिक, जानु, उरु संधियों में शोथ एवं पीडा (Swelling and pain in joints)
- जिस भी स्थान में आमदोष स्थित होता है पीड़ा युक्त शोथ उत्पन्न करता है (Painful swelling)
- **वृश्चिक दंश के समान तीव्र वेदना** होती है (Severe pain like scorpion bite),
- अग्निदौर्बल्य (Decreased digestive capacity),
- प्रसेक (Excessive salivation),
- अरुचि (Anorexia),
- शरीरगौरव (Heaviness) होता है,

Ayurvedic Formulation

भेद :- आचार्य शार्ङ्गधर ने आमवात के चार भेद बतायें हैं - **वात , पित्त , कफ एवं सन्निपातज**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

दोषानुसार आमवात लक्षण-

- **पित्तानुबन्ध आमवात-** दाह एवं राग युक्त,
- **वातानुबन्ध आमवात**- तीव्र शूल युक्त,
- **कफानुबन्ध आमवात**- स्तिमित, गुरुता तथा कण्डू युक्त लक्षण मिलते हैं।

साध्यतासाध्यता :- एक दोषज साध्य, द्विदोषज याप्य होता है। सर्वशरीर व्याप्त सन्निपातिक आमवात कृच्छ्रसाध्य कहा जाता है।

EDEMA

Definition -

Oedema is defined as abnormal and excessive accumulation of fluid in the interstitial tissue space.

Special forms of oedema

- Hydro thorax (Pleural cavity)
- Hydro pericardium (Pericardial cavity)
- Hydro peritoneum , Ascities (Peritoneum)

Types of oedema fluid

Transudate

Protein poor fluid caused by increased hydrostatic pressure , Seen in

- Heart failure
- Hepatic failure
- Renal failure

Exudates

Protein rich fluid caused due to increased vascular permaibility.

Seen in - Inflammation

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

On the basis of Free Fluid

Pitting

Momentary pressure of fingers produces a depression

Non Pitting or Solid edema

No pitting is produced on pressure.

Ex- myxodema, elephantiasis

Pathophysiological Catogories

Local

Limited to a organ or part of body(Ex. Arm, leg).

Generalised

It is systemic in distribution and affects visceral organs, skin of the trunk and lower extremities , it is also called **ANASARCA OR DROPSY.**

Normal fluid exchange –

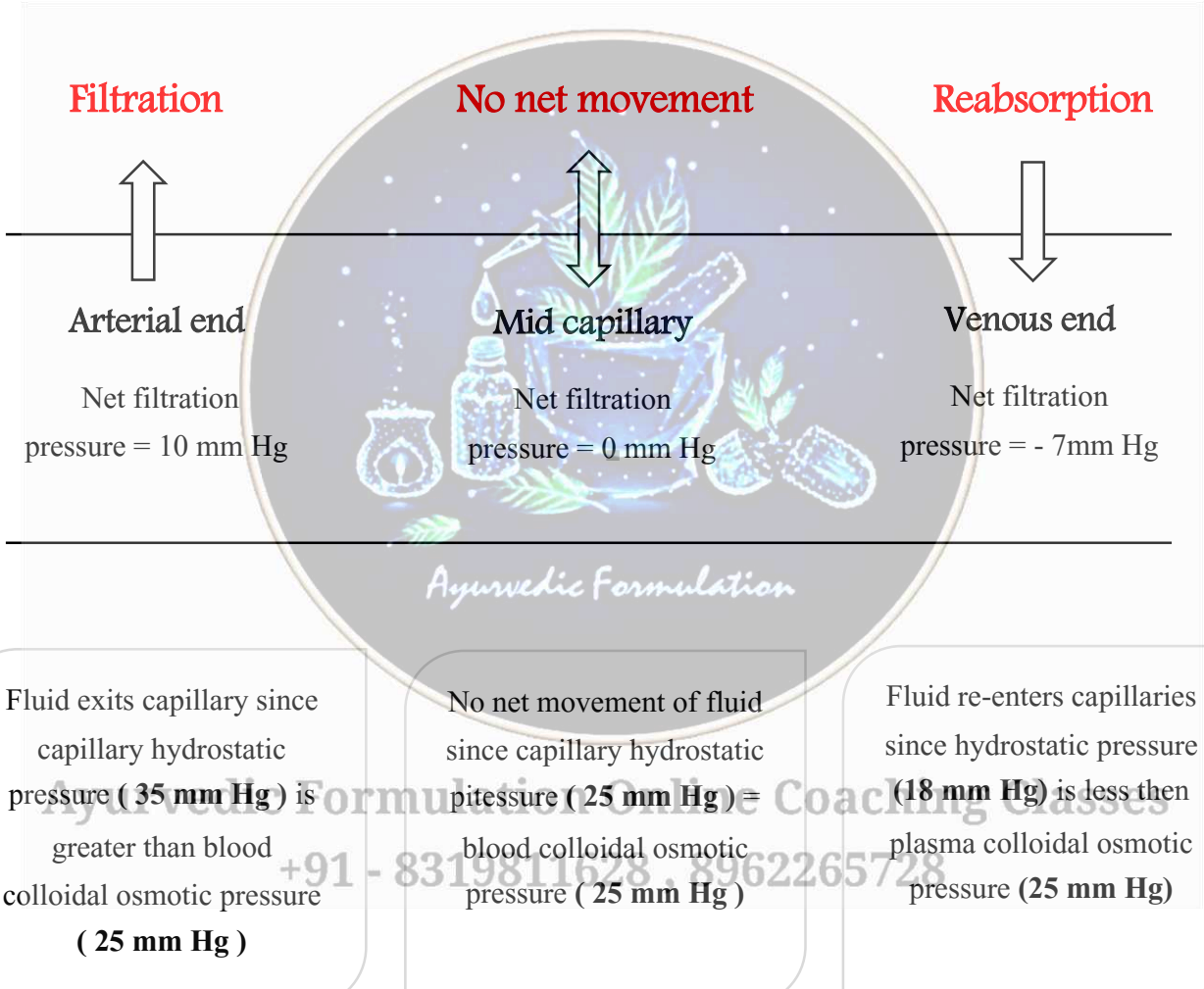

Fluid exits capillary since capillary hydrostatic pressure **(35 mm Hg)** is greater than blood colloidal osmotic pressure **(25 mm Hg)**

No net movement of fluid since capillary hydrostatic pitessure **(25 mm Hg)** = blood colloidal osmotic pressure **(25 mm Hg)**

Fluid re-enters capillaries since hydrostatic pressure **(18 mm Hg)** is less then plasma colloidal osmotic pressure **(25 mm Hg)**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

The movement of water and salts between the intravascular and interstitial space is controlled by mainly two opposite effects of Starling forces.

1) The force that drives the fluid out of the circulation is Vascular hydrostatic pressure.
2) The force that drives the fluid into the circulation is Plasma colloid osmotic pressure.

At arterial end –

- Vascular hydrostatic pressure is 35 mm of Hg
- Plasma colloid osmotic pressure is 25 mm of Hg
- Outward driving force - 35-25= 10 mm of Hg

So at arterial end , fluid comes out from capillaries into interstitial space.

At venous end –

- Vascular hydrostatic pressure is 18 mm of Hg
- Plasma colloid osmotic pressure is 25 mm of Hg
- Inward driving force - 25-18= 7 mm of Hg

So at venous end , fluid get back to the capillaries from interstitial space.

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Any excessive interstitial fluid is remived by lymphatics and ultimately return to blood stream via thoracic duct.

So normally there is no oedema because at the arterial end fluid comes out from the capillary , but returns back to the capillary at the venous end .

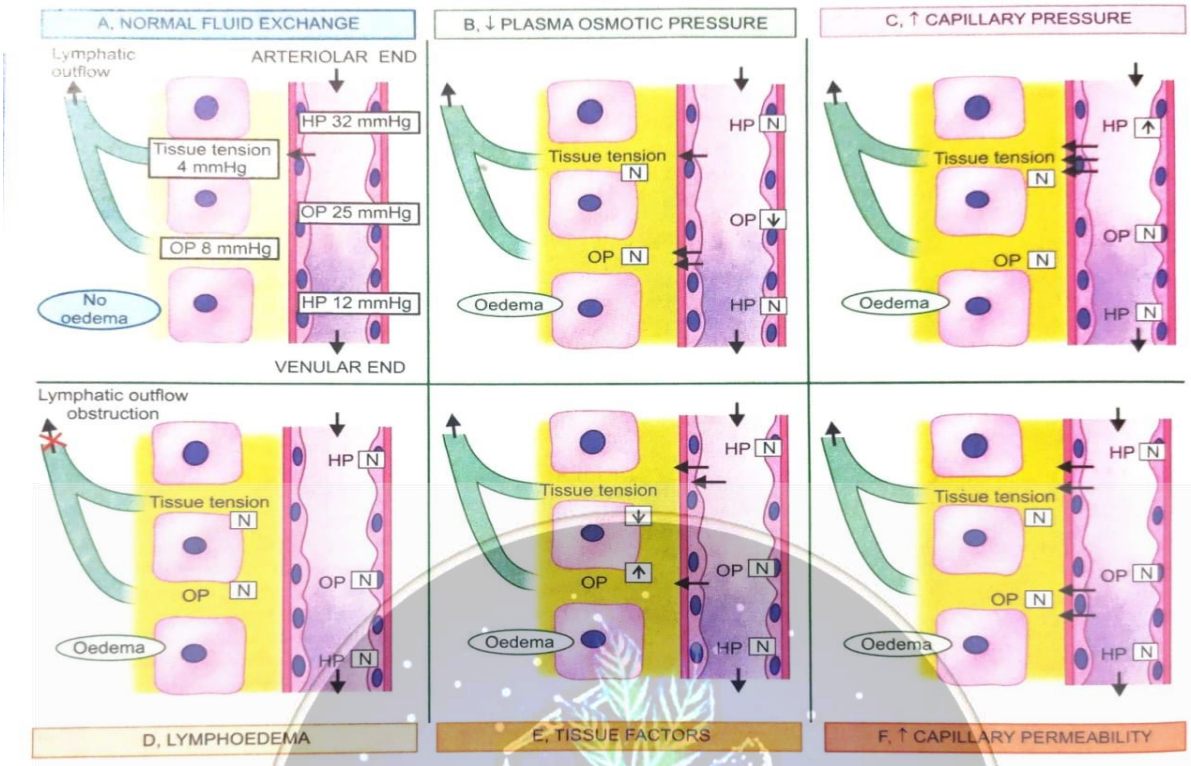

Pathogenesis of edema -

1) **Increased outward Hydrostatic Force of Capillary -** It may be due to impaired venous return eg : Deep vein thrombosis .
2) **Decreased Inward Force or Osmotic Pressure of Capillary -** It is due to hypo proteinemia eg . In rephrotic syndrome , liver cirrhosis .
3) **Defective Removal of Interstitial Fluid by Lymphatics -** due to lymphatic obstruction
4) **Increased Vascular Permeability -** without alteration in fluid pressure .
5) **Sodium and Water Retention-** Excessive sodium and water retention cause expansion of plasma volume , increase in the hydrostatic pressure and ultimately causes oedema.

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Sodium and water retention by -

1) Intrinsic renal mechanism- baroreceptors stimulation thereby decrease in exertion of Na.
2) Extra renal mechanism- through RAAS
3) ADH mechanism

RHEUMATOID ARTHRITIS

Definition -

Rheumatoid arthritis is a systemic Chronic inflammatory disorder , which mainly affects the joints but can also affect many other tissues and organs .

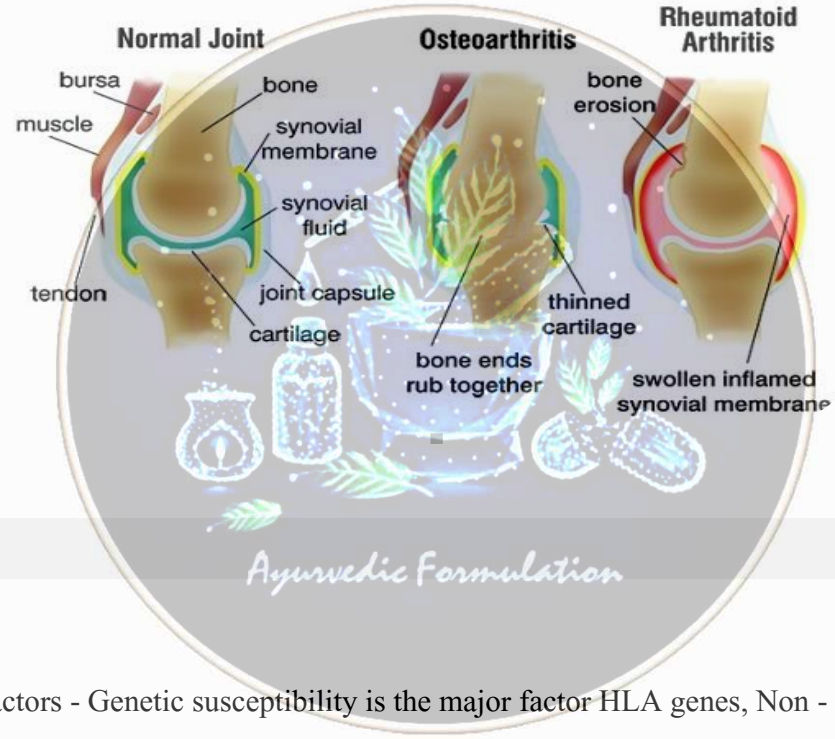

Etiology -

1) Genetic factors - Genetic susceptibility is the major factor HLA genes, Non - HLA genes .
2) Environmental arthiritogen agent Smoking - Microbial agents (mycobacterium , virus etc)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Pathogenesis -

Rheumatoid arthiritis is initiated with genetic susceptibility by exposure of unknown arthritogenic antigen

⇩

Genetic susceptibility result in the breakdown of immunological self tolerance

⇩

Loss of self tolerance activates mainly CD4 +T Cells and initiate cytokine mediated inflammation

⇩

Recruitment of macrophages and other inflammatory cells

⇩

Tissue injury and Deactivation of synovial cells (synoviocytes)

⇩

Destruction of bone , cartilage , ligament and tendon pannus formation and fibrosis ankylosing

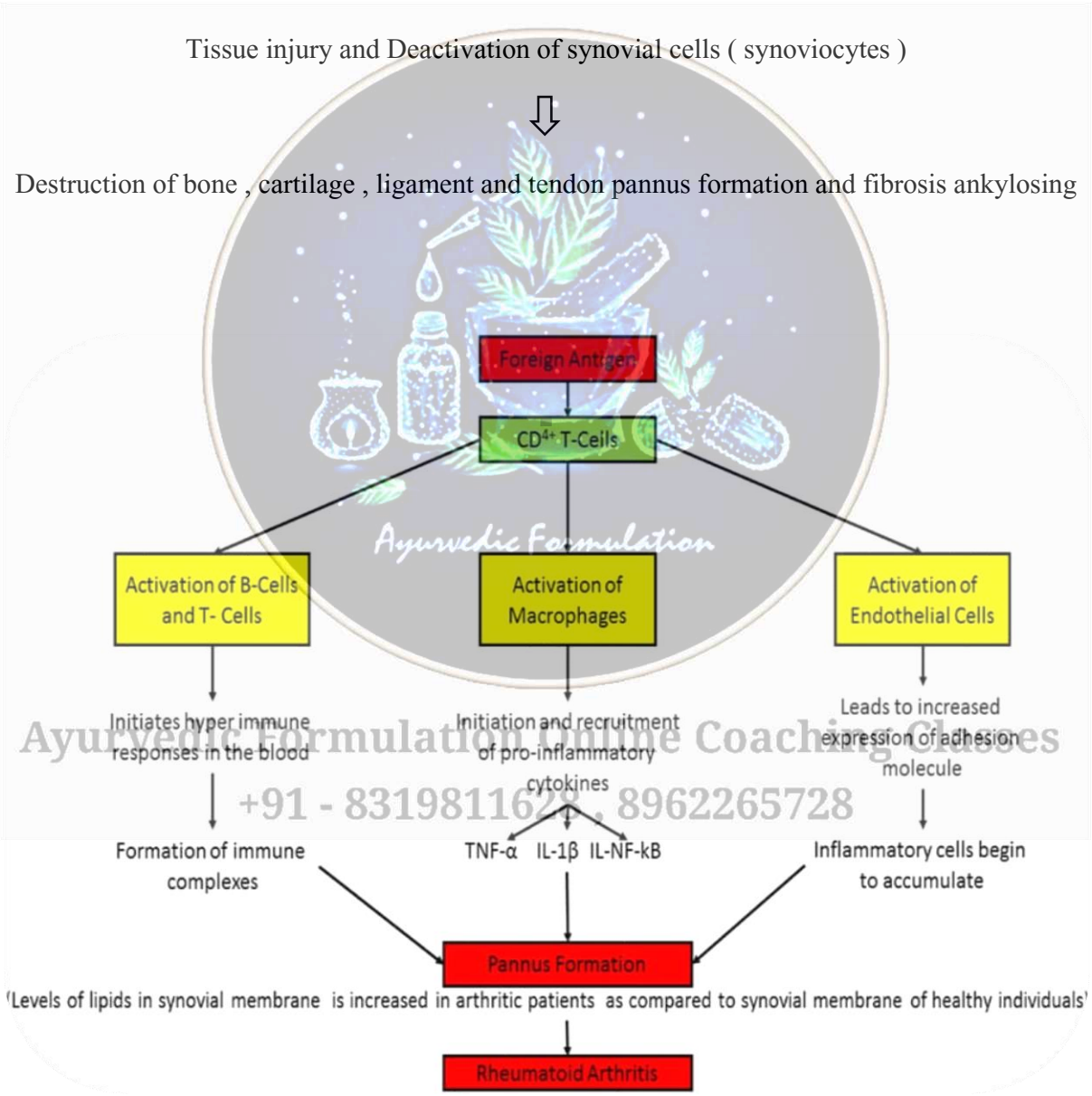
Foreign Antigen
CD4+ T-Cells
Activation of B-Cells and T- Cells
Activation of Macrophages
Activation of Endothelial Cells
Initiates hyper immune responses in the blood
Initiation and recruitment of pro-inflammatory cytokines
Leads to increased expression of adhesion molecule
Formation of immune complexes
TNF-α IL-1β IL-NF-kB
Inflammatory cells begin to accumulate
Pannus Formation
'Levels of lipids in synovial membrane is increased in arthritic patients as compared to synovial membrane of healthy individuals'
Rheumatoid Arthritis

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Consequesces -

1) Edema
2) Hyperplasia of synoviocytes
3) Inflammatory inflammation in synovium
4) Formation of pannus
5) Destruction of cartilage
6) Erosion of adjacent subchondral bone

Deformities -

1) Radial deviation of wrist .
2) Ulnar deviation of fingers .
3) Swan neck deformity.
4) Boutonniere deformity .
5) **Bakers cyst -** on the posterior knee caused due to herniation of synovium .

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

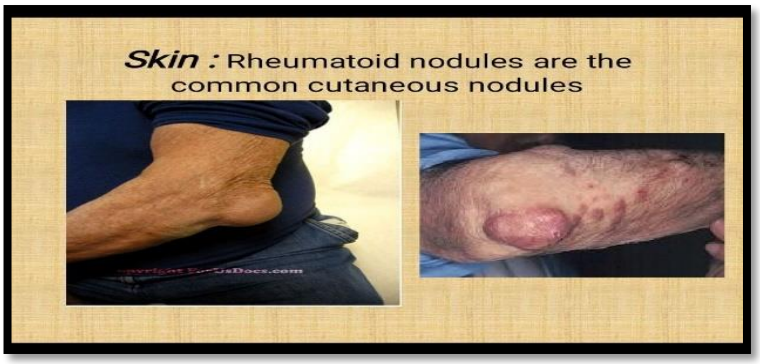

Clinical Features -

1) Usually small joints are involved before large ones .
2) Symmetrical joints involved .
3) Early morning stiffness and easing with physical activity.
4) Most common between 40 to 70 year .
5) Three times more often in women then men .
6) Slow onset and presents with malaise , fatigue and musculoskeletal pain .

Complications -

- Ruptured tendons
- Ruptured joints (Baker's cysts) Joint infection
- Spinal cord compression (atlantoaxial or upper cervical spine) Amyloidosis (rare)

Diagnosis -

1. Laboratory test

1) ESR Elevated positive .
2) Rheumatoid factor - RA Positive.
3) Presence pf Anti CCP antibodies .
4) Synovial fluid biopsy - Increased WBC , RA factor and Anti CCP antibodies present .

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2. SEROLOGY –

1) Negative RA factor and negative ACCP - 0
2) Low positive RA factor and ACCP - 2
3) High positive RA factor and ACCP – 3

3. JOINT INVOLVEMENT –

1) 1 large joint - 0
2) 2-10 large joints - 1
3) 1-3 small joints -2
4) 4-10 small joints - 3
5) Greater then 10 joints (atleast 1 small joint) - 5

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

FILARIASIS

Definition -

Filariasis is a parasitic disease caused by an infection with roundworms of the filarioidea type, spread by blood feeding black flies and mosquitos, belongs to the group of disease called helminthiasis.

Epidemiology -

- Lymphatic filariasis is caused by Wuchereria bancrofti , Brugia malayi and Brugia timori in which W. bancrofti is the most widely distributed filarial parasite of the humans.
- Distributed widely in tropics and subtropics. The largest number of cases of filariasis occur in India. (Mainly along the sea coast and along the banks of the large rivers).

Filarial Worm -

Habitat –

- **Adult worm -** Lymphatic system of man.
- **Microfilariae -** Found in blood.

Periodicity –

Depending on when the largest number of microfilariae occur in blood, Wuchereria bancrofti is nocturnally periodic (largest number of microfilariae occur in blood at night) .

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Note - The microfilariae are found in capillaries and blood vessels of lungs during the period when they are not present in the peripheral blood.

Definitive host – Man (sexual host)

Intermediate host – Female mosquito of different species acts as vector. In asia - Culex quinquefasciatus (Culex fatigans). Aedes and Anopheles can also be the vector

Infective form – filiriform larva.

Mode of transmission – human get infection by bite of mosquito carrying filiriform larva.

Incubation period – 8-16 month or more .

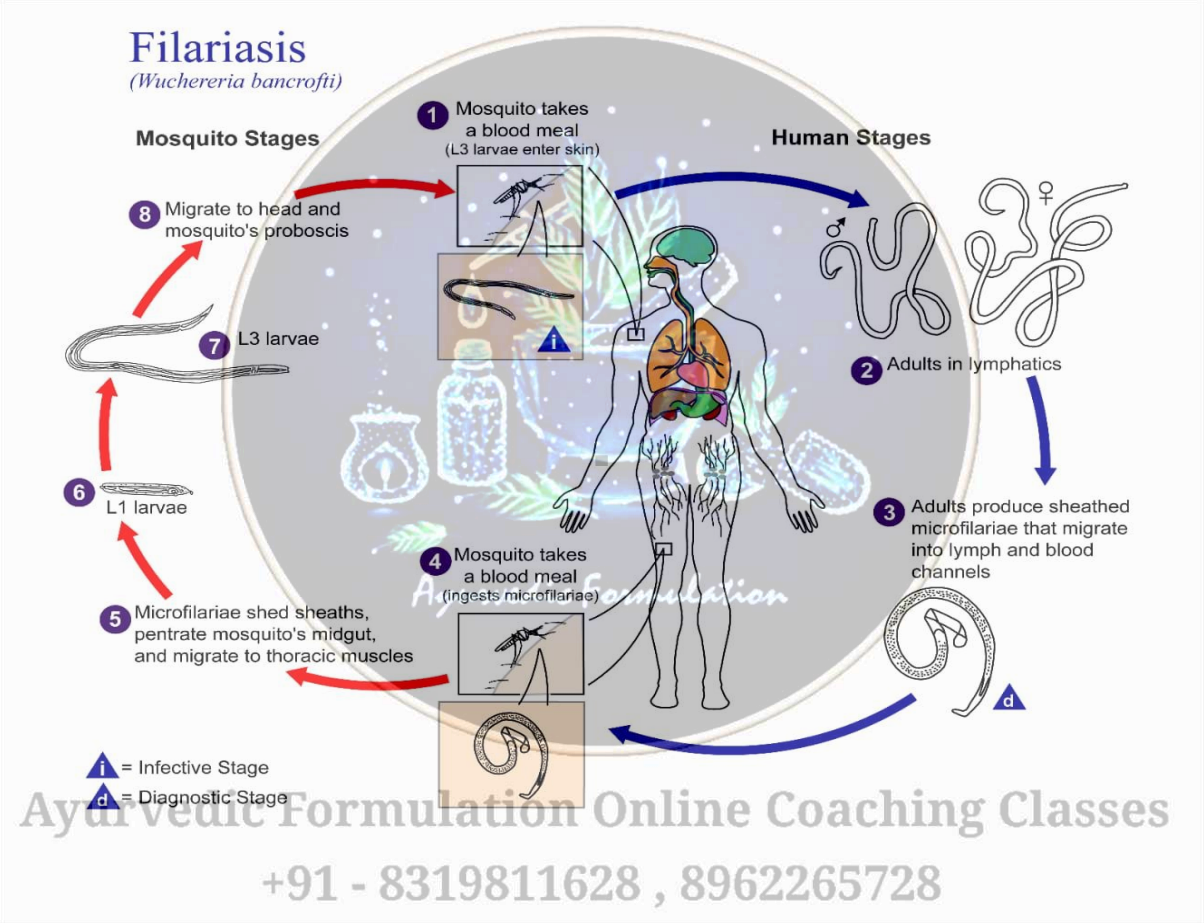
Filariasis
(Wuchereria bancrofti)
Mosquito Stages
Human Stages
1 Mosquito takes a blood meal (L3 larvae enter skin)
2 Adults in lymphatics
3 Adults produce sheathed microfilariae that migrate into lymph and blood channels
4 Mosquito takes a blood meal (ingests microfilariae)
5 Microfilariae shed sheaths, pentrate mosquito's midgut, and migrate to thoracic muscles
6 L1 larvae
7 L3 larvae
8 Migrate to head and mosquito's proboscis
i = Infective Stage
d = Diagnostic Stage
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Elephantiasis – fibroblast invade the oedematous tissues lying down fibrous tissue producing non pitting gross edema of elephantiasis.

Pathogenesis –

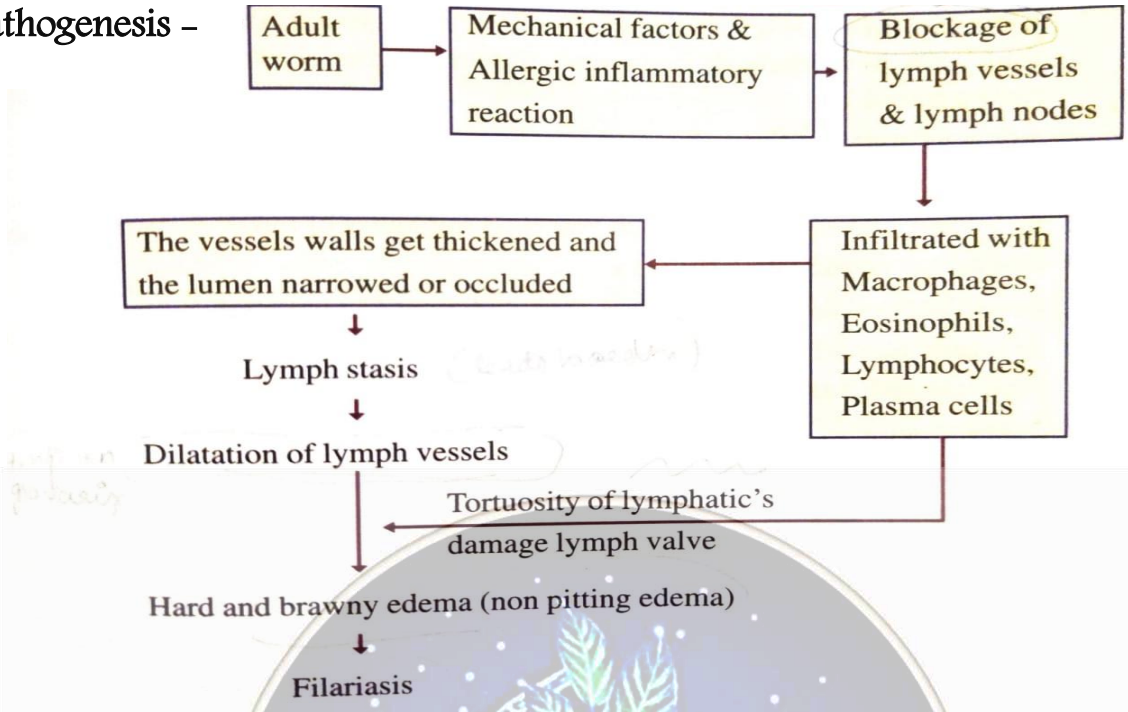
Adult worm
Mechanical factors & Allergic inflammatory reaction
Blockage of lymph vessels & lymph nodes
Infiltrated with Macrophages, Eosinophils, Lymphocytes, Plasma cells
The vessels walls get thickened and the lumen narrowed or occluded
Lymph stasis
Dilatation of lymph vessels
Tortuosity of lymphatic's damage lymph valve
Hard and brawny edema (non pitting edema)
Filariasis

Clinical features

The most common presentation of lymphatic filariasis is asymptomatic microfilaremia, acute adenolymphangitis and chronic lymphatic disease .

1) **Asymptomatic microfilaremia –** Clinically asymptomatic, but microscopic hematuria, proteinuria, dilated lymphatics on imaging, scrotal lymphaginitis in male can be found.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) Adenolymphangitis (ADL) –

1. High grade fever - Sudden onsets, associated with rigor, last for 2-3 days.

2. Lymphangitis - Inflamed lymph vessels (lymphatics of testes & spermatic card)

- Red streaks underneath the skin.

3. Lymphadenitis - Inflamed lymph node (inguinal and axillary).

- Enlarged painful and tender lymph nodes.

4. Lymphangiovarix - Dilation of lymph vessels.

Hydrocoele

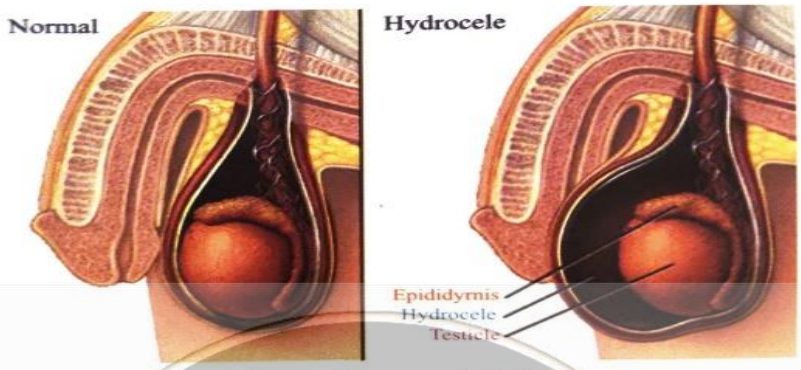

Obstruction of lymph vessels of spermatic cord

Exudation of inflamed testes and epididymis

⇩

Accumulation of fluid

⇩

b/w the layer of tunica vaginalis (clear and straw coloured)

Hydrocoele

(Unilateral or bilateral)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Elephantiasis –

Chronic form of filariasis, commonly seen in legs. Non pitting; browny edema thickened skin cracks ,fissures, secondary bacterial and fungal infections.

Diagnosis -

(i) History and physical examination –

- Clinical features
- History of exposure

Laboratory test -

Blood test - Blood sample should be collected between 10pm and 4am, as the worm is nocturnally periodic.

Note - DEC provocation test:- A small dose of diethyle carbamazine induces microfilaria to appear in peripheral blood during day time and blood sample can be collected after 20-50 minute of administration of DEC to adults. (2mg/kg body weight)

- Thick or thin blood smears microscopy .
- Eosinophilia
- Elevated Ig.E levels.

Ayurvedic Formulation

(ii) Lymph node biopsy

(iii) USG – filaria dance sign: identification of motile adult worm within the dilated lymphatics.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

(iv) Radiology - On X-ray dead and calcified worm can be detected.

(v) Serological test –

- ELISA
- Rapid format immunochromatographic card test.

(vi) PCR

शोथ

संदर्भ ग्रंथ-

- चरक संहिता , सूत्र स्थान , अध्याय **18 " त्रिशोथीय अध्याय "**
- चरक संहिता , चिकित्सा स्थान , अध्याय **12 " श्रुयथु चिकित्साध्याय "**

शोथ व्याधि परिचय -

आयुर्वेदीय सहिता ओ में शोथ का वर्णन स्वतन्त्र व्याधि के रूप में सभी आचार्यों ने किया है। शोथ का सामान्य अर्थ सूजन से लिया जाता है।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में शोथ का साम्य **Edema या inflammation** से किया जाता है।

शोथ -

" शरीरोपरि उत्सेधउन्नत्वमप्यनवस्थितत्व स्यादित्यर्थ: शोथ : ।। "

अर्थात शरीर के ऊपरी भाग पर अनियत उत्सेध या उभार को शोथ कहा जाता है।

निजशोथ के निदान -

" शुद्धयामयाभक्तकृशाबलानां क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरू पसेवा।

दध्याममृच्छाकविरोधिदुष्टारोपसृष्टान्ननिषेवणं च ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- वमन - विरेचन आदि संशोधनों से या किसी रोग के होने या भोजन न करने के कारण जो व्यक्ति कृश और निर्बल हो गये हों , वे जब क्षार पदार्थ , अम्ल वस्तु , तीक्ष्ण या उष्ण या भारी पदार्थ का आहार करते हैं
- दही बिना पका अन्न , मिट्टी , शाक , विरोधी अन्न और कृत्रिम विषयुक्त अन्न का सेवन करते हैं तो ये सब निज शोथ के कारण होते हैं।

आगन्तुज शोथ निदान -

" तत्रागन्तवश्छेदन भेदनक्षणनभंजनपिच्छनोत्पेषणप्रहारबधबन्धनवेष्टनव्यधनपीडनादिभिर्वा भल्लातकपुष्पफलरसात्मगुप्तशूकक्रिमिशूकाहितपत्रलतागुल्मसंस्पर्शनैर्वा । "

- आगन्तुक शोथ कटजाने , फटजाने , पिसजाने , कुचल जाने टूट जाने , घिस जाने और चोट लगने से ,
- आघात से , बंध जाने से , अङ्गों के ऐंठ जाने से , कांटे आदि चुभने से , दब जाने से
- भिलावे के फूल -फल या रस के लग जाने से ,
- केवाछ के रोये के लग जाने से ,
- शूकवाले क्रिमि के डंक के लग जाने से ,
- विषेले पत्र , लता , गुल्म का स्पर्श हो जाने से

शोथ की सम्प्राप्ति -

" बाह्या: सिरा: प्राप्य यदा कफासृपित्तानि सन्दूषयतीह वायु: ।

तैर्बद्धमार्ग: स तदा विसर्पन्नुत्सेधलिङ्गं श्वयथुं करोति ।। "

स्वप्रकोपक कारणों से दूषित हुआ वायु जब रक्तवाहिनी बाहरी सिराओं में पहुँचकर कफ रक्त और पित्त को दूषित कर देता है : और रक्तवाहिनियों में बड़े हुए कफ , रक्त एवं पित्त वायु के सञ्चरण को अवरुद्ध कर देते हैं एवं वह वायु जब इधर - उधर फैलने की चेष्टा करती है , तो उस स्थान में उभार उत्पन्नकर शोथ पैदा कर देती है ।

Ayurvedic Formulation

शोथ के पूर्वरूप -

" ऊष्मा तथा स्याद्व्यथु: सिराणामायाम इत्येव च पूर्वरूपम् । "

शोथ होने वाले स्थान में गर्मी का अनुभव होना , जलन होना और वहाँ की रक्तवाहिनियों में तनाव होना,ये तीन पूर्वरूप बताए गए है ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

शोथ के सामान्य लक्षण -

" सगौरवं स्यादनवस्थितत्वं सोत्सेधमुष्माऽथ सिरातनुत्वम् ।

सलोमहर्षअंगविवर्णता च सामान्यलिगं श्वयथो: प्रदिष्टम् ।। "

शोथ वाले स्थान में भारीपन , शोय का एक जैसा सदा न रहना अपर्ण कभी कन , कभी अधिक होना (ऊचा होना), गर्मी होना , सिराओं का पतला होना , रोंगटे खड़े हो जा और अगों में विवर्णता का हो जाना ।

वातज शोथ लक्षण -

" शूयन्ते यस्य गात्राणि स्वपन्तीव रुजन्ति च । पीडितान्युन्नमन्त्याशु वातशोथं तमादिशेत् ॥

यश्चाप्यरुणवर्णाभः शोथो नक्तं प्रणश्यति । स्नेहोष्णमर्दनाभ्यां च प्रणश्येत् स च वातिकः ॥ "

जिस रोगी के अंग सूज जाते हैं , शून्य जैसे हो जाते हैं और वेदनायुक्त होते हैं तथा दबाने पर फिर शीघ्र ही उभर लक्षणजाते हैं , उस शोथ को वातज शोथ कहते हैं , जो अरुण वर्ण का हो और रात में मिट जाय और स्नेहन , स्वेदन तथा मर्दन से जो नष्ट हो जाय , उसे वातज शोथ कहते है ।

पित्तज शोथ लक्षण -

" यः पिपासाज्वरार्तस्य दूयतेऽथ विदह्यते । स्विद्यति क्लिद्यते गन्धी स पैत्तः श्वयथुः स्मृतः ॥

यः पीतनेत्रवक्त्रत्वक् पूर्व मध्यात् प्रशूयते । तनुत्वक् चातिसारी च पित्तशोथः स उच्यते ॥ "

तृष्णा और ज्वर से ग्रस्त शोथ के रोगी के शोथ में वेदना हो , जलन हो , स्वेद निकलता हो , क्लिन्नता (गीलापन) हो और गन्ध निकलती हो , उसे पित्तज शोथ कहते हैं । रोगी के नेत्र , मुख और त्वचा पीले हों , शोथ शरीर के मध्यभाग से उठता हो , बाद में शरीर के दूसरे भागों में फैले , शोथ के स्थान की त्वचा पतली हो और रोगी को अतिसार हो तो उसे पित्तज शोथ कहा जाता है ।

कफज शोथ लक्षण -

" शीतः सक्तगतिर्यस्तु कण्डूमान् पाण्डुरेव च । निपीडितो नोन्नमति श्वयथुः स कफात्मकः ॥

यस्य शस्त्रकुशच्छिन्नाच्छोणितं न प्रवर्तते । कृच्छ्रेण पिच्छा स्रवति स चापि कफसम्भवः ॥ "

जो शोथ स्पर्श में शीतल हो , स्थिर हो , खुजली आती हो , पीले वर्ण का हो और दबाने पर जो उठता नहीं हो , जिस शोथ में शस्त्र , चाकू , काँटा आदि से छेदने पर भी रक्त न निकले , कठिनाई से थोड़ी - सी चिपचिपी वस्तु निकले उसे कफज शोथ जानना चाहिए ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

शोथ उपद्रव -

" छर्दिश्वासोऽरुचिस्तृष्णा ज्वरोऽतीसार एव च । सप्तकोऽयं सदौर्बल्यः शोथोपद्रव संग्रहः ॥ "

छर्दि , श्वास , अरोचक , पिपासा , ज्वर , अतिसार , दौर्बल्य इन 7 को आचार्य चरक ने शोथ के उपद्रव माने है ।

शोथ के प्रकार -

1) **एकविध शोथ -** उत्सेध (ऊँचापन) की समानता होने से
2) **द्विविध शोथ -** १.निज और २. आगन्तुज
3) **त्रिविध शोथ -** १. वातज , २. पित्तज और ३. कफज
4) **चतुर्विध शोथ -** १. वातज , २. पित्तज , ३. कफज और ४. सन्निपातज
5) **सप्तविध शोथ -** १. वातज , २. पित्तज , ३. कफज , ४.वातपित्तज , ५. वातकफज , ६.पित्तकफज और ७. सन्निपातज
6) **अष्टविध शोथ -** १. वातज , २. पित्तज , ३. कफज , ४. वातपित्तज , ५. वातकफज , ६. पित्तकफज, ७. सन्निपातज और ८. आगन्तुज

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** वात प्रधान त्रिदोष
- **दूष्य -** रस , रक्त
- **अधिष्ठान -** त्वक् मांस के मध्य में
- **अग्नि -** मन्द
- **स्त्रोतस -** रसवह स्त्रोतस (निज शोथ)
- **व्याधि स्वभाव - चिरकारी -** निजशोथ , रक्तवह स्त्रोतस (आगन्तुज शोथ) **आशुकारी -** आगन्तुज शोथ
- **स्त्रोतोदुष्टि -** संग , पश्चात् विमार्गगमन
- **साध्यतासाध्यता -** उपद्रव रहित नवीन शोथ - साध्य , शेष - कृच्छ्रसाध्य , असाध्य

शोथ का चिकित्सासूत्र -

" निदानदोषर्तुविपर्ययक्रमैरुपाचरेत्तं बलदोषकालवित् ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रोगी के शारीरिक बल एवं उसके रोग के बल को , रोग के उत्पादक दोष एक या अनेक हैं , साम हैं या निराम हैं और रोग के क्रियाकाल को जानने वाला वैद्य , रोग के निदान (जिन कारणों से रोग हुआ हो) , रोग से सम्बद्ध वात आदि दोष और रोग उत्पन्न होने की ऋतु के विपरीत क्रम से साध्य शोथ की चिकित्सा करे ।

रक्तपित्त

संदर्भ ग्रंथ - चरक संहिता, निदान स्थान, अध्याय **2 " रक्तपित्त निदान "**

चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय **4 " रक्तपित्त चिकित्सितं "**

- ❖ रक्तपित्त को **लोहितपित्त संज्ञा आचार्य चरक** ने दी है
- ❖ **प्रतिमार्ग हरणं चिकित्सा** ⟶ **रक्तपित्त**

सामान्य व्याधि परिचय -

बिना किसी अभिघात सदृश **बाह्य कारण** के, शरीरान्तर्गत कारणों से उत्पन्न रक्तस्राव को रक्तपित्त कहते हैं अथवा पित्त द्वारा **दूषित रक्त** का बाहर निकलना रक्त पित्त कहलाता है।

रक्त स्राव की प्रवृत्ति अनेक रोगों में पाई जाती है परन्तु सभी को रक्तपित्त नहीं कहा जा सकता, अर्श सदृश जिन रोगों में **जीवित या शुद्ध रक्त** की प्रवृत्ति होती है उन रोगों का नामतः व्यवहार रोग नाम के **पूर्व रक्त लगाकर** किया जाता है यथा रक्तातिसार, रक्तप्रदर, रक्तार्श अतएव जिस स्थान पर पित्त द्वारा दूषित रक्त शरीर के किसी भी मार्ग से निकलता हो उसे रक्तपित्त कहते हैं।

आचार्य चरक ने रक्तपित्त को **महारोग** की संज्ञा देते हुए कहा है कि जिस प्रकार अग्नि समुदाय को शीघ्र ही नष्ट कर देती है उसी प्रकार महावेग युक्त रक्तपित्त शरीर को शीघ्र ही **नष्ट करने** वाले रक्तपित्त रोग की शीघ्र चिकित्सा करनी चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निरुक्ति -

" संयोगाद् दूषणातत्तु सामान्याद्वन्धवर्णयोः। रक्तस्य पित्तमाख्यातं रक्तपितं मनीषिभिः ॥ "

आचार्य चरक अनुसार रक्त और पित्त इन दोनों का संयोग होने से , पित्त द्वारा रक्त को दूषित करने से , रक्त और पित्त दोनों की गन्ध और वर्ण में तुल्यता होने से विद्वान लोग पित्त से दूषित रक्त की इस अवस्था को रक्तपित्त कहते हैं।

निदान -

" धर्मव्यायामशोकाध्वव्यवायरतिसेवितैः । तीक्ष्णोष्णक्षारलवणैरम्लैः कटुभिरेव च ॥ "

आतप , व्यायाम , शोक , अत्यधिक अध्वगमन , व्यायाम , मैथुन सेवन , तीक्ष्ण, ऊष्ण , क्षार , लवण , अम्ल , चटपटे पदार्थों का सेवन करना इत्यादि ।

संप्राप्ति -

" तैहेतुभिः समुत्विलष्टं पित्तं रक्तं प्रपद्यते।तद्योनित्वात् प्रपन्नं च वर्धत तत् प्रदूषयत् ॥

तस्योष्मणा द्रवो धातुर्धातोर्धातोः प्रसिच्यते । स्विद्यतस्तेन संवृद्धि भूयस्तदधिगच्छति ॥ "

पूर्व में कहे गये उष्ण , तीक्ष्ण , अम्ल आदि कारणों के सेवन से दूषित पित्त रक्तधातु में मिल जाता है , समानयोनि होने से (पित्त के रक्त से ही उत्पन्न होने से) पित्त जब रक्त में जाता है तब वह रक्त को दूषित करता है और बढ़ जाता है । इस प्रकार रक्त की उष्णता पित्त के संसर्ग से बढ़ जाती है और ऊष्मा के प्रभाव से मांस आदि धातुओं से द्रवरूप रक्तधातु क्षरित होने लगता है तथा जिससे रक्तवाहिनियों में रक्त की वृद्धि हो जाती है, जिसे रक्तपित्त कहा जाता है ।

संप्राप्ति घटक -

पित्तवर्धक + रक्त प्रकोपक निदान सेवन

⇩

प्रकुपित पित्त द्वारा रक्त की दुष्टि

⇩

पित्त एवं रक्त का संसर्ग

⇩

रक्त को प्राप्त कर पित्त अधिक रुप से बढ़ जाता है तथा रक्त को भी प्रदूषित कर देता है

⇩

पित्तोष्मा से मांसादि धातुओं से द्रवांश का स्रवण

⇩

रक्तवाहिनियों में रक्तवृद्धि

⇩

रक्तपित्त

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष** - पित्त
- **दूष्य** - रक्त
- **अधिष्ठान** - यकृत् प्लीहा
- **अग्नि** - मंद
- **स्रोतस** - रक्तवह
- **स्रोतोदुष्टि** - विमार्गगमन
- **स्वभाव** - आशुकारी
- **साध्यतासाध्यता** - कृच्छसाध्य (ऊध्वर्ग - साध्य , अधोग- याप्य)

प्रत्यात्म लक्षण - शरीर के ऊर्ध्व तथा अध: मार्गों से रक्त स्राव।

पूर्वरूप -

" सदनं शीतकामित्वं कण्ठधूमायनं वमि: । लोहगन्धिश्च नि:श्वासो भवत्यस्मिन् भविष्यति ।। "

अंगसाद ,शीतल पदार्थों के सेवन की इच्छा, कण्ठ से धुंआ निकलने की सी प्रतीति , वमन, श्वास मेंरक्त या लोहे जैसी गन्ध आने लगती है।

Ayurvedic Formulation

दोषानुसार लक्षण -

1. वातिक रक्तपित्त -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्रवित रक्त- श्याव वर्ण युक्त रक्त वर्ण का , झागदार , पतला तथा रुक्ष होने पर उसे वातिक रक्तपित्त समझना चाहिए।
(Discharged blood is blackish in color , foamed , thin and dry in nature)

2. पैत्तिक रक्तपित्त -

- स्रवित रक्त- कषायाभं कृष्ण वर्ण का (Blackish discolored blood) ,
- गोमूत्र के समान (Resembling like gomutra) ,
- मेचक अनेक रंग मिश्रित (Mixed with various colors) ,
- गृहधूम या अञ्जन के समान होता है (Color of discharge blood resembles like kohl)

3. कफज रक्तपित्त -

स्रवित रक्त- गाढ़ा पाण्डु वर्ण का स्निग्ध, पिच्छिल (Discharged blood is thick and slimy , whitish in color)

NOTE - आन्तिकी गति - जब रक्तपित्त शरीर के सभी छिद्रों , रोमकूपों से निकलने लगता है तो उस गिनी न जा सकने वाली गति को रक्तपित्त की आन्तिकी गति अर्थात् मृत्यु करने वाली गति कहते हैं।

मार्गानुसार लक्षण -

" ऊर्ध्वगं कफसंसृष्टमधोग पवनानुगम् । द्विमार्ग कफवाताभ्यामुभाभ्यामनुबध्यते ।। "

- **ऊर्ध्वग रक्तपित्त** - कफ दोष संसृष्ट , अतः कफज रक्तपित्त जन्यस्राव लक्षण युक्त ऊर्ध्वग मार्ग नासा , अक्षि , कर्ण , मुख (सप्त छिद्र) द्वारा प्रवृत्त।
- **अधोग रक्तपित्त** - बात दोष संसृष्ट , अतः वातिक रक्तपित्त सम स्राव लक्षण युक्त अधोग मार्ग मेद्र , योनिगुद से प्रवृत्त
- **उभयमार्गी / तिर्यग** - वात एवं कफ उभय संसृष्ट ऊर्ध्वग तथा अधोग दोनों मार्गों से प्रवृत्त।

उपद्रव -

" उपद्रवास्तु खलु दौर्बल्यारोचकाविपाकश्वासकासज्वरातीसार शोफशोषपाण्डुरोगा : स्वरभेदश्चा । "

आचार्य चरकानुसार दौर्बल्य , अरुचि , अविपाक , श्वास , कास , ज्वर , अतिसार , शोफ , शोष , पाण्डुरोग , स्वरभेद उपद्रव रक्तपित्त में वर्णित है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

साध्यतासाध्यता - ऊर्ध्वग - साध्य , अधोग - याप्य एवं उभयमार्ग गत असाध्य कहा गया है।

परिणामशूल एवं अन्नद्रवशूल

संदर्भ ग्रंथ-

- माधव निदान , पूर्वार्ध , अध्याय **26** **" शूलपरिणामशूलान्नद्रवशूलनिदानं "**
- भावप्रकाश , माध्यमखंड अध्याय **30** **" शूलाधिकार "**

व्याधि परिचय -

संहिता ग्रन्थों में परिणाम शूल तथा अन्नद्रव शूल का वर्णन नहीं मिलता , सर्वप्रथम माधबकर ने निदान में शूलरोगाधिकार के अन्तर्गत परिणामशूल तथा अन्नद्रव शूल का वर्णन किया। परिणामशूल अर्थात् भोजन के ग्रहण करने के बाद उसके पाचन काल में होने वाला तीव्र शूल एवं अन्नद्रव शूल अर्थात् अन्नग्रहण करने पर होने वाला शूल। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में **Peptic ulcers** का सामञ्जस्य उपरोक्त अवस्था से किया जाता है।

परिणामशूल	**अन्नद्रवशूल**
1) परिभाषा -	**1) परिभाषा -**
" भुक्ते जीर्यति यच्छूलं तदेव परिणामजम् ।। " भोजन के जीर्ण होने पर होने वाला शूल परिणामशूल कहलाता है	**" जीर्णे जीर्यत्यजीर्णे वा यच्छूलमुपजायते।** **पथ्यापथ्यप्रयोगेण भोजनाभोजनेन च।** **न शमं याति नियमात्सोऽन्नद्रव उदाहतः ।। "** जो शूल भोजन के जीर्ण होने पर जीर्ण होने के समय तथा जीर्ण होने के पूर्व अर्थात् किसी भी काल में होता है तथा पथ्य एवं अपथ्य के प्रयोग से एवं भोजन करने अथवा न करने पर भी नियमपूर्वक शान्त नहीं होता उसे अनन्य शूल करते हैं।
2) भोजन करने पर शांत हो जाता है	2) वमन द्वारा पित्त निकलने पर शूल शांत हो जाता है।
3) **दोष** - वात प्रधान त्रिदोष	3) **दोष** - पित्त प्रधान त्रिदोष

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4) **अधिष्ठान** - ग्रहणी

5) निदान एवं सम्प्राप्ति -

" स्वैर्निदानः प्रकुपितो वायुः संनिहितास्तदा।
कफपित्ते समावृत्य शूलभकारी भवेद्बली ।।
भुक्ते जीर्यति यच्छूलं तदेव परिणामजम्। "

स्वनिदान (यथा रुक्ष, शीत, लघु, असाम्य विरुद्धाहार का सेवन, वेगधारण, रात्रिजागरण, अतिव्यायाम, अतिव्यवाय, अति अध्यगमन, चिन्ता भय क्रोध इत्यादि मानसिक हेतुओं से) का सेवन करने से प्रकुपित वायु स्थान विशेष में स्थित होने से भोजन के परिणमन काल में प्रबल होकर कफ एवं पित्त को आवृत्त कर तीव्र शूल उत्पन्न करता है। यह शूल भोजन के परिणमन काल में होने से परिणाम शूल कहलाता है।

सम्प्राप्ति चक्र -

वात के स्वनिदानों का सेवन
⇩
अग्निदुष्टि
⇩
अजीर्ण
⇩
विदग्ध अम्लीय पित्त की उत्पति
⇩
ग्रहणी की श्लेष्मिक कला में शोथ / व्रण
⇩
परिणामशूल

4) **अधिष्ठान** - आमाशय

5) निदान एवं सम्प्राप्ति -

" त्रिदोषविकृतिविशेषमन्नद्रवाख्यं शूलमाह। "

त्रिदोष प्रकोषक निदानों के सेवन से अग्निमांस हो. जाता है जिससे अजीर्ण की उत्पत्ति होती है, अजीर्ण द्वारा पित्त विदग्ध हो अम्ल भाव को प्राप्त कर आमाशथिक श्लेष्मिक कला में अप उत्पन्न करता है, परिणामस्वरूप अन्नद्रव शूल की उत्पत्ति होती है।

सम्प्राप्ति चक्र -

त्रिदोष प्रकोप निदान सेवन
⇩
अग्निमांद
⇩
पित्त का विदग्ध हो अम्लीय भाव होना
⇩
आमाशायिक श्लैष्मिक कला में शोथ व व्रण की उत्पति
⇩
अन्नद्रवशूल की उत्पत्ति

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** वात प्रधान त्रिदोष
- **दूष्य -** आहाररस
- **स्रोतस -** अन्नवह, रसवह
- **स्रोतो दुष्टि -** संग
- **अधिष्ठान -** ग्रहणी
- **स्वभाव -** आशुकारी
- **अग्नि -** मन्द
- **साध्यसाध्यता -** साध्य, जीर्ण - असाध्य

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** पित्त प्रधान त्रिदोष
- **दूष्य -** अन्नरस, रस
- **अधिष्ठान -** आमाशय
- **स्रोतस -** अन्नवह
- **स्रोतो दुष्टि -** संग
- **अग्नि -** मन्द
- **स्वभाव -** आशुकारी
- **साध्यसाध्यता -** नवीन अवस्था -साध्य, जीर्ण अवस्था - याप्य, कृच्छसाध्य

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कुष्ठ निदान

संदर्भ ग्रंथ-

- चरक संहिता , निदान स्थान , अध्याय **5** **" कुष्ठ निदान "**
- चरक संहिता , चिकित्सा स्थान , अध्याय **7** **" कुष्ठ चिकित्साध्याय "**

व्याधि परिचय -

आयुर्वेद शास्त्र मे कुष्ठ व्याधि से त्वचा मे होने वाले समस्त विकारों का निर्देश किया गया है ततः इसे महागद के अंतर्गत स्वीकार किया गया है ।आचार्य सुश्रुत ने कुष्ठ की गणना संक्रामत रोगों के अंतर्गत करते हुए इसे त्वगामय कहा है ।

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के अनुसार वर्णन **Leprosy** को कुष्ठ के अंतर्गत स्वीकार किया गया है ।

निरुक्ति -

" कुष्णाति सर्व वपुः इति कुष्ठम् । "

जो शरीर की त्वचा को विकृत करे , वह कुष्ठ है

निदान -

" विरोधीन्यन्नपानानि द्रवस्निग्धगुरुणि च । भजतामागतां छर्दि वेगाश्चान्यान् प्रतिघ्नाताम् ॥

व्यायाममतिसन्तापमतिभुक्त्वा निषेविणाम् । शीतोष्णलङ्घनाहारान् क्रमं मुक्त्वा निषेविणाम् ॥ "

1) विरुद्ध अन्न पान का सेवन (यथा दुग्ध के साथ मत्स्य का सेवन)
2) द्रव , स्निग्ध , गुरु आहार पदार्थों का सेवन ,
3) वमन के प्रवृत्त वेग को रोकना ,
4) मल मूत्र आदि के उपस्थित वेगो को रोकना ,
5) अधिक भोजन करने के बाद व्यायाम , सन्ताप सेवन करना ,
6) शीतल - ऊष्ण , लघन - भोजन के क्रम का विधि पूर्वक सेवन न करना ,

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सम्प्राप्ति -

" वातादयस्त्रयो दुष्टास्त्वग्रक्तं मांसमम्बु च। दूषयन्ति स कुष्ठानां सप्तको द्रव्यसंग्रहः ।। "

उपर्युक्त वर्णित निदान सेवन से प्रकुपित हुए त्रिदोष , त्वक् , रक्त , मांस तथा अम्बु (लसीका) को दूषित कर कुष्ठ उत्पन्न करते हैं। अतः कुष्ठ उत्पन्न होने में ये सात द्रव्य (वात , पित्त , कफ , त्वक् , रक्त , मांस , लसीका) कारण होते हैं।

सम्प्राप्ति चक्र -

विरुद्धाहार इत्यादि निदान सेवन करने से त्रिदोष कुपित होते है

⇩

तिर्यक गत शिराओं में गमन करते हुए शिराओं को दूषित कर देते है

⇩

शरीर के बाह्य मार्ग में अधिष्ठित होकर (त्वक् , रक्त , मांस , लसिका का दूषित व शिथिल होना

⇩

विक्षिप्त दोष जिस स्थान पर अवस्थित होता है वहाँ की त्वक् विकृत कर मण्डल उत्पन्न करता है

⇩

त्वक में मण्डलोत्पत्ति तथा वैवर्ण्यता को कुष्ठ कहते है

संप्राप्ति घटक -

- **दोष** - त्रिदोष
- **दुष्य** - त्वक , रक्त , मांस , अम्बु (लसीका)
- **स्त्रोतस** - रक्तवह स्त्रोतस
- **स्त्रोतोदुष्टि** - संग
- **अधिष्ठान** - त्वक , बाह्य रोगमार्ग
- **स्वभाव** - चिरकारी
- **साध्यतासाध्यता** -
  - त्वक् , रक्त , मांस गत - साध्य ,
  - मेदगत - याप्य ,
  - अस्थि , मज्जा , शुक्रगत- असाध्य ,
  - काकणक (त्रिदोषज) कुष्ठ - असाध्य

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पूर्वरूप -

" स्पर्शाज्ञत्वमतिस्वेदो न वा वैवर्ण्यमुन्नतिः ।कोठानां लोमहर्षश्च कण्डूस्तोदः श्रमः क्लमः ।।

व्रणानामधिकं शूलं शीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थितिः । दाहः सुप्ताङ्गता चेति कुष्ठलक्षणमग्रजम् ।। "

स्पर्श ज्ञान न होना ,स्वेद की अत्यधिक प्रवृत्ति अथवा स्वेद न होना ,विवर्णता , उभार , कोठ (मण्डल) होना , रोमहर्ष, कण्डू , तोद, थोड़े परिश्रम से थकावट , बिना परिश्रम के थकावट ,व्रण में अधिक पीड़ा ,व्रण का शीघ्र उत्पन्न होना तथा देर तक बने रहना , सुप्ताङ्गता

सामान्य लक्षण - पूर्वरूप ही पूर्ण व्यक्त हो कुष्ठ के सामान्य लक्षण कहलाते है।

कुष्ठ भेद - **" स सप्तविधोऽष्टादशविधोऽपरिसंख्येयविधो वा भवन्ति। "**

आचार्य चरक अनुसार कुष्ठ के भेद -

- ✓ सप्त विध - महाकुष्ठ (7)
- ✓ अष्टादश विध - 7 महाकुष्ठ + 11 क्षुद्रकुष्ठ
- ✓ अपरिसख्येय

महा कुष्ठ (7)	दोष	समान वर्ण	लक्षण
कपाल	वातज	कृष्णारूण कपालाभं	रूक्ष, तनु, विषम, तोदबहुल
औदुम्बर	पित्तज	उदुम्बर फलाभासं	दाहकण्डूरूजारागपरीतं, लोमपिंजरम्
मण्डल	कफज	मण्डल वत	श्वेतं रक्तं स्थिर स्त्यानं स्निग्धमुत्सन्नमण्डलम्
ऋष्यजिह्व	वातपित्तज	ऋष्यजिहवा संस्थानं	कर्कश, रक्तपर्यन्तमन्तः श्यावं सवेदनम्
सिध्म	वातकफज	अलाबुपुष्प वर्ण	श्वेतं ताम्रं तनु च यद् रजो घृष्टं विमुंचति
पुण्डरीक	पित्तकफज	पुण्डरीकदलोपमम्	श्वेतं रक्तंपर्यन्तं पुण्डरीकदलोपमम, सदाह
काकणक	त्रिदोषज	काकणन्तिका वर्ण	काकणन्तिका वर्णम्, अपाकं तीव्रवेदनम्

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कपाल - कृष्ण , अरुण (लाल) वर्ण का , कपाल (मिट्टी के नये खपड़े) के समान , रुक्ष , कठिन , पतला तथा विषम रूप से फैलने वाला हो, सुई चुभाने सी वेदना अधिक हो।

उदुम्बर - दाह , कण्डु , पीड़ा , राग (लालिमा) से युक्त, अधिष्ठित स्थान के लोम कपिल वर्ण के हो, प्रभावित स्थान का वर्णन उदुम्बर फल के समान होता है।

मण्डल - श्वेत , रक्त वर्ण का स्थिर , स्त्यान (घना), स्निग्ध , मण्डल उभार युक्त हो, परस्पर एक मण्डल दूसरे मण्डल से मिले हुए होते हैं।

ऋष्यजिह - कर्कश , रक्तपर्यन्त (किनारों पर रक्त वर्ण का) , अन्तः श्याव (अन्तः भाग श्याव वर्ण का) , वेदना युक्त , ऋष्य (हरिण विशेष) की जिह्वा के समान आकृति वाले होते है।

पुण्डरीक - श्वेत वर्ण , रक्त वर्ण के किनारों युक्त , पुण्डरीक (रक्त कमल) के समान ,उत्सेध युक्त , दाह युक्त कुष्ठ को पुण्डरीक कुष्ठ कहते हैं।

सिध्म - श्वेत- ताम्र वर्ण के तनु (पतला), रगड़ने से रज (धूल) के समान चूर्ण निकलता है, अलाबू (लौकी) के पुष्प के समान।

काकणक - काकणन्तिका (गुजा फल) के समान वर्ण का (मध्य में काला तथा किनारों पर रक्त वर्ण का), पाक रहित , तीव्र पीड़ा युक्त।

Ayurvedic Formulation

क्षुद्रकुष्ठ - (11)	Trick	दोष
एककुष्ठ	एक	वातकफज
चर्मकुष्ठ	चर्मकीट ने	वातकफज
किटिभ	काटा	वातकफज
अलसक	अ	वातकफज
विपादिका	ब	वातकफज
दद्रु	दद्रु की	पित्तकफज
चर्मदल	चर्म	पित्तकफज
पामा	पर	पित्तकफज
विस्फोट	विस्फोट हुआ	पित्तकफज
शतारु	100 वार	पित्तकफज
विचर्चिका	चर्चा करते रहे	कफज

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

गुल्म

संदर्भ ग्रंथ-

- चरक संहिता , निदान स्थान , अध्याय 3 **" गुल्म निदान अध्याय "**
- चरक संहिता , चिकित्सा स्थान , अध्याय 5 **" गुल्म चिकित्साध्याय "**

व्याधि परिचय -

गुल्म का अर्थ संघात / गुल्म / गोलाकार पदार्थ से लिया गया है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मे इसका साम्य Abdominal Tumor से किया गया है।

निरूक्ति -

" स पिण्डितत्वाद् गुल्म इत्यभिधीयते। "

पिण्ड या संघात स्वरूप बन जाना गुल्म कहा गया है।

परिभाषा -

" हृद्वस्त्योरन्तरे ग्रंथिः संञ्चारी यदि वाऽचलः। चयापचयवान् वृतः स गुल्म इति कीर्तितः ।। "

आचार्य सुश्रुतानुसार हृदय और वस्ति के मध्य चल अथवा अचल, कभी घटने तथा कभी बढ़ने वाली गोल ग्रन्थि को गुल्म कहते हैं।

निदान -

" विट्श्लेष्मपित्तातिपरिस्त्रवाद् वा तैरेव वृद्ध परिपीडनाद् वा।

वेगैरुदीर्णैर्विहतैरधो वा बाह्याभिघातैरतिपीडनैर्वा ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मल, कफ, पित्त के अधिक मात्रा में निकल जाने या शरीर में अधिक बढ़ जाने से मल, मूत्र के प्रवृत वेगों का धारण करने से बाह्याघात या पीड़न होने से रुक्षान्नपान का अधिक सेवन करने से शोक से,

मिथ्या प्रतिकर्म - वमन विरेचनादि चिकित्सा क्रम का विपरीत क्रम होने से , शारीरिक चेष्टाओं का विषम रूप से या अतिमात्रा में सेवन करने से कोष्ठ में वायु कुपित हो जाती है।

स्थान - **" गुल्मस्य पञ्चविधं स्थानं पार्श्वहन्नाभिवस्तयः । "**

बस्ति , नाभिप्रदेश , हृदय एवं दोनों पार्श्व हुलम के 5 स्थान काहे गए है।

संप्राप्ति -

" कफं च पित्तं च स दृष्टवायुरुद्धूय मार्गान् विनिबद्धय ताभ्याम् ।

हन्नाभिपार्श्वोदरवस्तिशूलं करोत्यधो याति न बद्धमार्गः ।।

पक्वाशये पित्तफाशये वा स्थितः स्वतन्त्रः परसंश्रयो वा ।

स्पर्शोपलभ्यः परिपिण्डितत्वाद् गुल्मो यथादोषमुपैति नाम ।। "

निदान सेवन

⇩

वायु कफ और पित्त को उद्वेलित कर उन्हें अपने स्थान से चलायमान कर,

⇩

कफ - पित्त के द्वारा अपने मार्गों को बन्द होना

⇩

वायु अधः प्रदेश मे नहीं जा पाती

⇩

हृदय में, नाभिप्रदेश में पार्श्वप्रदेश में, उदर और वस्तिप्रदेश में पीडा उत्पन्न करती हैं

⇩

वायु पक्वाशय में पित्ताशय अथवा कफाशय (आमाशय) में या स्वतन्त्र या परतंत्र रूप से आश्रित होते हुए

⇩

पिण्ड के रूप में गोलाकार हो जाने से स्पर्श के द्वारा जानी जाती है

⇩

गुल्माकार होने से वह गुल्म कहलाती है

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

संप्राप्ति घटक -

- **दोष -** वात प्रधान त्रिदोष
- **दूष्य -** निराश्रय
- **अधिष्ठान -** पार्श्व, हृदय नाभि, वस्ति

- **स्रोतोदुष्टि -** संग, विमार्गगमन
- **स्रोतस -** अन्नवह महास्रोतस
- **अग्नि -** मन्द
- **साध्यतासाध्यता -** साध्य
  - साध्य - एकदोषज गुल्म तथा पुराण रक्त गुल्म
  - असाध्य - त्रिदोषज गुल्म तथा उपद्रव युक्त गुल्म

पूर्वरुप -

" उद्गारबाहुल्यपुरीषबन्धतृप्त्यक्षमत्वान्त्रकूजनानि ।

आटोप आध्मानमपक्तिशक्तिरासन्नगुल्मस्य वदन्ति चिन्हम् ।। "

उद्गार बाहुल्य कोष्ठबद्धता, तृप्ति, अरुचि, अक्षमत्व (शक्ति हास), आन्त्रकूजन आटोप, आध्मान, अविपाक, पाचन शक्ति का नष्ट होना ।

सामान्य लक्षण -

" अरुचिः कृच्छ्रविण्मूत्रवाततोऽन्त्रविकूजनम् । आनाहश्चोर्ध्ववातत्वं सर्वगुल्मेषु लक्षयेत् ।। "

अरुचि, मल, मूत्र, अपान वायु का कठिनता पूर्वक त्याग, आन्त्रविकूजन आनाह, ऊर्ध्ववात

Ayurvedic Formulation

भेदानुसार लक्षण -

1. वातिक गुल्म -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **स्थानसंस्थानरुजा विकल्पं -** स्थान (भिन्न-भिन्न स्थान), संस्थान (आकृति), रुजा (वेदना) अनिश्चित (Irregular location, shape & pain)
- मल एवं वातावरोध (Stasis of feces and flatus)
- शरीर श्याव, अरुण वर्ण का (Blackish or reddish discoloration)

2. पैत्तिक गुल्म -

- **स्पर्शासह्यता -** गुल्म में व्रण के समान स्पर्शासता (Tenderness)

- स्वेद, विदाह (Perspiration and burning sensations)
- भोजन परिपाक काल में तीव्र शूल (Severe pain during digestion of food)

3. कफज गुल्म -

- शरीर गीला सा, शीतज्वर, अंगशैथिल्य (Feeling wet, cold, lassitude),
- हृल्लास (Nausea), कास (Cough), अरुचि (Anorexia), शरीर में भारीपन (Heaviness),
- शीत का अनुभव (Feeling cold), पीड़ा कम (Mild pain)

4. सन्निपातज गुल्म -

- तीव्र वेदना, अधिक दाह (Severe pain and burning sensations),
- अश्मवत् (पत्थर के समान) कठिन, उन्नत (Stone like hard and elevated),
- अत्यंत दारुण (Difficult to treat)

5. रक्तज: गुल्म -

- जिस गुल्म में गर्भ के समान सभी लक्षण हो (Features like fetus),
- पिण्ड के रुप में हो, देर से स्पन्दन करता हो (Feeling like tumor, feels pulsation),
- हस्तपादादि अंगों की फरकाहट न होती हो (Absence of twitching)
- **मासे व्यतीते दशमे चिकित्स्य -** इसकी चिकित्सा 10 माहोपरान्त करनी चाहिए (Treatment shauld be done after 10 months)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

नवीन प्रसवा होने पर गर्भस्राव / पात होने पर आर्तव प्रवृत्ति काल में मिथ्या आहार विहार सेवन से

⇩

वात प्रकोप

⇩

रक्त का मार्गावरोध

⇩

पित्तज गुल्म के लक्षणों से युक्त रक्तज गुल्म

गुल्म साध्यासाध्यता -

साध्य - नवीन अवस्था में साध्य।

असाध्य -

- जो गुल्म क्रमशः संचित हो (बढ़ता हो) एवं सम्पूर्ण उदर प्रदेश में फैल गया हो,
- जिसने मूल पकड़ लिया हो (गहरा हो),
- रोगी दौर्बल्य, हृल्लास, कास, वमन, अरति (व्याकुलता)

गुल्म एवं विद्रधि में अन्तर

गुल्म	विद्रधि
गुल्म का मूल नहीं होता	विद्रधि के रस रक्तादि मूल है
गुल्म का आश्रय नहीं होता, दोष स्वयं गुल्म बनते है	विद्रधि का आश्रय मांस और रक्त है
गुल्म का पाक नही होता	विद्रधि का पाक होता है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

व्याधिक्षमत्व

शरीर के रोग - प्रति रोधक क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में **Immunity** कहते है।

व्याधिक्षमत्व शब्द का वर्णन चरक संहिता **सूत्रस्थान 28 वें अध्याय " विविधाशितपीतीय "** के अन्तर्गत मिलता है।

अहितकर आहार का सेवन करने वाले पुरुषों में दोष सदैव रोग उत्पन्न करने में सक्षम नहीं होते हैं क्योंकि सभी अपथ्य आहार तुल्य दोषों वाले नहीं होते है। , सभी दोष भी समान बल वाले नहीं है , तथा सभी शरीर भी समान रूप से व्याधिक्षमत्व में समर्थ नहीं है।

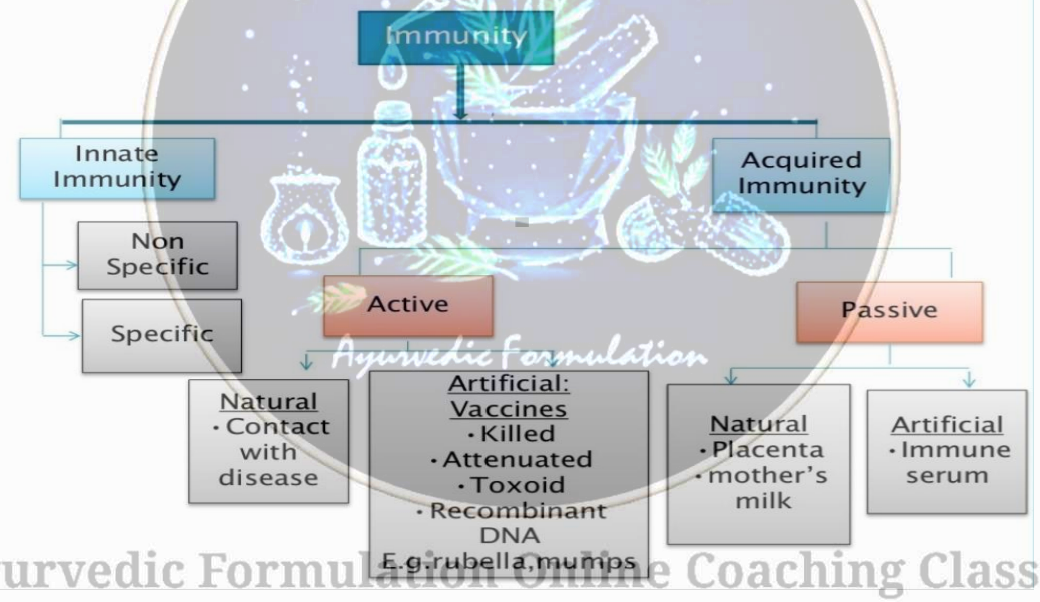

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले कारक -

" व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्युत्पाद प्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। "

आचार्य चक्रपाणि ने व्याधिक्षमत्व की उपरोक्त परिभाषा दी इसी परिभाषा के आधार पर व्याक्षिक्षमत्व के दो भेद दिये हैं -

1) व्याधिबलविरोधी ((Aquired Immunity or Artificial Immunity) - इस प्रकार के व्याधिक्षमत्व को युक्तिकृत बल भी कहा जा सकता है। यह व्याधिक्षमता पौष्टिक आहार, व्यायामाद चेष्टाओं द्वारा उत्पन्न की जा सकती हैं साथ ही रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करने वाली औषधियों के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

2) व्याधिउत्पाद प्रतिबन्धक (Natural or Congenital Immunity) - यह व्याधि को उत्पन्न नहीं होने देती हैं, इसे सहज बल कहते हैं। यह स्वाभाविक रूप से या जन्मजात मिलती है।

अहितकर आहार का सेवन करने से दोष दूषित होकर कभी-कभी अनेक व्याधियाँ उत्पन्न करते हैं तथा कभी-कभी किसी प्रकार की व्याधि उत्पन्न नहीं करते है। इस प्रकार व्याधि का उत्पन्न होना व उत्पन्न न होना शरीर के रोगप्रतिरोधक क्षमता पर निर्भर करता है।

अहितकर आहार विहार की दोषकारकता निम्न घटकों पर निर्भर -

1) **देशानुसार अहितकर आहार का प्रभाव - ब्रीहिधान्य पित्तवर्धक व गुरु** आहार है परन्तु आनूप देश में सेवन करने से हानिकर होता है जबकि यदि ब्रीहि धान्य का सेवन जाङ्गल या धन्व देश में किया जायेगा तो अल्प अहितकर होगा।

2) **कालानुसार अहितकर आहार का प्रभाव -** ब्रीहि धान्य का प्रयोग यदि शरदऋतु में किया जायगा तो अधिक अहितकारक होगा जबकि हेमन्त ऋतु में सेवन करने से अल्प अहितकर होता है।

3) **संयोग के अनुसार अहितकर आहार का प्रभाव -** यदि ब्रीहि का प्रयोग दधि व फणित के साथ किया जायेगा तो वह अधिक अहितकारी है जबकि ब्रीहि का प्रयोग मधु के साथ किया जायेगा तो अल्प अहितकारी होता है।

4) **वीर्य अनुसार अहितकर आहार का प्रभाव -** उष्णवीर्य द्रव्यों के साथ ब्रीहि धान्य का प्रयोग करने पर वह अधिक अहितकारी होगा जबकि शीतवीर्य वाले द्रव्यों के साथ सेवन करने से अल्प अहितकारी प्रभाव दिखाई देंगे।

5) **प्रमाण के अनुसार अहितकर आहार का प्रभाव -** अधिक प्रमाण में ब्रीहिं धान्य का प्रयोग किया जायेगा तो वह अधिक अहितकर होगा जबकि कम मात्रा में प्रयोग करने पर अल्प अहितकर होगा।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

व्याधि को सहन करने की क्षमता भी कुछ घटकों पर निर्भर -

- **दोषों के आधार पर -** दो या अधिक दोषों के संयोग से उत्पन्न व्याधि से रोगी को अधिक कष्ट होगा।
- **विरुद्धोपक्रम -** विरुद्धोपक्रमी होने से रोगी में कष्ट उत्पन्न होता है।
- **चिरस्थित -** दीर्घकाल तक रहने वाली व्याधि के लिये प्रतिरोधक क्षमता शरीर में नहीं होगी।
- **प्राणायतन -** दशप्राणायतन जैसे - **" शखौममंत्रयं कण्ठौ रक्तशुक्र ओजसी गुदम् । "** इनमे अधिष्ठित व्याधि रोगी के लिये अधिक कष्टकारी होगी।
- **मर्मोपघाती -** प्राणायतन के अतिरिक्त अन्यममों पर आघात से उत्पन्न व्याधि रोगी में अधिक कष्ट उत्पन्न करेगी।
- **कष्टतम -** वह व्याधि जिससे अधिक कष्ट उत्पन्न हो रहा हो तथा असाध्य रोग से पीड़ित रोगी में व्याधि सहन क्षमता नहीं होती है।
- **क्षिप्रकारी -** क्षिप्रकारी अर्थात् जो विकार निदानों के सेवन से शीघ्र उत्पन्न होता है। इस प्रकार के शीघ्रतम व्याधियों के लिये रोगी में रोगप्रतिरोधक क्षमता नहीं होती है।

व्याधिक्षमत्व का बढाने वाले घटक -

व्याधिक्षमत्व का बल बढाने हेतु बलवृद्धिकर भावों का सेवन करना चाहिये।

" बलवृद्धिकरास्त्विमे भावा काले च भवन्ति तद्यथा - बलवत्पुरुषे देश जन्म बलवत्पुरुषे सुखश्च कालयोग: बीजक्षेत्र - गुणसंपच्च, आहारसंपद्य, शरीरसंपद्य, सात्म्यसंपद्य, सत्वसंपद्य, स्वभावससिद्धश्च, यौवनं च, कर्म च, संहर्षश्चेति । "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) बलवान् पुरुषों के देश जैसे- सिन्ध अथवा पंजाब में जन्म लेने वाले पुरुषों में रोग प्रतिरोधकक्षमता अधिक होगी।
2) बलवान् पुरुषों के कुल में जन्म लेने से शरीर सौष्ठवता बीज से ही प्राप्त हो जाती हैं।
3) बलवान काल में जन्म होने से भी बल अधिक अर्जित होगा।
4) सुखकारक काल योग सदैव व्यक्ति सुखकारक वातावरण में ही जीवन यापन करेगा तो निश्चित रूप से उसे आरोग्य की प्राप्ति के साथ-साथ रोगप्रतिरोधक क्षमता भी प्रबल होगी।
5) बीजों के अर्थात माता के शोणित व पिता के शुक्र के सम्पद होने से निश्चित रूप से उत्पन्न होने वाली सन्तान बलवान होगी।
6) सदैव हितकर आहार का सेवन करने से शरीर की वृद्धि होगी।
7) शरीर उत्तम संगठित होगा तो किसी निज अथवा आगन्तुज विकार का आक्रमण शरीर में नहीं हो पायेगा।
8) सर्वरससात्म्य व्यक्ति के लिये किसी भी व्याधि को सहन करने में कोई कठिनाई नहीं आती है।

9) मन का उत्तम गुणों से युक्त होने के कारण शारीरिक व्याधियाँ शीघ्रता से उत्पन्न नहीं होगी।

10) स्वभाविक रूप से भी अनेक व्याधियों के प्रति रोगप्रतिरोधक क्षमता हमारे शरीर में विद्यमान रहती हैं।

11) युवावस्था में बल सर्वाधिक होने से रोगप्रतिरोधक क्षमता अधिक होना स्वभाविक होता है।

12) व्यायामादि कर्मों के द्वारा शरीर को निरन्तर बल की प्राप्ति होती रहती है।

13) मन सदा प्रसन्न रहे तथा शोकाग्रस्त न हो तो व्याधियाँ कभी उत्पन्न नहीं हो सकती है।

श्रेष्ठ व्याधिक्षमत्व शरीर के लक्षण -

आयुर्वेद का प्रथम प्रयोजन स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा करना है , जो कि केवल व्याधि के प्रतिरोधक क्षमता पर ही निर्भर करती है।

" सममांस प्रमाणस्तु सम संहननो नरः। दृढेन्द्रियो विकाराणां च बलेनाभिभूयते।

क्षुत्पिपासातप सहः शीतव्यायामसंसह। समपक्ता समजरः सममांस चयोमतः ।। "

1) व्यक्ति जिसके शरीर में सम् प्रमाण में मांस रहने पर।

2) शरीर का संगठन समस्थित में हो , शरीर न कृश हो न स्थूल हो।

3) **दृढेन्द्रिय-** जिसकी एकादश इन्द्रिया अपने अर्थ को सम्यक् रूप से ग्रहण करें।

4) **विकाराणां च बलेनाभिभूयते -** प्रशस्त गुणों से युक्त शरीर रोगों के बल से पराजित नहीं होता।

5) **क्षुत सह -** क्षुधा के वेग को सरलता से सहन करें।

6) **पिपासा सह -** जो पिपासा के वेग को सरलता से सहे।

7) **शीत व्यायाम संसह -** शीतकाल व अति व्यायाम को सहन कर सकता है।

8) **समपक्ता -** जाठराग्नि सम अवस्था में ही समजरण करती है अर्थात् जो भी भोजन किया जाय उसका पाचन नियत समय पर उचित रूप से होना चाहिये।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

ओज

" ओजः सर्वधातुसारो बलाधिष्ठानमिति । " (सु. सू . 13/14)

ओज शरीर की सातों धातुओं का सारभूत होता है ओज में ही बल का अधिष्ठान होता है।

" प्राकृतस्तु बलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते । " (च. स. 17/05)

शरीर में उपस्थित प्राकृत श्लेष्मा ही शरीर का बल व ओज कहलाता है अत : व्याधिक्षमत्व को जानने के लिए बलरूपी ओज का जानना आवश्यक है।

ओज की उत्पत्ति-

" प्रथमं जायते ओजः शरीरऽस्मिच्छरीरिणाम् । "

मनुष्य के शरीर में ओज की उत्पत्ति गर्भ में ही हो जाती है , तथा ओज की उत्पत्ति होने के पश्चात ही रसादि शुक्रान्त धातुओं की उत्पत्ति होती है।

" रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्पर तेजस्तत् खल्बोजस्तदेव बलमित्युच्यते । "

रस आदि से लेकर शुक्र पर्यन्त धातुओं के उत्कृष्टतम सार भाग को ओज कहते हैं। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार वही बल कहा जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

ओज के गुण -

" गुरु शीत : मृदु श्लक्ष्ण बहलं मधुरं स्थिरम् । प्रसन्नं पिच्छिलं स्निग्धमोजो दशगुणं स्मृतम् ।। "

ओज में निम्न दस गुण विद्यमान रहते है -

- गुरु
- शीत
- मृदु
- श्लक्ष्ण
- बहल
- मधुर
- स्थिर
- प्रसन्न
- पिच्छिल
- स्निग्ध

सुश्रुतसंहिता में ओज के गुणों का वर्णन इस प्रकार है

1) सौम्य ,
2) स्निग्ध ,
3) श्वेत ,
4) शीत (शीत वीय).
5) शरीर स्थैर्यकारक ,
6) प्रसरणशील ,
7) विविक्त (निर्मल आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त) ,
8) कोमल ,
9) पिच्छिल तथा
10) प्राणों का श्रेष्ठ आधार है

शरीर का प्रत्येक अवयव इस ओज से व्यापक रहता है तथा इसके अभाव में शरीर नष्ट हो जाता है।

ओज का प्रमाण -

" परापर भेदेन द्विविधं , तत्रयत् परमष्टबिन्दुकं तद्हदि तिष्ठति , यत्तु ततो बहु तत्परं शरीर प्रीणयति। "

आचार्य चक्रपाणि ने ओजों के भेदों का उल्लेख करते हुए उनका प्रमाण बताया है ,ओज के पर एवं अपर **दो भेद** होते हैं -

- पर ओज का प्रमाण **अष्ट बिन्दु** माना गया है। यह **हृदय में स्थित** रहता है।
- इससे भिन्न जो ओज होता है उसे अपर ओज कहते है। यह सारे शरीर में व्याप्त रहता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

ओज के कर्म -

" यत् सारमादौ शर्मस्य यत्तद् गर्भरसाद्रसः। संवर्तमानं हृदयं समाविशति यत् पुरा ।। "

ओज सार रूप में गभावस्था में बालक के हृदय में रहता है तथा शरीर का धारण पोषण करता है।

" तत्र बलेन स्थिरोपचितमांसता सर्वचेष्टास्व प्रतिघातः स्वरवर्ण प्रसादो बाह्यानामाभ्यन्तराणां च करणानामात्यकार्यप्रतिपत्तिर्भवति । "

1) ओज के रूप में विद्यमान बल से मांस धातु स्थिर और पुष्ट होती है
2) ओज के द्वारा ही सभी कार्यों को करने की सामर्थ्यता आती है
3) स्वर एवं वर्ण निर्मल होते है
4) बाह्य एवं आभ्यानतर इन्द्रियाँ अपने कार्य करने में उत्तम रूप से प्रवृत्त होती है

ओज का स्थान तथा वर्ण -

- **पर ओज - हृदय**
- **अपर ओज - सर्व शरीर**

" हृदि तिष्ठति यत्रशुद्ध रक्तमीपत्सपीतकम् । ओजः शरीरे संख्यातं , तन्नाशान्ना विनश्यति ।। "

कुछ लालिमा तथा पीलापन लिए हुए जो श्वेत पदार्थ उदय में रहता है उसे ओज कहते हैं । इस ओज के नाश से शरीर का भी विनाश हो जाता है ।

Ayurvedic Formulation

" सर्पिवर्ण मधुरसं लाजगन्धि प्रजायते ।। "

ओज घृत के वर्ण का , मधुर रसयुक्त तथा लाजा के समान गचजाल्या होता है ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

ओज वृद्धि लक्षण -

" ओजो वृद्धौ हि देहस्य तुष्टिपुष्टि बलोदयः । "

ओज की वृद्धि होने से शरीर की वृद्धि , बल वृद्धि होती है ।

ओज क्षय के निदान -

"अभिघातात् क्षयात् कोपाच्छोकाद्ध्यानाच्छुमात्क्षुधः। ओजः सङ्क्षीयते होभ्यो धातुग्रहणनिः स्मृतम।"

1) अभिघात
2) धातुक्षय
3) क्रोध करने से
4) शोक
5) ध्यान (चिन्तन करने से)
6) परिश्रम करने से
7) भूख के कारण

ओज के क्षय के लक्षण –

" विभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितेन्द्रियः। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैवौजसः क्षये ।। "

1) विभेति (Fear complex develops)
2) दुर्बल भिक्ष्णं (General weekness)
3) ध्यायति
4) व्यथितेन्द्रियः (Discomfort in sense organ)
5) दुश्छाया (Loss of complexion)
6) दुर्मना (Unstable mind)
7) रूक्ष (Rongfitness)
8) क्षय (Emaciation)

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

ओज की विकृतियाँ -

ओज की तीन प्रकार की विकृतियाँ है -

1) ओजोविस्त्रंस के लक्षण -

" सन्धि विश्लेषों गात्राणां सदनं दोषच्यवनं क्रियाऽसन्निरोधश्च विस्त्रंसे । "

1) संधि विश्लेष (Looseness of the Joints)
2) गात्र साद (Giddness)
3) दोषच्यत्वन (Dislocation of the Doshas)
4) क्रिया सनिरोध (Impairement in activine)

2) ओजोव्यापद के लक्षण-v

" स्तब्धगुरुगात्रता वात शोफो वर्ण भेदो ग्लानिस्तन्द्रा निद्रा च व्यापन्ने । "

1) स्तब्धगुरुगात्रता (Rigidity in whole bodiy)
2) गुरुगात्रता (Heaviyness in whole bodly)
3) वात शोफ (Swelling due to vata)
4) वर्ण भेद (Loss of Complexion)
5) ग्लानि (Depression)
6) तन्द्रा (Stupar)
7) निद्रा (Excess sleep)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) ओजक्षय के लक्षण -

" मूर्छा मांसक्षयो मोहः प्रलापो मरणमिति च क्षये । "

1) मूच्छा (Fainting)
2) मांसक्षय (Muscle wasting)
3) मोह (Confusion)
4) प्रलाप (Delirium)
5) मरण (Death)

व्याधि परिचय

व्याधि परिभाषा - **" विविधं दुःखमादधातीति व्याधिः । "**

जो विविध प्रकार के दुःखो को धारण करावे अथवा देह या मन में रुजा या व्यथा उत्पन्न करें।

" अस्मिन् शास्त्रे पञ्चमहाभूतशरीरिसमवायः पुरुष इत्युच्यते । तद् दुःख संयोगा व्याधय उच्यन्ते । "

पञ्चमहाभूत व आत्मा के संयोग से पुरुष बना है , यदि इन सभी में किसी भी कारण से विकार या दुःख का संयोग होना व्याधि कहलाता है।

पर्याय - **" तत्र व्याधिरामयो गद आतङ्कोयक्ष्मा ज्वरोविकारो रोग इत्यनर्थान्तरम् । "**

आमय , गद , आतंक , यक्ष्मा , विकार , ज्वर , रोग , पाप्मा , आबाध , दुःख

रोगों का वर्गीकरण

एक भेद से -

- **दुःख सामान्यात् -** सभी प्रकार की व्याधियों में दुःख सामान्य रुप से मिलता है।
- **रुक् सामान्यात् -** सभी प्रकार की व्याधियों में रुजा सामान्य रूप से मिलती हैं।

दो भेद से -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) **प्रभाव भेद से -** साध्य , असाध्य
2) **बल भेद से -** मृदु , दारुण
3) **अधिष्ठान भेद -** मनोधिष्ठान , शरीराधिष्ठान
4) **निमित्त भेद से -** स्वधातु वैषम्य , आगन्तुक
5) **आशय भेद से -** आमाशय समुत्थ , पक्वाशय समुत्थ
6) **हेतु के आधार -** आगन्तुज , निज
7) **क्रिया भेद से -** शस्त्र साध्य , स्नेहादि क्रिया साध्य
8) **ऋतुकालिक अवस्था के आधार पर -** प्राकृत रोग , वैकृत रोग

चरक सूत्रस्थान में **रोग चतुष्क** के अन्तर्गत अध्याय 19 (अष्टोदरीय अध्याय) व अध्याय 20 (महारोगाध्याय) में क्रमश: सामान्यज रोगों व नानात्मज रोगो का वर्णन किया गया है।

1) **सामान्यज रोग -** जो रोग वातादि दोष में से किसी भी एक दोष से अथवा दो दोषों के संसर्ग से अथवा तीन दोषों के संसर्ग से उत्पन्न होते है उन्हे सामान्यज रोग कहते है , जैसे ज्वर, अतिसार अथवा उदर रोग आदि रोगो के वातज भेद, पित्तज भेद, कफज भेद, संसगंज व सन्निपातज भेद होते है।

2) **नानात्मज रोग -** जिन विकारों की उत्पत्ति केवल एक दोष के प्रकोप से ही होती है, अन्य कोई दोष उनकी उत्पत्ति का कारण नहीं होता है। ऐसे रोगो को नानात्मज रोग कहा जाता है।

- ✓ **वात** नानात्मज विकार - **80 विकार**
- ✓ **पित्त** नानात्मज विकार - **40 विकार**
- ✓ **कफ** नानात्मज विकार - **20 विकार**

तीन भेद से -

1) **कारण भेद से -** निज , आगन्तुज , मानस
2) **मार्ग भेद से -** शाखाश्रित रोग , कोष्ठाश्रित रोग , मर्मस्थिसन्धिगतरोग
3) **दोष भेद से -** आग्नेय , सौम्य , वायव्य

सुश्रुतोक्त वर्गीकरण

" तच्च दु:खं त्रिविधं आध्यात्मिक अधिभौतिक आदिदैवमिति। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. आध्यात्मिक रोग - आत्मा का अर्थ है मन सहित शरीर अत: मन सहित शरीर में शारीरिक दोष पित्त, कफ तथा मानसिक दोष रज अथवा तम से होने वाले रोगों को आध्यात्मिक रोग कहते हैं।

2. अधिभौतिक रोग - आचार्य सुश्रुत ने संघातबलप्रवृत्त रोगो को अधिभौतिक रोग कहा है। शब्द आगन्तुज रोग भी कहते है।

3. आदिदेविक रोग - दैवीय अर्थात पूर्वजन्मकृत कर्मों के कारण होने वाले रोग को आदिदैविक रोग कहा जाता है।

आचार्य सुश्रुत ने आध्यात्मिक, आधिभौतिक रोग व आदिदैविक रोगों को **पुनः सात वर्गों** में विभाजित किया हैं -

1) दोषबलप्रवृत्त
2) दैवबलप्रवृत्त
3) जन्मबलप्रवृत्त
4) कालबल प्रवृत्त
5) आदिबल प्रवृत्त
6) स्वभाववल प्रवृत्त
7) संघातबल प्रवृत्त आदि

1. दोषबलप्रवृत्त / जातज रोग / Acquired disorder -

" दोषबलप्रवृत्ता ये आतंकसमुत्पन्ना मिथ्याहारचारकृताश्च । तेऽपि द्विविधा आमाश्यसमुत्पन्ना, पक्काश्यसमुत्थाश्च । पुनश्च द्विविधाः शारीर मानसाश्च । "

जो व्याधियाँ शारीरिक दोष वात, पित्त, कफ आदि के कारण व मानसिक दोष रज, तम के दुष्ट होने से उत्पन्न होती है वह दोषबलप्रवृत्त व्याधि कहलाती है। दोषबलप्रवृत्त व्याधि के दो निदान वर्णित किये हैं।

1. आतंक समुत्पन्ना - पूर्वोत्पन्न रोग निदान स्वरूप में रहकर अन्य रोग की उत्पत्ति करते हैं , जैसे प्रतिश्याय से कास उत्पन्न होना।

2. मिथ्याहारउपचारकृत - अष्ट आहरविधि विशेष आयतन के अनुसार भोजन विधि नहीं ग्रहण करने से तथा मिथ्या आचरण करने से दोष दूषित होकर दोषबलप्रवृत्त व्याधि उत्पन्न करते हैं ,

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

इन व्याधियों के दो भेद हैं

⇩

1. आमाशयसमुत्थ - नाभि से उपर होने वाली व्याधियाँ जिसमें कफ व पित्त दोष का प्राधान्य होता है उन्हे आमाशयसमुत्थ दोषवलप्रवृत्त व्याधि कहते हैं।

2. पक्वाशयसमुत्थ - नाभि से नीचे होने वाली व्याधियाँ जिनमें वात दोष का प्राधान्य होता है उन्हें पक्वाशयसमुत्थ दोषबलप्रवृत्त व्याधि कहते हैं।

अन्य विभाजन

⇩

1. शारीरिक रोग - शारीरिक दोषों के वैषम्य से तथा प्रथम शरीर में होने वाले रोगों को शारीरिक दोषबलप्रवृत्त कहते है।

2. मानसिक रोग - मानसिक दोषों के वैषम्य व प्रथम मन को प्रभावित करने वाले रोग को मानसिक दोषबल प्रवृत्त व्याधि कहते हैं।

2. दैवबलप्रवृत्त / प्रभावज रोग / Epidemic disorder -

" दैवबलप्रवृत्ता ये देवद्रोहादभिशस्तका अथर्वणकृता उपसर्गजाश्च तेऽपि द्विविधा : विद्युदशनिकृता: पिशाचादिकृताश्च। पुनश्च द्विविधा संसर्गजा, आकस्मिकाश्च। "

गुरुओं के अभिशाप से उत्पन्न या अथर्ववेद प्रणीत अभिचार मंत्रों के प्रयोग से तथ संक्रामक रोगों से ग्रसित व्यक्तियों का संग करने से उत्पन्न व्याधियों को दैवबलप्रवृत्त व्याधि कहा जाता है ,

दो भेद निम्न हैं

⇩

Ayurvedic Formulation

1. विद्युदशनिकृता - विद्युत (तिरछी रूप से गिरने वाली विद्युतलता), अशनि (मूसल की तरह सीधे गिरने वाली विद्युत लता) से उत्पन्न होने वाली व्याधि को विद्युदशनिकृता व्याधि कहा जाता है।

2. पिशाचादिकृता - पिशाच आदि से होने वाली व्याचियों पिशाचादिकृतं व्याचि कहते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628, 8962265728

दैवबलप्रवृत्त व्याधि को **पुनः दो भागों में बाँटा** गया है

⇩

1. संसगंज - ज्वर से पीड़ित व्यक्ति के साथ संसर्ग करने से उत्पन्न होते हैं उन्हें संसर्गज दैवबलप्रवृत्त रोग कहा जाता है।

2. आकस्मिक - जो व्याधियाँ संसर्ग के बिना होती है तथा जिनका कोई प्रत्यक्ष कारण दृश्यमान नहीं होता है फिर भी फैलती।

3. जन्मबलप्रवृत्त / गर्भज रोग / Congenital disease -

" जन्मबलप्रवृत्ता ये मातुरपचारात् पंगुजात्यन्ध्बधिरमूकमिन्मिनवामनप्रभृतयो जायन्ते। तेऽपि द्विविधाः रसकृता दौहृदापचारकृताश्च। "

गर्भावस्था में माता द्वारा मिथ्या आहार ग्रहण करने के कारण तथा दुष्ट आचरण करने के कारण जन्मबलप्रवृत्त व्याधि उत्पन्न होती है , जैसे पंगु - जन्म से ही चलने के सामर्थ्य से, जात्यन्ध - जन्म से ही दृष्टि की विकृति वाला।

1. रसकृत - माता द्वारा सर्वरसाभ्यास नहीं करने से जन्मबलप्रवृत्त व्याधि उत्पन्न होती है।

2. दौहृद अवमाननाकृत - चौथे मास में गर्भ का हृदय विकसित हो जाने के कारण गर्भिणी को दौहद संज्ञा दो जाती है। इस अवस्था में माता की इच्छा पूर्ति नहीं करने पर गर्भ स्थित बालक में जन्मबलप्रवृत्त व्याधि उत्पन्न होती है।

4. कालबलप्रवृत्त / कालज रोग / Seasonal disorder -

" कालबलप्रवृत्ता ये शीतोष्णवातवर्षाप्रभृति निमित्ताः तेऽपि द्विविधाः व्यापन्न ऋतुंकृता , अव्यापन्नऋतुकृताश्च। "

ऋतुओं के शीत, उष्ण वात, वर्षा, आतप, अन्धकार आदि कारणों से जो रोग उत्पन्न होते हैं उन्हें कालबलप्रवृत्त कहा जाता है।

व्याधि के **दो भेद** निम्न है

⇩

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

1. अव्यापन्नऋतुकृत - दोषों के स्वभाविक रूप से ऋतु अनुसार संचय प्रकोप प्रसर द्वारा अनेक रोग उत्पन्न होते है जिसे अव्यापा रोग कहा जाता है , जैसे बसन्त में कफप्रकोप से उत्पन्न होने वाले कफज रोगों को अव्यापन ऋतुकृत रोग कहा जाता है।

2. व्यापन्नऋतुकृत - अव्यापन्न ऋतु के लक्षणों के विपरीत लक्षणों वाले व्यापन्न ऋतुकृत रोग उत्पन्न होते है। ऋतु का अतियोग अयोग तथा मिथ्या योग होना , जैसे ग्रीष्म ऋतु में तेज गर्मी अतियोग, कम गर्मी होना अयोग तथा ग्रीष्म ऋतु में होना ग्रीष्म ऋतु का मिथ्या योग कहलाता है।

5. आदिबलप्रवृत्त / सहज रोग / Hereditary disease -

" तत्रादिबलप्रवृत्ता ये शुक्रशोणितदोषान्वयाः कुष्ठार्शप्रभृतयः तेऽपि द्विविधाः मातृजाः पितृजाश्च । "

पिता के शुक्र अथवा माता के आर्तव दोष से उत्पन्न होने वाले कुष्ठ व अर्श आदि रोग आदिबलप्रवृत्त कहे जाते हैं।

1. मातृजा - माता के शरीर मे दूषित हुये दोष शोणित को दूषित करते है जिससे मातृज आदिबलप्रवृत्त व्याधि उत्पन्न होती है।

2. पितृजा - पिता के शरीर में दूषित हुये वातादि दोष शुक्र को भी दूषित करते है जिससे पितृज आदिबलप्रवृत्त व्याधि उत्पन्न होती है।

6. संघातबल प्रवृत्त / पीडाज रोग / Traumatic disorders -

" संघातबलप्रवृत्ता य आगन्तवो दुर्बलस्य बलवद्विग्रहात् तेऽपि द्विविधाः- शस्त्रकृता व्यालकृताश्च । "

प्रहार, पतन आदि कारणों से उत्पन्न होने के कारण संघातबल प्रवृत्त व्याधि को आगन्तुज व्याधि भी कहा जाता है। जो व्याधि दुर्बल पुरुष के द्वारा बलवत्तर पुरुष के साथ कायिक, वाचिक या मानसिक रूप से कलह करने से उत्पन्न होती है उसे संघातबलप्रवृत्त व्याधि कहते हैं।

इसके **दो भेद** बताये गये है

⇩

1. शस्त्रकृत - शस्त्र प्रहार पीड़न आदि हिंसक कर्मों से होने वाली व्याधियाँ।

2. व्याकृत - हिंसक जन्तुओं जैसे व्याल आदि के द्वारा आबात से उत्पन्न व्याधि।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

7. स्वभावबलप्रवृत्त / स्वभावज रोग -

" स्वभावबलप्रवृत्ताः क्षुत्पिपासाजरामृत्युनिद्राप्रभृतयः। तेऽपि द्विविधाः कालकृताश्च अकालकृताश्च। "

स्वभाव वश होने वाली क्षुधा, पिपासा, जरा, मृत्यु आदि रोग को स्वभाव बलप्रवृत्त रोग कहा जाता है।

इनके **दो भेद** निम्न है

⇩

1. कालकृत - उचित समय पर होने वाली क्षुधा, पिपासा, निद्रा, जरा, मरण आदि कालज स्वाभाविक रोग है।

2. अकालकृत - क्षुधा, पिपासा आदि का आविर्भाव समय से पूर्व होना अकालज स्वभाविक रोग है। जैसे भरमक रोग में पित् का आधिक्य व श्लेष्मा का क्षय होने से बार बार क्षुधा व पिपासा की प्रवृत्ति होना।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

व्याधिनामकरण सिद्धान्त

आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में सभी व्याधियों का नामकरण, वर्गीकरण International classification of disease **[ICD]** के अन्तर्गत किया गया है इसके अन्तर्गत न केवल सभी व्याधियों को क्रमबद्ध किया गया वरन् सभी चिकित्सकीयविधियों, शल्य कर्मो, प्रयोगशालीय परीक्षणों को भी क्रमबद्ध किया गया है।

आयुर्वेद क्षेत्र में भी समस्त व्याधियों के नामकरण व वर्गीकरण की अत्यन्त आवश्यकता है परंतु यह कार्य अभी तक सफल नहीं हो सका क्योंकि किसी भी व्याधि के संदर्भ में आयुर्वेदविदों के एक मत नहीं है।

जैसे - पाण्डु को कुछ आयुर्वेदविद् Anaemia, कुछ आयुर्वेदविदों के अनुसार Leukaemia, कुछ आयुर्वेदविदों के अनुसार Hypothyroidism जाना जाता है।

Note - आधुनिक काल में नवीन उद्भूत व्याधियों का नामकरण करना आवश्यक है तथा उनका वर्गीकरण करना परमावश्यक है इस हेतु Ayurvedic classification of disease [ACD] को भी विकसित करना चाहिये।

1) कुछ व्याधियाँ जिनका वर्णन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में व आधुनिक चिकित्सा ग्रन्थों में एक समान किया गया हैं , उन व्याधियों का आयुर्वेदिक नामकरण करने की आवश्यकता नहीं होती है इन्हे **उक्त व्याधि** कहते है , जैसे ज्वर को Fever, पक्षवध को Paralysis, अर्श को Hemorrhoids कहते है।

2) कुछ व्याधियाँ जिनका लाक्षणिक वर्णन आयुर्वेदीक ग्रन्थों में मिलता है तथा उन्हें किसी व्याधि की अवस्था विशेष के अन्तर्गत वर्णन किया गया परन्तु आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में उन लक्षणों को व्याधि रुप में नामांकित किया गया है , इस प्रकार की व्याधियों को **अल्प उक्त व्याधि** कहते है , जैसे रक्तपित्त को Vein thrombosis, मलबन्ध व कठिन उन्नत हो उसे Cystic growth कह सकते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) कुछ व्याधियां जिनका आयुर्वेदिक ग्रन्थों में लेशमात्र भी वर्णन नहीं मिलता है , जैसे Kleinfelter Syndrome, Gullian bare Syndrome आदि। इन व्याधियों को **अनुक्त व्याधि** कहते है , इन व्याधियों का नामकरण करना भी आवश्यक है।

रोगों के असंख्य भेद होते है , **रुजा, वर्ण, समुत्थान, स्थान, संस्थान व नाम के आधार पर** रोगों के असंख्य भेद बताये गये है। सभी की गणना करना और उसको लिखना असम्भव है इसलिये स्थूल रूप से चिकित्सा करने के लिये उनका नामकरण किया जा सकता है। अतः यादि वैद्य किसी रोग का नामकरण करने मे समर्थ ना हो तो उसे अपने ज्ञान पर लज्जा नहीं करनी चाहिए।

बीज, बीजभाग व बीजभागावयव

बीज -

- यह पुरुष बीज का तात्पर्य - Spermatozoa or male gamete
- स्त्री बीज का तात्पर्य Ovum है

Spermatozoa - The mature male germ cells formed with in seminiferous tubules of the testis.

Ovum - The mature female germ cells formed in medulla of ovary.

बीजभाग -

बीज भाग का अर्थ बीज में स्थित भाग जिससे नवीन संतति में किसी अंग विशेष की रचना होती है ऐसे अनेक बीज़ भागों के मिलने से सम्पूर्ण बीज बना होता है। बीज अर्थात् Ovum or spermatozoa के गुणसूत्रों को बीजभागावयव माना जा सकता है।

Chromosome - A singular piece of DNA [which contain many genes, regulatory elements, other neucleotide sequence] plus DNA binding protein.

Ayurvedic Formulation

बीजभागावयव -

बीज के विभिन्न भागों में से प्रत्येक भाग में अनेक अवयव निहित होते है इन बीजभागों में किसी एक अवयव को बीजभागावयव कहा जाता है। क्रोमोसोम के विशेष अंश को भी जीन कहते है। जीन वंशगति की ईकाई होती है। अत: इसे बीजभागावयव कहना चाहिये।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Gene is the basic unit of hereditary made of DNA. It is code of specific protein. Each gene occupies a certain location on a chromosome.

गर्भ की आकृति, वर्ण तथा इन्द्रियों को विकृत करने के लिये निम्न कारक उत्तरदायी होते हैं -

1) बीज - माता अथवा पिता के बीज में विकृति उत्पन्न होनौ
2) आत्मा कर्म दोष - अर्थात पूर्व देह द्वारा किये गये अशुभ कर्म के कारण विकृति उत्पन्न होना।
3) आशय - अर्थात माता का गर्भाशय में विकृति उत्पन्न होना
4) काल की विकृति - काल दोष का तात्पर्य ऋतुकाल अथवा गर्भधारण काल या गर्भिणीकाल में विकृति
5) दुष्ट आहार - माता के द्वारा ग्रहण किये गये दुष्ट आहार विहार से

इस प्रकार गर्भ की विकृति में प्रधान कारण बीजदुष्टि ही है

बीज , बीजभाग तथा बीजभागावयव दुष्टि का स्वरूप -

- ✓ **बीज दुष्टि -** विकृत अंग वाली संतान - Congenital disorders
- ✓ **बीजभाग में दुष्टि -** बन्ध्या अथवा बन्ध्य - संतानोत्पत्ति में असमर्थ - Chromosomal disorder
- ✓ **बीजभागावयव में दुष्टि -** पूतिप्रजा अथवा पूतिप्रज - Single gene defect
- ✓ **बीजभागावयव दुष्टि व स्त्रीबीजकरभाव अथवा पुरुषबीजकरभाव में दुष्टि -** वार्ता अथवा तृणपुत्रीक - Intersex disorder.

Ayurvedic Formulation

- ❖ **पूतिप्रज -** ऐसी स्त्री जिसमे गर्भ या तो गर्भ मे या बाहर आकर मर जाता है
- ❖ **वार्ता -** आकार - प्रकार स्त्री के समान होता है परंतु उसमे स्त्री के सम्पूर्ण लक्षण नहीं होते है।
- ❖ **तृणपुत्रीक -** आकार - प्रकार पुरुष के समान होता है परंतु उसमे पुरुष के सम्पूर्ण लक्षण नहीं होते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अष्टोनिन्दितीय व्याधिया

" इह खलु शरीरमधिकृत्याष्टौ पुरुषा निन्दिता भवन्ति , तद्यथा - अतिदीर्घश्च , अति च , च , अतिकृष्णश्च , अतिगौरश्च , अतिस्थूलश्च , अतिकृशश्चेति ।। " (च . सू. 21/3)

चरक संहिता सूत्रस्थान के अष्टौनिन्दितीय अध्याय में इसका वर्णन किया गया है। आचार्य चरक ने आठ प्रकार के निन्दित पुरुष माने है -

9) अतिदीर्घ (Gigantism)
10) अतिहस्व (Dwarfism)
11) अतिलोमा (Excess hair on body)
12) अलोमा (Hairless body)
13) अतिकृष्ण (Nigro body)
14) अतिगौर (Albinism)
15) अतिस्थूलम (Obese)
16) अतिकृश (Emaciation)

अतिस्थूलता

अतिस्थूलता के निदान -

" तदतिस्थौल्यमतिसम्पूरणादगुरुमधुरशीतस्निग्धोपयोगादव्यायामादव्यवायादिवास्वप्नाद्धर्ष नित्यत्वादचिन्तनाद्बीजस्वभावाच्चोपजायते । "

9) अतिसंपूरणाद् :- मात्रा में अधिक भोजन करने से,
10) गुरु, मधुर, शीत, स्निग्ध पदार्थों का सेवन करने से,
11) अव्यायामाद् - व्यायाम न करने से,
12) अव्यवायाद् - मैथून न करने से,
13) दिवास्वप्नाद् - दिवाशयन करने से,
14) नित्य हर्षित, प्रसन्न रहने से,
15) अचिन्तनाद् - चिन्ता मुक्त रहने से,
16) बीजस्वभाव - माता पिता के आनुवांशिक गुणों से

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अतिस्थूलता के लक्षण -

" मदोमांसातिवृद्धत्वाच्चलस्फिगुदरस्तनः । अयथोपचयोत्साहो नरोऽतिस्थूल उच्यते ।। "

मेद और मांस के बहुत बढ़ जाने के कारण श्रोणिमण्डल , उदर और स्तन मोटे होकर लटक जाते हैं और चलते समय हिलते हैं। जिस व्यक्ति के शरीर का संगठन अव्यवस्थित रूप से बहुत मोटे अंगोंवाला होता है और उसमें शरीर के अनुपात से उत्साह नहीं होता , उसे अतिस्थूल कहते हैं।

अतिस्थूल पुरुष के दोष :-

" अतिस्थूलस्य तावदायुषो हासो जवोपरोधः कृच्छ्रव्यवायता दौर्बल्यं दौर्गन्ध्यं स्वेदाबाधः क्षुदतिमात्रं पिपासातियोगश्चेति भवन्त्यष्टौ दोषाः । "

9) **आयुषो हासो** - आयु कम होना
10) **जवोपरोधः** - कार्य करने में उत्साहहानि
11) **कृच्छ्रव्यवायता** - मैथून शक्ति का क्षय
12) दुर्बलता
13) शरीर में दुर्गन्ध का होना
14) अत्यधिक पसीना होना
15) अत्यधिक भूख लगना
16) अत्यधिक प्यास लगना

Ayurvedic Formulation

स्थौल्यो सम्प्राप्ति -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कफ प्रधान - आहार सेवन से कफ वृद्धि

⇩

कफ अपने गुणधर्मी धातु (मेद धातु) की वृद्धि करता है

⇩

मेदवहस्रोतस के अतिरिक्त अन्य उत्तरोत्तर स्रोतसों के मार्ग अवरुद्ध

⇩

स्रोतसों के बद्ध होने के कारण ,वायु की कोष्ठ में अधिक वृद्धि

⇩

कोष्ठस्थ अग्नि को वायु अधिक प्रदीप्त करती है

⇩ ⇩

- भोजन की बार - बार क्षुधा
- अधिक भोजन करने से स्थौल्य

- भोजन का शीघ्र पाक करेगी
- अधिक आहार रस उत्पत्ति तथा मेद धातु का अधिक पोषण तथा उत्तरोतर धातु का क्षय
- उपद्रव उत्पन्न (अल्पप्राण , मैथुन शक्तिह्रास)

अतिकृशता

अतिकृशता के निदान -

" सेवा रूक्षान्नपानानां लङ्गनं प्रमिताशनम् । क्रियातियोगः शोकश्च वेगनिद्राविनिग्रहः ॥

रूक्षस्योद्वर्तनं स्नानस्याभ्यासः प्रकृतिर्जरा । विकारानुशयः क्रोधः कुर्वन्त्यतिकृशं नरम् ॥ "

13) रुक्ष आहार और पेय का सेवन ,
14) लंघन (उपवास तथा शोधन आदि),
15) बहुत कम भोजन या एक रस का ही
16) शारीरिक , मानसिक या वाचिक क्रियाओं का अधिक करना ,
17) शोक करना ,
18) मल - मूत्रादि तथा निद्रा के वेगों को रोकना
19) रूक्ष द्रव्यों से बने उबटन का लगाना ,
20) अधिक स्नान करना ,
21) शरीर की वात प्रकृति या माता - पिता का कृश होना
22) वृद्धावस्था ,
23) किसी रोग का दीर्घकाल तक रहना
24) क्रोध करना

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

अतिकृश की लक्षण -

" शुष्कस्फिगुदरग्रीवो धमनीजालसन्ततः । त्वगस्थिशेषोऽतिकृशः स्थूलपर्वा नरो मतः ॥ "

जिस व्यक्ति के नितम्ब , पेट और गरदन सूखे हों , उन पर मांस न हो , शरीर की धमनियों का जाल दिखलायी देता हो, शरीर में त्वचा और हड्डी मात्र अवशिष्ट हो , जिसकी सन्धियाँ मोटी हों उसे अतिकृश जानना चाहिए।

अतिकृश पुरुष के दोष -

" व्यायाममतिसौहित्यं क्षुत्पिपासामयौषधम् । कृशो न सहते तद्वदतिशीतोष्णमैथुनम् ॥

प्लीहा कासः क्षयः श्वासो गुल्मोऽस्युदराणि च । कृशं प्रायोऽभिधावन्ति रोगाश्च ग्रहणीगताः ॥ "

अतिकृश व्यक्ति व्यायाम , छककर भरपेट भोजन , क्षुधा , प्यास , रोग का कष्ट , औषध के वीर्य , अतिशीत , अधिक उष्णता और अतिमैथुन को नहीं सहन कर पाता है। कृश पुरुष को प्लीहावृद्धि , खाँसी , राजयक्ष्मा , श्वास , गुल्म , बवासीर , उदररोग और ग्रहणीविकार प्रायः हो जाया करते हैं।

अतिकृश सम्प्राप्ति -

निदान सेवन

⇩

अल्पमात्रा में रसधातु की उत्पत्ति तथा उत्तरोत्तर धातु पोषण में कमी

⇩

असम्यक् धातु निर्माण

⇩

कृशता

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सामान्यज व नानात्मज विकार

सामान्यज रोग -

जो रोग वातादि दोष में से किसी भी एक दोष से अथवा दो दोषों के संसर्ग से अथवा तीन दोषों के संसर्ग से उत्पन्न होते है उन्हे सामान्यज रोग कहते है।

जैसे - ज्वर, अतिसार अथवा उदर रोग आदि रोगो के वातज भेद, पित्तज भेद, कफज भेद, संसगंज व सन्निपातज भेद होते है।

सामान्यज रोग	संख्या –48	नाम
1. भेद वाले रोग	3	उस्स्तम्भ, सन्यास, महागद
2. भेद वाले रोग	8	ज्वर, अर्श, व्रण, आयाम, गृधसी, वातरक्त, आमदोष, कामला
3. भेद वाले रोग	3	शोथ, रक्तपित्त, किलास
4. भेद वाले रोग	10	नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, प्रतिश्याय, मद, मूर्च्छा, शोष, क्लैव्य, ग्रहणी, अपस्मार।
5. भेद वाले रोग	12	श्वास,कांस,हिक्का, तृष्णा,छर्दिअरूचि, गुल्म, प्लीहदोष, पाण्डु, हृद्रोग, शिरोरोग, उन्माद
6. भेद वाले रोग	2	अतिसार, उदावर्त
7. भेद वाले रोग	3	कुष्ठ, विसर्प, प्रमेहपिडिका
8. भेद वाले रोग	4	उदरोग, मूत्राघात, क्षीरदोष, शुक्रदोष
20 भेद वाले रोग	3	प्रमेह, योनिव्यापद, कृमिरोग

Ayurvedic Formulation

1. उदरोग – 8	V,P,K,S, प्लीहोदर, बद्धोदर, छिद्रोदर, दकोदर।	(सुश्रुत – 8)
2. मूत्राघात – 8	**V,P,K,S अश्मरीजन्य, शर्कराजन्य, रक्तजन्य, शुक्रदोष।**	**(सुश्रुत – 12)**
3. क्षीरदोष – 8	वैवर्ण्य, वैगन्ध्य, वैरस्य, पैच्छिल्य, फेनसंघात, रौक्ष्य, गौरव, स्नेह।	(सुश्रुत – 11)
4. शुक्रदोष – 8	तनु, शुष्क, फेनिल, श्वेत, पूति, पिच्छिल, रक्तादि युक्त, अवसादि।	(सुश्रुत – 11)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

5. कुष्ठ – 7	कपाल, औदुम्बर, मंडल, ऋष्यजिहवा, पुडरीक, सिध्म, काकणक।	(सुश्रुत – 7)
6.प्रमेहपिडिका–7	शराविका, कच्छपिका, जालिनी, सर्षपी, अलजी, विनता, विद्रधि।	(सुश्रुत – 10)
7. विसर्प – 7	वतज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आग्नेय, ग्रन्थि, कदर्म।	(सुश्रुत – 5)

8. अतिसार – 6	**वतज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, भयज, शोकज।**	**(सुश्रुत – 6)**
9. उदावर्त – 6	वात, मूत्र, पुरीष, शुक्र, **छर्दि, क्षवथु निरोधजन्य।**	(सुश्रुत – 13)

1. श्वास – 5	महा, उर्ध्व, छिन्न, तमक और क्षुद्र श्वास।	(सुश्रुत – 5)
2. कास – 5	वातज, पित्तज, कफज, क्षतज, और क्षयज।	(सुश्रुत – 5)
3. हिक्का – 5	महती, गम्भीरा, व्यपेता, क्षुद्रा, अन्नजा।	(सुश्रुत – 5)
4. तृष्णा – 5	वातज, पित्तज, आमज, क्षयज, उपसर्गज।	(सुश्रुत – 7)
5. छर्दि – 5	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज द्विष्टार्थ संयोगज।	(सुश्रुत – 5)
6. अरोचक – 5	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, द्वेषजन्य।	(सुश्रुत – 5)
7. गुल्म – 5	V,P,K,S रक्तज।	(सुश्रुत – 5)
8. प्लीहदोष – 5	**V,P,K,S रक्तज।**	
9. पाण्डु – 5	V,P,K,S मृद्विका भक्षण जन्य।	(सुश्रुत– 4)
10. हृदय – 5	V,P,K,S कृमिज।	(सुश्रुत– 4)
11. शिर – 5	V,P,K,S कृमिज।	(सुश्रुत – 11)
12. उन्माद – 5	V,P,K,S आगन्तुज।	(सुश्रुत – 6)

1. अपस्मार – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 4)
2. नेत्ररोग – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 76)
3. प्रतिश्याय – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 5)
4. कर्णरोग – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 28)
5. ग्रहणी – 4	**वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।**	**(सुश्रुत – 4)**
6. मुखरोग – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 65)
7. मद – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 4)
8. मूर्च्छा – 4	वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज (V,P,K,S,)।	(सुश्रुत – 4)
9. शोष – 4	साहसजन्य, वेगसंधारणजन्य, धातुक्षयजन्य, विषमाशनजन्य।	(सुश्रुत – 4)
10. क्लैब्य – 4	**बीजोपघात, ध्वजभंग, जराजन्य, शुक्रक्षयजन्य।**	**(सुश्रुत – 6)**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. शोथ – 3	वातज, पित्तज, कफज।	(सुश्रुत – 6)
2. किलास – 3	ताम्रवर्ण, रक्तवर्ण, श्वेतवर्ण।	
3. रक्तपित्त – 3	अधोग, उर्ध्वग, उभयमार्गज।	(सुश्रुत – 7)

1. ज्वर – 2	(1) शीत आहारविहार जन्य (2) उष्ण आहारविहार जन्य।	(सुश्रुत– 6)
2. आम – 2	(1) अलसक (2) विसूचिका	(सुश्रुत – 3)
3. अर्श – 2	(1) शुष्कार्श (2) आर्द्र अर्श।	(सुश्रुत – 6)
4. व्रण – 2	(1) निज (2) आगन्तुज।	
5. आयाम – 2	(1) बहिरायाम (2) अन्तरायाम।	
6. कामला – 2	(1) कोष्ठाश्रयी (2) शाखाश्रयी।	
7. वातरक्त – 2	(1) गम्भीर (2) उत्तान।	
8. गृधसी – 2	(1) वातज (2) वात कफज।	

1. उरूस्तंभ –1	एक ऊरूस्तम्भ इति **आमत्रिदोषसमुत्थः।**	
2. सन्यास – 1	एक सन्यास इति त्रिदोषात्मको **मनःशरीराधिष्ठानः।**	
3. अतत्वाभिनिवेश – 1	एको **'महागद'** इति अतत्वाभिनिवेशः।	**(महाव्याधि = हलीमक – चरक)**

कृमिरोग – 20	**नाम** (चरक, वाग्भट्ट – MPRK – 2567 सुश्रुत – MPRK – 0776)
1. बर्हिमलज	यूका, पिप्पलिका।
2. शोणितज	केशाद, लोमाद, लोमद्वीप, सौरस, औदुम्बर, जन्तुमाता।
3. कफज	अन्त्राद, उदराद, हृदयाद, चरू, दर्भपुष्प, सुगन्ध, महागुद
4. पुरीषज	ककेरूक, मकेरूक, लेलिह, सौसुराद, सशुलक।

प्रमेह - 20	**नाम**
कफज प्रमेह	उदकप्रमेह, इक्षुबालिका प्रमेह, सान्द्रप्रसादमेह, सान्द्रमेह, शुक्रमेह, शुक्लमेह, शीतमेह, शनैर्मेह, सिकतामेह, लालामेह
पित्तज प्रमेह	क्षारमेह, कालमेह, नीलमेह, लोहितमेह, मञ्जिष्ठामेह, हरिद्रामेह
वातज प्रमेह	वसामेह, मज्जामेह, हस्तिमेह, मधुमेह

योनिव्यापद के 20 भेद -

- वातिक योनिव्यापद, पित्तज योनिव्यापद, कफज योनिव्यापद, सन्निपातिक योनिव्यापद, रक्तजा योनिव्यापद,
- अचरणा योनिव्यापद, अतिचरणा योनिव्यापद, प्राक्करणा योनिव्यापद,
- उपप्लुता योनिव्यापद, परिप्लुता योनिव्यापद,
- कर्णिनी योनिव्यापद, पुत्रघ्नी योनिव्यापद, उदावर्तिनी योनिव्यापद, अरजस्का योनिव्यापद, शुष्का योनिव्यापद, वामिनि योनिव्यापद,
- सूचीमुखी योनिव्यापद, अन्तर्मुखी योनिव्यापद, षण्ढ्योनिव्यापद, महायोनिव्यापद

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

नानात्मज रोग -

जिन विकारों की उत्पत्ति केवल एक दोष के प्रकोप से ही होती है, अन्य कोई दोष उनकी उत्पत्ति का कारण नहीं होता है। ऐसे रोगो को नानात्मज रोग कहा जाता है।

- ✓ **वात** नानात्मज विकार - **80 विकार**
- ✓ **पित्त** नानात्मज विकार - **40 विकार**
- ✓ **कफ** नानात्मज विकार - **20 विकार**

वात नानात्मज विकार -

1. नखभेद	21. विड्भेद	41. **दन्तभेद**	61. शिरोरूक्
2. विपादिका	**22. उदावर्त**	42. दन्तशैथिल्य	62. केशभूमिस्फुटन
3. पादशूल	23. खञ्ज	43. मूकत्व	**63. अर्दित**
4. पादभ्रंश	24. कुब्जत्व	44. वाक्यसंग	64. एकांग रोग
5. पादसुप्तता	25. वामनत्व	45. कषायास्यता	65. सर्वांग रोग
6. वातखुड्डता	26. त्रिकपृष्ठग्रह	46. मुखशोष	66. आक्षेपक
7. गुल्फग्रह	27. पार्श्वावमर्द	47. अरसज्ञता	**67. दण्डक**
8. पिण्डिकोद्वेष्टन	28. उदरावेष्ट	48. घ्राणनाश	68. तम
9. गृधसी	29. हृन्मोह	49. कर्णशूल	69. भ्रम
10. जानुभेद	**30. हृद्द्रव**	50. अशब्दश्रवण	70. वेपथु
11. जानुविश्लेष	31. वक्षोद्घर्ष	**51. उच्चैश्रुति**	71. जृम्भा
12. ऊरूस्तम्भ	32. वक्षोपरोध	52. बार्धिय	**72. हिक्का**
13. ऊरूसाद	33. वक्षतोद	53. वर्त्मस्तम्भ	**73. विषाद**
14. पांगुल्य	34. बाहुशोष	54. वर्त्मसंकोच	74. अतिप्रलाप
15. गुदभ्रंश	**35. मन्यास्तम्भ**	**55. तिमिर**	75. रौक्ष्य
16. गुदार्ति	36. ग्रीवास्तम्भ	56. अक्षिशूल	76. पारूष्य
17. वृषणाक्षेप	37. कण्ठोद्ध्वंस	**57. अक्षिव्युदास**	77. श्यावभाषता
18. शेफःस्तम्भ	38. हनुभेद	58. भ्रव्युदास	78. अरूणभाषता
19. वंक्षणानाह	39. ओष्टभेद	59. शंखभेद	79. अस्वप्न
20. श्रोणिभेद	40. अक्षिभेद	60. ललाटभेद	80. अनवस्थितचित्तत्व

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Note - वातज नानात्मज विकार - उरुस्तंभ , गृध्रसी तथा उदवर्त ये सामान्यज और नानात्मज दोनों विकारों मे आते है।

पित्त नानात्मज विकार -

1. ओष	11. अतिस्वेद	21. रक्तपित्त	31. **तृष्णाधिक्य**
2. प्लोष	**12. अंगगन्ध**	**22. रक्तमण्डल**	**32. अतृप्ति**
3. दाह	13. **अंगावदारण**	23. हरितत्व	33. आस्यविपाक
4. दवथु	14. शोणितक्लेद	24. हारिद्रत्व	34. गलपाक
5. धूमक	15. मांसक्लेद	25. नीलिका	35. अक्षिपाक
6. अम्लक	16. त्वग्दाह	26. कक्षा	36. गुदपाक
7. विदाह	17. **त्वगवदरण**	27. कामला	37. मेढ्रपाक
8. अर्न्तदाह	18. चर्मदलन	28. तिक्तास्यता	38. जीवादान
9. अंसदाह	19. रक्तकोठ	29. लोहितगन्धास्यता	39. तमःप्रवेशश्च
10. ऊष्माधिक्य	20. रक्तविस्फोट	30. **पूतिमुखता**	40. हरितहारिद्रनेत्रमूत्रवर्चस्त्व

Note - पित्तज नानात्मज विकार - रक्तपित्त एवं कामला ये सामान्यज और नानात्मज दोनों विकारों मे आते है।

कफज नानात्मज विकार -

1. तृप्ति	11. आलस्य	21. बलासक	31. अतिस्थौल्य
2. तन्द्रा	12. मुखमाधुर्य	**22. अपक्ति**	32. शीताग्निता
3. **निद्राधिक्य**	13. मुखस्राव	23. हृदयोकण्ठोलेप	33. **उदर्द**
4. स्तैमित्य	14. श्लेष्मोद्गिरण	24. धमनीप्रतिचय	34. श्वेतावभासता
5. गुरूगात्रता	15. मलस्याधिक्य	25. **गलगण्ड**	35. श्वेत मूत्रनेत्रवर्चस्त्वं

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अपस्मार

संदर्भ ग्रंथ-

- चरक संहिता , निदान स्थान , अध्याय **8** **" अपस्मार निदान अध्याय "**
- चरक संहिता , चिकित्सा स्थान , अध्याय **10** **" अपस्मार चिकित्साध्याय "**

व्याधि परिचय -

अपस्मार एक मानसिक व्याधि है , इसका दौरा आवस्थिक होता है एवं किंचित कालस्थायी होता है , दौरे का समय भी प्रायः निश्चित होता है। आधुनिक मतानुसार इसका साम्य **Epilepsy** से किया गया है।

अपस्मार निदान -

" विभ्रान्तबहुदोषाणामहिताशुचिभोजनात्। रजस्तमोभ्यां विहते सत्वे दोषावृते हृदि।

चिन्ता काम भयक्रोधशोकोद्वेगादिभिस्तथा। मनस्यभिहते नृणामपस्मारःप्रवर्तते ।। "

जो व्यक्ति अहितकर, अपवित्र भोजन करते है उनके शरीर में प्रारम्भ से ही दोष उन्मार्गी तथा अधिक मात्रा उपस्थित रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के शरीर में जब सत्वगुण, रज और तम के अधिक बढ़ जाने से अधिक दुर्बल हो जाता है और हृदय वातदि दोषों से आवृत हो जाता है तब चिन्ता, काम, भय, क्रोध, शोक और उद्वेग से दूषित मन में अपस्मार रोग की उत्पत्ति होती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अपस्मार सम्प्राप्ति -

" चिन्ता शोकादिभिर्दोषाः क्रुद्धा हृत्स्त्रोतसि स्थिताः। कृत्वा स्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्वते। "

चिन्ता, शोक आदि कारणों(से प्रकुपित हुए दोष हृदय के मनोवाही स्रोतों में स्थित कर स्मृति को नष्ट कर अपस्मार रोग उत्पन्न करते हैं।

सम्प्राप्ति चक्र -

विविध निदान मेवन

⇩

शारीरिक दोष प्रकोप

⇩

मानसिक दोष प्रकोप

⇩

धमनी द्वारा फैले हुए दोषों से हृदय का पोडन (मनोवह स्रोतस द्वारा हृदय प्रदेश में दोष दृष्य सम्मूर्च्छना)

⇩

व्यक्ति मूढ़ मन (मन का अभिहत)

⇩

स्मृतिविनाश

⇩

तम प्रवेश एवं बीभत्सवेष्टा युक्त आवेग

⇩

अपस्मार

Ayurvedic Formulation

समप्राप्ति घटक -

- **दोष -** त्रिदोष + रज तम मानस दोष
- **दूष्य -** मन, स्मृति
- **स्रोतस -** मनोवाही स्रोतस, संज्ञावह स्रोतस
- **स्रोतोदुष्टि -** विमार्गगमन
- **अधिष्ठान -** हृदय
- **व्याधि स्वभाव -** दारूण
- **साध्य असाध्यता -** कृच्छसाध्य / असाध्य

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 8319811628 , 8962265728

अपस्मार पूर्वरूप -

" हृत्कम्प शून्यता स्वेदो ध्यानं मूर्छा प्रमूढता । निद्रानाशश्च तस्मिंस्तु भविष्यति भवत्यथ ।। "

- हृत्कम्प (Palpitaion)
- मूर्छा (faint)
- हृदय में शून्यता की प्रतीति प्रमुढता (Loss of consciousness)
- स्वेद (Perspiration)
- निद्रानाश (Insomnia)
- ध्यानमग्न (Ouerthinking)

अपस्मार के भेदानुसार लक्षण -

1. वातज अपस्मार -

- शरीर में कम्प (Tremors),
- दांत कटकटाना (Teeth biting),
- मुख से फेन (Froath from the mouth),
- तीव्र श्वास गति (Rapid breath)

2. पित्तज अपस्मार -

- रोगी का शरीर, मुख और नेत्र पीत वर्ण के हो जाते हैं (Yellowishness of body, face and eyes)
- वेग के पूर्व पीत या रक्त वर्ण के रूप देखता है (Watch yellowish or redish everything)
- तृष्णा, शरीर ऊष्ण (Thirst, body temperature raised)

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3. कफज अपस्मार -

- रोगी के मुख से श्वेत वर्ण का फेन निकलता है (Whitish froth from mouth)
- मुख मुख व नेत्र श्वेत वर्ण के (Whitish face and eyes)
- शरीर शीतल, रोमाञ्चित तथा भारी रहता है (Body become cold and heavy)

4. सन्निपातज अपस्मार

- वातजन्य अपस्मार में हृदय में सुई चुभाने सी पीडा (Pricking needle like pain in cardiac region),
- पित्तजन्य अपस्मार में प्यास का अधिक लगना (Excessive thirst),
- कफजन्य अपस्मार में उत्क्लेद (ष्ठीवन) होना (Spitting, excessive salivation)

सर्वापस्मार सामान्य लक्षण - प्रलाप, कूजन, क्लेश, सामान्य लक्षण हैं।

साध्यतासाध्यता -

- ✓ वातिक, पैतिक, श्लैष्मिक, अपस्मार- साध्य
- ✓ सन्निपातिक अपस्मार - असाध्य
- ✓ दुर्बल रोगी व पुराना अपस्मार - असाध्य
- ✓ बार बार आक्षेप आना, अत्यन्त क्षीण, भ्रुकुटि तथा नेत्र विकृत हो - असाध्य

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उन्माद

संदर्भ ग्रंथ-

- चरक संहिता , निदान स्थान , अध्याय 7 **" उन्माद निदान अध्याय "**
- चरक संहिता , चिकित्सा स्थान , अध्याय 9 **" उन्माद चिकित्साध्याय "**

व्याधि परिचय -

उन्माद भी अपस्मार की तरह एक मानसिक व्याधि है , जिसमे बुद्धि विभ्रम हो जाता है तथा इसका दौरा आवस्थिक ना होकर स्थायी होता है। आधुनिक मतानुसार इसे Sychosis से साम्य किया जाता है।

उन्माद निदान -

" विरुद्धदुष्टाशुचिभोजनानि प्रघर्षण देवगुरुद्विजानाम् ।
उन्माद हेतु भयहर्षपूर्वो मनोऽभिघातो विषमाश्च चेष्टाः ।। "

विरुद्धाहार, दुष्टाहार, अपवित्र भोजन का सेवन, देवता, गुरु, द्विज, ब्राह्मण का तिरस्कार करना अधिक भय या हर्ष होने से, अन्य विषम चेष्टायें, मानसिक आघात से

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उन्माद सम्प्राप्ति -

" सम्प्राप्ति तैरल्पसत्त्वस्य मलाः प्रदुष्टा बुद्धेर्निवासं हृदयं प्रदूष्य ।
स्रोतांस्यधिष्ठाय मनोवहानि प्रमोहन्त्याशु नरस्य चेतः ।। "

अल्प सत्व वाले व्यक्ति द्वारा उपरोक्त निदान सेवन करने से दूषित वातादि दोष बुद्धि के निवास स्थान हृदय को मनोवाही स्रोतों में साश्रित होकर मनुष्य के मन को मोह युक्त कर देते हैं जिसके फलस्वरूप उन्माद रोग की उत्पत्ति होती हैं

सम्प्राप्ति चक्र -

अल्य सत्व मनुष्य द्वारा विविध निदानों का सेवन

⇩

वातादि शारीरिक + रज तम दोष का प्रकोप

⇩

प्रकुपित दोषों द्वारा बुद्धि के निवास स्थान हृदय की दुष्टि

⇩

दोषों का मनोवाही सोतस में आश्रित होना

⇩

मोह एवं विभ्रम

⇩

उन्माद

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** त्रिदोष (वात प्रधान) + मानसिक दोष (रज + -मन एवं अष्ट मनोभाव
- **दूष्य -** मन एव अष्ट मनोभाव
- **स्रोतस -** मनोवह
- **स्रोतांदुष्टि** - विमार्गगमन
- **अधिष्ठान -** हृदय
- **व्याधि स्वभाव -** दारुण
- **साध्यासाध्यता -** कृच्छ्रसाध्य / असाध्य

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उन्माद पर्वरूप -

- **शिरसःशून्यता -** शिर में शून्यता (Emptyness in head)
- **चक्षुषोराकुलता -** नेत्र व्याकुलता (Distracted eyes)
- **स्वन : कर्णयो -** कर्ण में शब्द सुनाई देना (Tinnitus, ringing of ear)
- **उच्छवासाधिक्यम् -** उच्छवास अधिकता (Rapid respiration)

- **आस्वस्रवणम्** - लाला स्रवण (Excessive salivation)
- **अन्नभिलाषारोचकाविपाका** - भोजन की अनिच्छा, अरुचि, अविपाक (Indigestion, anorexia)
- **हृद्ग्रह**- हृदय की जकडाहट (Stiffness in chest)

उन्माद लक्षण -

" धीविभ्रमः सत्वपरिप्लवश्च पर्याकुला दृष्टिरधीरता च ।

अबद्धवाक्त्वं हृदयं च शून्यं सामान्यमुन्मादगदस्यलिङ्गम् ॥ "

- **धीविभ्रम** - बुद्धि का भ्रमित होना (Altered intelligence)
- **सत्वपरिप्लवश्च** - सत्व का चंचल होना (Disturbed mental status)
- **पर्याकुला दृष्टि अधीरता** - दृष्टि का अपने विषय को उचित रूप से ग्रहण करना (Improper vision)
- **अबद्धवाकत्वं** - बिना सम्बद्ध बिना प्रयोजन बोलना (Irrelevent talks)
- **हृदयं च शून्यं** - हृदय का शून्य हो जाना

भेद -

आचार्य चरक के अनुसार 5 भेद -

1) वातज उन्माद
2) पित्तज उन्माद
3) कफज उन्माद
4) सन्निपातज उन्माद
5) आगन्तुज / भूतोन्माद

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य सुश्रुत के अनुसार 6 भेद -

1) वातज उन्माद
2) पित्तज उन्माद
3) कफज उन्माद
4) सन्निपातज उन्माद
5) शोकादि मानसिक भाव जन्य उन्माद
6) विषजन्य उन्माद

अपस्मार	उन्माद
1) आधुनिक मतानुसार अपस्मार को **Epilepsy** के साम्य बताया गया है	1) आधुनिक मतानुसार उन्माद को **Sychosis** के साम्य बताया गया है
2) अपस्मार में बुद्धिनाश होता है	2) उन्माद में बुद्धि विभ्रम हो जाता है
3) अपस्मार का दौरा आवस्थिक होता है एवं किंचित कालस्थायी होता है	3) उन्माद का दौरा अर्थात आवेग आवस्थिक न होकर स्थायी होता है
4) निरुक्ति - **" अपगता स्मृति यस्मिन् रोगे स अपस्मारः । "** जिस रोग में स्मर्ण शक्ति का सर्वथा आभाव हो जाता है, उसे अपस्मार कहा जाता है ।	**4) निरुक्ति -** **" मदयन्त्युद्गता दोषा यस्मादुन्मार्गमागताः ।** **मानसोऽयमतो व्याधिरुन्माद इति कीर्तितः ॥ "** दोष ऊर्ध्व भाग (मस्तिष्क) में जाकर मस्तिष्क को विकृत कर मद उत्पन्न करते है
5) परिभाषा - **" अपस्मारं पुनः स्मृतिबुद्धिसत्त्वसम्प्लवाद् ।** **वीभत्सचेष्टमावस्थिकं तमः प्रवेशमाचक्षते ॥ "** स्मरणशक्ति, बुद्धि और मन के विकृत हो जाने के कारण मुख से फेन का वमन, अंगों को ऐंठना, आँखों को नचाना, दाँत लग जाना, हाथ पैर पटकना आदि बीभत्स चेष्टाओं के साथ अन्धकार में प्रवेश करने के समान आकस्मिक रूप से कभी कभी जो संज्ञानाश होता है, उसे अपस्मार कहते हैं ।	**5) परिभाषा -** **उन्मादं पुनर्मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृतिभक्ति - शीलचेष्टाचार विभ्रमविद्यात् ॥** मन, बुद्धि, संज्ञा, ज्ञान, स्मृति, भक्ति, शील, चेष्टा, आचार के विभ्रम को उन्माद कहा जाता है ।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

TUMOR

Introduction -

The term 'neoplasia' means new growth; the new growth produced is called 'neoplasm' or 'tumour! However, all 'new growths' are not neoplasms since examples of new growth of tissues and cells also exist in the processes of embryogenesis, regeneration and repair, hyperplasia and hormonal stimulation. The proliferation and maturation of cells in normal adults is controlled.

Thus, normally some cells proliferate throughout life (labile cells), some have limited proliferation (stable cells), while others do not replicate (permanent cells). On the other hand, neoplastic cells lose control and regulation of replication and form an abnormal mass of tissue.

A Neoplasm or Tumour is a mass of tissue formed as a result of abnormal, excessive, uncoordinated, autonomous and purposeless proliferation of cells even after cessation of stimulus for growth which caused it.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Note – The branch of science dealing with the study of neoplasms or tumours is called oncology (oncos-tumour, logos-study)

Neoplasms may be 'benign' when they are slow-growing and localised without causing much difficulty to the host, or 'malignant' when they proliferate rapidly, spread throughout the body and may eventually cause death of the host. The common term used for all malignant tumours is cancer.

Components of all tumors –

- Parenchyma' -comprised by proliferating tumour cells; parenchyma determines the nature and evolution of the tumour.

- Supportive stroma' -composed of fibrous connective tissue and blood vessels; it provides the framework on which the parenchymal tumour cells grow.

The tumours derive their nomenclature on the basis of the parenchymal component comprising them. Malignant tumours of epithelial origin are called carcinomas, while malignant mesenchymal tumours are named sarcomas (sarcos = fleshy)

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

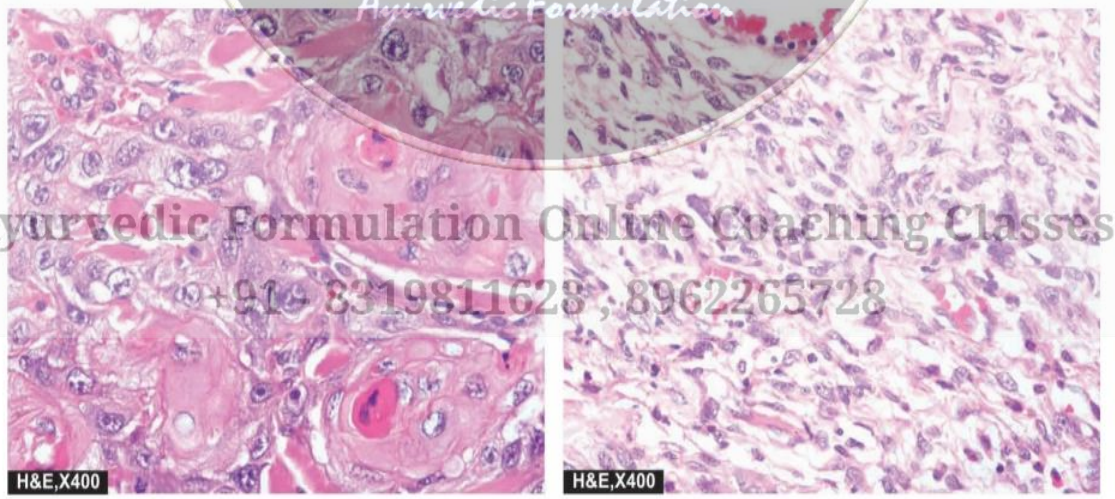

A, SQUAMOUS CELL CARCINOMA B, FIBROSARCOMA

SPECIAL CATEGORIES OF TUMOURS –

Following categories of tumours are examples which defy the generalisation in nomenclature given above: -

1. Mixed tumours -

When two types of tumours are combined in the same tumour, it is called a mixed tumour. For example:-

1) Adenosquamous carcinoma is the combination of adenocarcinoma and squamous cell carcinoma in the endometrium.
2) Adenoacanthoma is the mixture of adenocarcinoma and benign squamous elements in the endometrium.
3) Carcinosarcoma is the rare combination of malignant tumour of the epithelium (carcinoma) and of mesenchymal tissue (sarcoma) such as in thyroid and breast.
4) Collision tumour is the term used for morphologically two different cancers in the same organ which do not mix with each other.
5) Mixed tumour of the salivary gland (or pleomorphic adenoma) is the term used for benign tumour having combination of both epithelial and mesenchymal tissue elements.

Ayurvedic Formulation

2. Teratomas -

These tumours are made up of a mixture of various tissue types arising from totipotent cells derived from the three germ cell layers-ectoderm, mesoderm and endoderm. Most common sites for teratomas are ovaries and testis (gonadal teratomas).

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3. Blastomas (Embryomas) -

Blastomas or embryomas are a group of malignant tumours which arise from embryonal or partially differentiated cells which would normally form blastema of the organs and tissue during embryogenesis.

4. Hamartoma -

Hamartoma is benign tumour which is made of mature but disorganised cells of tissues indigenous to the particular organ e.g. hamartoma of the lung consists of mature cartilage, mature smooth muscle and epithelium.

5. Choristoma -

Choristoma is the name given to the ectopic islands of normal tissue. Thus, choristoma is heterotopia but is not a true tumour, though it sounds like one.

Classification -

Majority of neoplasm can be categorized morphologically into benign and malignant on the basis of certain charecteristic of these characters are -

Ayurvedic Formulation

1. According to Macroscopic Feature

(a) Benign Tumours - are generally spherical or ovoid in shape. They are encapsulated or well circumscribed freely movable, more often firm and uniform.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

(b) Malignant Tumour - They are usually irregular in shape. Poorly circumscribed and extent into the adjacent tissue. Secondary changes like haemorrhage infarction and ulceration are seen more often.

2. According to Microscopic Features

The neoplastic cell is characterized by morphologic and functional alteration.

These are two type -

1) Differentiation
2) Anaplasia

- Benign tumours and low grade malignant tumours are well differentiated .
- Malignant tumours are undifferentiated or poorly differentiated.

Anaplasia is a lack of differentiation and it is also charecterstic features of most malignant tumours.

Differentiation refers to the extent to which neoplastic cells resemble comparable to normal cells, both morphologically and functionally well differentiated cells resemble to normal cells.

- **Undifferentited Cells** do not resemble at all
- **Poorly Differentiated** - Partially resemble to normal cells
- **Dysplasia -** Disordered growth with lack of uniformity of individual cells.

Ayurvedic Formulation

3. According to Growth Rate -

Benign tumours grow slowly and malignant tumour rapidly.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4. According to Local Invasion –

Benign tumours form encapsulated or circumscribed masses that push the surounding normal tissue without actually invading infiltrating or metastasis

Malignant tumours They are distinguished by benign tumour by infiltration, and destruction of the surrounding tissue, cancer spread through tissue space, lymphatic blood vessels

5. According to Metastasis –

{ Meta - transformation, stasis - residence }

- Metastasis is the spread and growth of malignant cells to produce secondry neoplasm at a site distant from and discontinuous with the primary neoplasm
- Metastasis is the most important features to distinguish malignant from benign tumours.
- Benign tumour do not metastise while all malignant tumours can metastise (Few exception like glioma of the central nervous system & basal cell carinoma of the skin)

Polarity -

It means orientation in organisation of cells in a tissue that is correct positioning of cells in a tissue.

Pleomorphism -

Pleomorphism is variation in size and shape, it may occur in cells or nuclei.

Hyperchromatasia -

Nuclei contain and abundance of DNA and are extremely dark staining hyper chromatic nuclei. Cancer is detected early by tumor marker .

Tumour Markers -

A tumour marker is a substance produced by a tumour, that used to differentiate a tumour from normal tissue or to determine the presence tumour.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Enzymes	Type of Cancer
1. Alkaline phosphatase (ALP)	Evaluating metastatic cancer with bone or liver involvement
2. y-Fetoprotein (AFP)	Hepatocellular and germcell carcinoma.
3. CA 15-3	Breast carcinoma
4. CA 125	Ovarian & endometrial carcinoma.

Classification Of Tumor

	TISSUE OF ORIGIN	BENIGN	MALIGNANT
I.	TUMOURS OF ONE PARENCHYMAL CELL TYPE		
	A. Epithelial Tumours		
	1. *Squamous epithelium*	Squamous cell papilloma	Squamous cell (Epidermoid) carcinoma
	2. *Transitional epithelium*	Transitional cell papilloma	Transitional cell carcinoma
	3. *Glandular epithelium*	Adenoma	Adenocarcinoma
	4. *Basal cell layer skin*	—	Basal cell carcinoma
	5. *Neuroectoderm*	Naevus	Melanoma (Melanocarcinoma)
	6. *Hepatocytes*	Liver cell adenoma	Hepatoma (Hepatocellular carcinoma)
	7. *Placenta (Chorionic epithelium)*	Hydatidiform mole	Choriocarcinoma
	B. Non-epithelial (Mesenchymal) Tumours		
	1. *Adipose tissue*	Lipoma	Liposarcoma
	2. *Adult fibrous tissue*	Fibroma	Fibrosarcoma
	3. *Embryonic fibrous tissue*	Myxoma	Myxosarcoma
	4. *Cartilage*	Chondroma	Chondrosarcoma
	5. *Bone*	Osteoma	Osteosarcoma
	6. *Synovium*	Benign synovioma	Synovial sarcoma
	7. *Smooth muscle*	Leiomyoma	Leiomyosarcoma
	8. *Skeletal muscle*	Rhabdomyoma	Rhabdomyosarcoma
	9. *Mesothelium*	—	Mesothelioma
	10. *Blood vessels*	Haemangioma	Angiosarcoma
	11. *Lymph vessels*	Lymphangioma	Lymphangiosarcoma
	12. *Glomus*	Glomus tumour	—
	13. *Meninges*	Meningioma	Invasive meningioma
	14. *Haematopoietic cells*	—	Leukaemias
	15. *Lymphoid tissue*	Pseudolymphoma	Malignant lymphomas
	16. *Nerve sheath*	Neurilemmoma, Neurofibroma	Neurogenic sarcoma
	17. *Nerve cells*	Ganglioneuroma	Neuroblastoma
II.	MIXED TUMOURS		
	Salivary glands	Pleomorphic adenoma (mixed salivary tumour)	Malignant mixed salivary tumour
III.	TUMOURS OF MORE THAN ONE GERM CELL LAYER		
	Totipotent cells in gonads or in embryonal rests	Mature teratoma	Immature teratoma

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

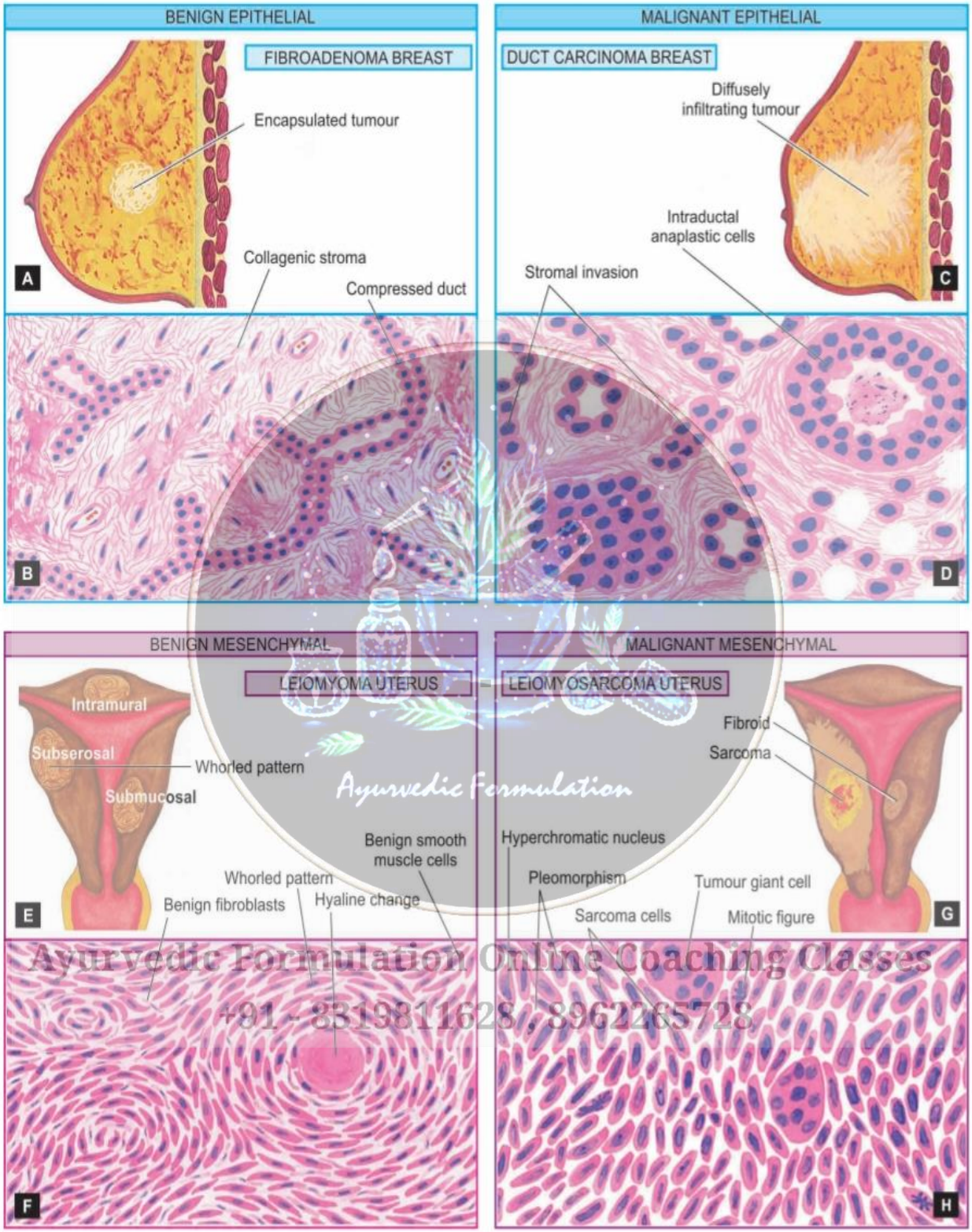

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Contrasting Features Of Benign & Malignant tumor

	FEATURE	BENIGN	MALIGNANT
I.	CLINICAL AND GROSS FEATURES		
	1. *Boundaries*	Encapsulated or well-circumscribed	Poorly-circumscribed and irregular
	2. *Surrounding tissue*	Often compressed	Usually invaded
	3. *Size*	Usually small	Often larger
	4. *Secondary changes*	Occur less often	Occur more often
II.	MICROSCOPIC FEATURES		
	1. *Pattern*	Usually resembles the tissue of origin closely	Often poor resemblance to tissue of origin
	2. *Basal polarity*	Retained	Often lost
	3. *Pleomorphism*	Usually not present	Often present
	4. *Nucleo-cytoplasmic ratio*	Normal	Increased
	5. *Anisonucleosis*	Absent	Generally present
	6. *Hyperchromatism*	Absent	Often present
	7. *Mitoses*	May be present but are always typical mitoses	Mitotic figures increased and are generally atypical and abnormal
	8. *Tumour giant cells*	May be present but without nuclear atypia	Present with nuclear atypia
	9. *Chromosomal abnormalities*	Infrequent	Invariably present
	10. *Function*	Usually well maintained	May be retained, lost or become abnormal
III.	GROWTH RATE	Usually slow	Usually rapid
IV.	LOCAL INVASION	Often compresses the surrounding tissues without invading or infiltrating them	Usually infiltrates and invades the adjacent tissues
V.	METASTASIS	Absent	Frequently present
VI.	PROGNOSIS	Local complications	Death by local and metastatic complications

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

स्त्रोतस वर्णन

स्त्रोतस परिभाषा - **" स्रवरणात् स्त्रोतांसि "**

जिसमें स्त्रवण क्रिया होती है उन्हें स्त्रोतस कहते हैं

" स्त्रोतांसि खलु परिणाममापद्यमानानां धातूनामभिवाहीनि भवन्त्ययनार्थेन । "

इस प्रकार परिणाम प्राप्त धातुओं का अभिवहन अर्थात एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य जिन मार्गों के द्वारा होता है उसे स्त्रोतस कहा जाता है ।

स्त्रोतस के भेद - स्थूल रुप से स्त्रोतस के 2 भेद -

1. **बहिर्मुख स्त्रोतस -** दो नासा स्त्रोत , दो नेत्र , दो कर्ण एक मुख , एक मूत्र निष्कासन स्त्रोतस , एक गुद पुरुषों में यह नव द्वार होते है । जबकि स्त्रियों में तीन अन्य बर्हिमुख स्त्रोतस होते है दो स्तन व एक अपत्य पथ सहित कुल 12 बर्हिमुख स्त्रोतस होते हैं ।

2. **अन्तर्मुख स्त्रोतस** - अन्तमुख स्त्रोतस को सुश्रुत ने योगवाही स्त्रोतस भी कहा है ।

Ayurvedic Formulation

स्त्रोतस प्रकार -

" प्राणोदकान्नरसरुधिरमासमेदोस्थिमज्जशुक्रमूत्रपुरीषस्वेदवहानीति । "(च . वि . 5/6)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य चरक के अनुसार 13 स्त्रोतस -

प्राण , उदक , अन्न , सात धातुयें (रस , रक्त , मांस , मेद , अस्थि , मज्जा , शुक्र) , तीन मल (पुरीष , स्वेद , मूत्र)

" तानि तू प्राणान्नोदकरसरक्तमांसमेदोमूत्रपुरीषशुक्रार्तववहानि । "(सु . शा . 9/12)

आचार्य सुश्रुत के मतानुसार 11 योगवाही स्त्रोतस , प्रत्येक स्त्रोतस दो (22 योगवाही स्त्रोतस) -

प्राण , उदक , अन्न - पांच धातुयें (रस , रक्त , मांस , मेद , शुक्र) , दो मल (मूत्र , पुरीष) , **आर्तव**

स्रोतो दुष्टि सामान्य हेतु -

" आहारश्च विहारश्च य : स्याद् दोषगुणैः समः । धातुभिर्विगुणश्चापि स्रोतसां स प्रदूषकः ।। "

दोषों के गुणों के समान आहार व विहार का सेवन करने से तत् तत् दोष की वृद्धि होती है अथवा ऐसा आहार विहार का सेवन करना जिससे धातुओं में विगुणता उत्पन्न होती है। यह दोनो स्रोतों की दुष्टि के सामान्य हेतु होते हैं।

जैसे - मेदो दुष्टि के निदान में बताया गया है कि दिवास्वप्न करने से व मेद्य द्रव्यों का सेवन करने से मेद धातु में दुष्टि होती है।

स्त्रोतोदुष्टि के सामान्य लक्षण -

" अतिप्रवृत्तिः संगो वा सिराणां ग्रन्थयोऽपि वा। विमार्गगमनं चापि स्रोतसां दुष्टिलक्षणम् ।। "

1) अतिप्रवृत्ति - **अतिप्रवृत्ति का अर्थ दोषों या मलों की अधिक प्रमाण में प्रवृत्ति।**

अतिप्रवृत्ति स्रोतो दुष्टि में स्रोतसों से धातुओं अथवा उपधातुओं अथवा मलों की अधिक मात्रा में प्रवृत्ति होती है जैसे -

1) प्रमेह रोग में मूत्रवह स्रोतो दुष्टि के कारण मूत्र की अधिक मात्रा में प्रवृत्ति होती है।
2) अतिसार रोग में पुरीषवह स्रोतोदुष्टि के कारण पुरीष की अधिक मात्रा में प्रवृत्ति होती है।
3) स्वेदवह स्रोतो दुष्टि होने पर स्वेद की अतिप्रवृत्ति होना।

2. संग - **संग का अर्थ स्रोतसों में अवरोध होना है।**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

संग स्रोतो दुष्टि के द्वारा स्रोतसों से धातु अथवा उपधातु अथवा मलों की अल्पप्रवृत्ति होती है अथवा प्रवृत्ति सर्वथा नहीं होती है जैसे -

1) मूत्रकृच्छ्र में अल्प मात्रा में व कृच्छता से मूत्र की प्रवृत्ति होती है।
2) मूत्राघात में मूत्र प्रवृत्ति पूर्णरूप से अवरोधित हो जाती है।
3) ज्वर में अग्नि दुष्टि से उत्पन्न आम स्वेदवहस्रोतस में अवरोध उत्पना करता है जिससे स्वेद का पूर्ण संग ज्वर रोग का प्रधान लक्षण होता है।

3) सिराग्रन्थि - सिराओं में ग्रन्थि बनना।

सिराग्रन्थि में सिरायें फूल जाती है। सिराओं में रक्त का प्रवाह वायु के बिना नहीं हो सकता है यदि यही वायु दुष्ट होकर रक्त को सिराओं में प्रवाहित नहीं होने देती वरन् रक्त को स्थान विशेष में रोक देती है। जिससे सिरायें ग्रथित या कुटिल हो जाती है। **सिराग्रन्थि को Varicose vein के समान** तथा Aneurysm के समान कह सकते हैं।

4) विमार्गगमन - विमार्गगमन का अर्थ है स्वमार्ग की मर्यादा को त्याग कर अन्य मार्ग में धातु अथवा मल का गमन होना , जैसे -

1) उर्ध्व रक्तपित्त में रक्त स्वमार्ग का उल्लंघन कर मुख , नेत्र प्रवृत्त होता है
2) अधोगत रक्तपित्त में रक्त स्वमार्ग का उल्लंघन कर गुदा या मूत्रमार्ग से प्रवृत होता है।

प्राणवहस्रोतस मूल -

- प्राणवहानां स्रोतसां **हृदयं मूलं महात्रोतश्च।** **(चरक)**
- प्राणवहे द्वे तयोर्मूलं **हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्यः।** **(सुश्रुत)**

उदकवहस्रोतस मूल -

- उदकवहानां स्रोतसां **तालुमूलं क्लोम च।**
- उदकवहे द्वे तयोर्मूलं **तालु क्लोम च।**

अन्नवहस्रोतस मूल-

- अन्नवहानां स्रोतसां **आमाशयो मूलं वामं च पाव।**
- अन्नवहे द्वे तयोर्मूलं **आमाशयोऽन्नवाहिन्याश्च धमन्यः।**

रसवहस्रोतस मूल -

- रसवहानां स्रोतसां **हृदयं मूलं दश च धमन्यः।**
- रसवहे द्वे, तयोर्मूलं हृदयं **रसवाहिन्यश्च धमन्यः।**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रक्तवहस्रोतस मूल -

- शोणितवहानां स्रोतसां **यकृन्मूलं प्लीहा च।**
- रक्तवहे द्वे, तयोर्मूलं **यकृत्प्लीहानौ रक्तवाहिन्यश्च धमन्यः।**

मांसवहस्रोतस मूल -

- मांसवहानां च स्रोतसां **स्नायुर्मूलं त्वक् च।**
- मांसवहे द्वे तयोर्मूलं **स्नायुत्वचं रक्त वहाश्च धमन्यः।**

मेदोवहस्रोतस मूल -

- मेदोवहानां स्रोतसां **वृक्को मूलं वपावहनं च।**
- मेदोवहे द्वे तयोर्मूलं **कटि वृक्कौ च।**

अस्थिवहस्रोतो मूल -

- अस्थिवहानां स्रोतसां **मेदो मूलं जघनं च।**

मज्जावहस्रोतो मूल -

- मज्जवहानां स्रोतसां **अस्थीनि मूलं सन्धयश्च।**

शुक्रवहस्रोतो मूल -

- शुक्रवहानां स्रोतसां **वृषणौ मूलं शेफश्च।**
- शुक्रवहे द्वे तयोर्मूलं **स्तनौ वृषणौ च।**

मूत्रवहस्रोतो मूल -

- मूत्रवहानां स्रोतसां **बस्तिर्मूलं वङ्क्षणौ च।**
- मूत्रवहे द्वे तयोर्मूलं **बस्तिर्मेढ्रं च।**

पुरीषवहस्रोतो मूल -

- पुरीषवहानां स्रोतसां **पक्वाशयो मूलं स्थूलगुदं च।**
- पुरीषवह द्वे तयोर्मूलं **पक्वाशयो गुदं च।**

स्वेदवहस्रोतस मूल -

- स्वेदवहानां स्रोतसां **मैदो मूलं लोमकूपाश्च।**

स्रोतस	Code	चरक	सुश्रुत
प्राणवह	हमारे	हृदयम् व महास्रोतस	हृदयं रसवाहिन्यश्च धमन्य
उदकवह	तक	तालु व क्लोम	तालु व क्लोम
अन्नवह	अव अन्न खाउंगा	आमाशय व वामपार्श्व	आमाशय व अन्नवाहिन्य धमन्य
रसवह	हृद रस पिओ	हृदयं व दशधमन्य	हृदयं व रसवाहिन्य धमन्य
रक्तवह	PaY for रक्त	प्लीहा व यकृत	प्लीहा, यकृत व रक्तवाहिन्य धमन्य
मांसवह	सत रक्त	स्नायु व त्वक्	स्नायु, त्वक् व रक्तवाहिन्य धमन्य
मेदवह	विके वाप की कटि	वृक्क व वपावहन	वृक्क व कटि
अस्थिवह	मेज	मेद व जघन	XXX
मज्जावह	आस न रखो	अस्थि व संन्धि	XXX
शुक्रवह	वृश से	वृषण व शेफ	वृषण व स्तन
मूत्रवह	वंव में	वंक्षण, बस्ति	वस्ति, मेढ्र
स्वेदवह	मेला	मेद व लोमकूप	XXX
पुरीषवह	पंगु	पक्वाशय व स्थूलगुद	पक्वाशय व गुद
आर्तववह		XXX	गर्भाशय & आर्तव वहिन्य धमन्य

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Note -

- ❖ सुश्रुत ने स्त्रोतस नहीं माने है - **अस्थि , मज्जा व स्वेदवह (SAM)**
- ❖ प्राण / जीवन का विशिष्ट आश्रय होने के कारण **स्त्रोतस को जीवितायन** कहा गया है।

प्राणवहस्त्रोतोदुष्टि हेतु -

" क्षयात् संधारणाद्रौक्ष्याव्यायामात् क्षुधितस्य च। प्राणवाहीनि दुष्यन्ति स्रोतांस्यन्यैश्च दारुणैः ।। "

1) धातुओं का क्षय होने से
2) मल, मूत्र आदि वेगों को धारण करने
3) रुक्ष द्रव्यों के सेवन से
4) अधिक व्यायाम करने से
5) क्षुधा अथवा पिपासा वेग धारण करने से
6) दारुण कर्म का तात्पर्य पञ्चकर्म का अतियोग होने से मर्म पर आघात होने से, शीत स्थान पर शीतल द्रव्यों के सेवन करना आदि दारुण कर्म करने से शरीरस्थ वायु प्रकुपित होकर प्राणवहस्रोतो के दुष्टि लक्षण उत्पन्न करती है

उदकवहस्त्रोतोदुष्टि हेतु -

" औष्ण्यदामाद्धयात् पानाद अतिशुष्कान्नसेवनात्। अम्बुवाहीनि दुष्यन्ति तृष्णायाश्चतिपीडनात् ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) उष्ण आहार विहार के सेवन से
2) आम दोष के कारण
3) भय के कारण
4) मद्य आदि के पान से
5) अतिशुष्कान के सेवन से

(Trick)

तृष्णा अतिपीडन में उष्ण आहार विहार से आम होने का भय (मदिरा + अति शुष्क अन्न)

अन्नवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" अतिमात्रास्य चाकाले चाहितस्य च भोजनात्। अन्नवहीनि दुष्यन्ति वैगुण्यात् पावकस्य च। "

1) अतिमात्रा में भोजन
2) अकाल में भोजन
3) अहित भोजन
4) अग्नि की विगुणता

रसवहस्त्रोतसदुष्टि हेतु -

" गुरुशीतमतिस्निग्धमतिमात्रं समक्षताम्। रसवाहीनि दुष्यन्ति चिन्त्यानां चातिचिन्तनात्। "

1) गुरु भोजन का सेवन
2) शीतल द्रव्यों का सेवन
3) अतिस्निग्ध द्रव्यों का सेवन
4) अतिमात्रा में भोजन करना
5) समशन करना

रक्तवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" विदाहीन्यन्नपानानि स्निग्धोष्णानि द्रवाणि च। रक्तवाहीनि दुष्यन्ति भजतां चातपानलौ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) विदाही अन्नपान का प्रयोग
2) स्निग्ध भोजन का प्रयोग
3) उष्ण द्रव्यों का प्रयोग
4) द्रव द्रव्यों का प्रयोग
5) आतप व वायु के अधिक सेवन से

मांसवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" अभिष्यदीनि भोज्यानि स्थूलानि च गुरुणि च । मांसवाहीनि दुष्यन्ति भुक्त्वा च स्वपतां दिवा ।। "

1) अभिष्यन्दी भोजन
2) स्थूल भोजन का सेवन
3) गुरु भोजन का सेवन
4) भोजन करने के पश्चात् दिन में शयन करना

मेदोवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" अव्यायामादिवास्वप्नान्मेद्यानां चातिभक्षणात् । मेदोवाहीनि दुष्यन्ति वारुण्याश्चातिसेवनात् ।। "

1) अव्यायाम
2) दिवास्वप्न
3) मेद्य द्रव्यों का अधिक प्रयोग
4) वारुणी नामक मद्य का अधिक सेवन

(Trick)

मेम दिन में व्यायाम वारूणी (मदिरा) का अति भक्षण करती है

अस्थिवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" व्यायामादतिसंक्षोभादस्थनामतिविघट्टनात् । अस्थिवाहीनि दुष्यन्ति वातलानां च सेवनात् ।। "

1) व्यायाम
2) अतिसंक्षोभ
3) अस्थियों का अतिविघट्टन होने से
4) वात प्रधान आहार विहार का सेवन करने से

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मज्जावहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" उत्पेषादत्यभिष्यन्दादभिघातात् प्रपीडनात् । मज्जवाहीनि दुष्यन्ति विरुद्धानां च सेवनात् । "

1) उत्पेषाद्
2) अति अभिष्यन्द के कारण
3) अभिघात से
4) प्रपीडन से
5) विरुद्ध भोजन करने से

(Trick)

वात करते वाक करने से घटना में टूटि अस्थि में अति पीडा होता है ।

शुक्रवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" अकालयोनिगमनान्निग्रहादतिमैथुनात् । शुक्रवाहीनि दुष्यन्ति शस्त्रक्षाराग्निभिस्तथा । "

1) अकाल मैथुन
2) अयोनि में गमन
3) शुक्र वेग धारण करने से
4) अतिमैथुन करने से
5) शस्त्र क्षार व अग्नि के द्वारा

मूत्रवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" मूत्रतोदकभक्ष्यस्त्रीसेवनान्मूत्रनिग्रहात् । मूत्रवाहीनी दुष्यन्ति क्षीणस्याभिक्षतस्य च ।। "

1) मूत्र वेग धारण कर जल पीने से
2) मूत्रवेगधारण कर भोजन करने से
3) मूत्रवेगधारण करते हुये स्त्रीसेवन करना
4) रोगी के क्षीण होने पर
5) मूत्रवाहीस्रोतस पर आघात लगने से

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 8319811628 , 8962265728

पुरीषवहस्रोतो दुष्टि हेतु -

" संधारणादत्यशनादजीर्णाध्यशनात्तथा । वर्चोवाहीनि दुष्यन्ति दुर्बलाग्ने कृशस्य च । "

1) वेग संधारण
2) अति अशन
3) अजीर्णाशन करने से
4) अत्याशन करने से
5) कृश व्यक्ति की अग्नि अधिक दुर्बल होने से

स्वेदवहस्रोतोदुष्टि हेतु -

" व्यायामादतिसंतापाच्छीतोष्णाक्रम सेवनात् । स्वेदवाहीनि दुष्यन्ति क्रोधशोकभयैस्तथा । "

1) व्यायाम करने से
2) अतिसंताप से
3) अनुचित रुप से शीत उष्ण आहार विहार का सेवन करने से
4) क्रोध, शोक तथा भय के कारण

Ayurvedic Formulation

लक्षण	स्रोतस
क्षुधितस्य	प्राणवह स्रोतस
अतिशुष्कान्नसेवन	उदकवह स्रोतस
वैगुण्यात् पावकस्य च	अन्नवह स्रोतस
भजतां आतपानलौ , स्निग्धोष्णानि द्रवानि	रक्तवह स्रोतस
चिन्त्यानां चातिचिन्तनात्	रसवह स्रोतस
भुक्त्वा च स्वपतां दिवा	मांसवह स्रोतस
विरूद्धानां च सेवनात्	मज्जावह स्रोतस
क्षीणस्य अभिक्षतस्य , स्त्रीसेवन	मूत्रवह स्रोतस
दुर्बलाग्ने: कृशस्य च , अध्यशन	मलवह स्रोतस
क्रोध शोक भय	स्वेदवह स्रोतस

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

प्राणवहस्रोतोदृष्टि लक्षण -

" प्रदुष्टानां तु खल्वेषामिदं विशेष विज्ञानं भवति तद्यथा - अतिसृष्टमतिबद्धं कुपितमल्पाल्पमभीक्ष्णं सशब्दशूलमुच्छवसन्तं दृष्ट्वा प्राणवहान्यस्य स्रोतांसि प्रदुष्य नीति विद्यात् । "

1) अधिक लम्बा श्वसन
2) अधिक बद्ध या रुका हुआ श्वास
3) कुपित श्वास
4) थोड़ा थोड़ा परन्तु बार बार श्वास लेना
5) शब्द युक्त व उर: शूल युक्त श्वास लेना

उदकवहस्रोतोदृष्टि लक्षण -

" प्रदुष्टानां तु खल्वेषामिदं विशेष विज्ञानं भवति; तद्यथा जिह्वातालवोष्ठकण्ठक्लोमशोषं पिपासां चातिप्रवृद्धां दृष्ट्वोदकवह्यन्यल्यस्रोतांसि प्रदुष्टानीति विद्यात् । "

1) जिहा, तालु, औष्ठ, कण्ठ, क्लोम में शोष
2) गम्भीर पिपासा उत्पन्न होना

अन्नवहस्रोतसदुष्टि लक्षण -

" अनन्नाभिलाषणमरोचकाविपाकी छदि च दृष्ट्वाऽन्नवहान्यस्य स्रोतांसि प्रदुष्टानीति विद्यात् । "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

1) अन्न की अभिलाषा न होना
2) अरुचि
3) अविपाक
4) छर्दि

मूत्रवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" अतिसृष्टंतिबद्धं प्रकुपितमल्पाल्पमभीक्ष्णं वा बहलं सशूलं मूत्रयन्तं दृष्टवा मूत्रवहान्यस्य स्रोतांसि प्रदुष्टानीति विद्यात् । "

1) मूत्र की अधिक प्रवृत्ति होना
2) मूत्र का रुक रुक कर आना
3) विकृत मूत्र आना
4) अल्प मात्रा में परन्तु बार बार शूल के साथ मूत्र की प्रवृत्ति होना

पुरीषवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" कृच्छ्रणाल्पाल्पं सशब्दशूलमतिद्रवतिग्रथितमतिबहु चोपविशन्तं दृष्ट्वा पुरीषवहान्यस्य स्रोतांसि प्रदुष्टानीति विद्यात् । "

1) कृच्छ्रता से मल की प्रवृत्ति होना
2) अल्प मात्रा में मल प्रवृत्ति
3) शूल युक्त मल की प्रवृत्ति
4) अतिग्रथित मल प्रवृत्ति
5) अति मात्रा में मल प्रवृत्ति
6) बार बार मल की प्रवृत्ति होना

स्वेदवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" अस्वेदनमतिस्वेदनं पारुष्यतिश्लक्ष्णतामङ्गस्य परिदाह लोमहर्षच दृष्ट्वा स्वेदवहान्यस्य स्रोतांसि प्रदुष्यनीति विद्यात् । "

1) स्वेद की सर्वथा प्रवृत्ति नहीं होना
2) स्वेद की अधिक प्रवृत्ति होना
3) त्वचा का परुष अथवा कठिन होना
4) अतिश्लक्ष्ण अथवा चिपचिपा
5) अंगों मे दाह
6) लोमहर्ष

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रसवहस्त्रोतोदुष्टि लक्षण -

" अश्रद्धा अरुचिश्च आस्यवरस्य अरसज्ञता। हल्यसो गौरवं तन्द्रा सांगमर्दो ज्वरस्तमः ॥

पाण्डुत्वं स्रोतसां रोधः क्लैव्यं साद कृशांगता। नाशोऽग्नेरयथाकालं वलयः पलितानि च ॥ "

अश्रद्धा, अरुचि, आस्यवरस्य, अरसज्ञता, हल्लास, गौरवं, तन्द्रा, अंगमर्द, ज्वर, तम, पाण्डु, स्रोतोवरोध, क्लैव्य, अंगसाद, कृशाङ्गता, अयथाकाल में वलि और पालित्य होना

रक्तवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" कुष्ठवीसर्पपिडकारक्तपित्तमसृग्दरः। गुदमेढ्स्यपाकश्च प्लीहागुलमोऽथ विद्रधिः। नीलिका कामलाव्यङ्गः पिप्लवस्तिलकालकाः ॥ दश्रर्मदलं श्वित्रं पामा कोठास्त्रमण्डलं रक्तप्रदोषाज्जायन्ते ॥ "

कुष्ठ, विसर्प, पिडका, रक्तपित्त, असृग्दर, गुद पाक, मेढ़ पाक, मुखपाक, प्लीहावृद्धि, रक्तगुल्म, विद्रधि, न्यच्छ, व्यंग, नीलिका, तिलकालक, पिप्लु, इन्द्रलुप्त, कामला, पामा, चर्मदल, कोठ, श्वित्र, वातरक्त, रक्तमण्डल, मषक, दद्रु, अर्श, अर्बुद

मांसवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" अधिमांसार्बुद कीलं गलशालूकशुण्डिके। पूतिमांसालजीगण्डगण्ड मालोपजिव्हिका। "

अधिमांस, अर्बुद, कील, गलशालूक, गलशुण्डिका, पूतिमांस, अलजी, गलगण्ड, गण्डमाला, उपजिव्हा

मेदोवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" निन्दितानि प्रमेहाणां पूर्वरुपाणि यानि च। "

अष्ट निन्दति व्याधि होना, प्रमेह के पूर्वरुप दिखाई देना, ग्रन्थि वृद्धि, गलगण्ड, अर्बुद, (मेदाज औष्ठ रोग), मधुमेह, अतिस्थौल्य, अतिस्वेद प्रवृत्ति

अस्थिवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" अध्यस्थिदन्तौ दन्तास्थिभेदशूलं विवर्णता । केशलोमनखश्मश्रुदोषाश्चास्थिप्रदोषजाः ।। "

अध्यस्थि, अधिदन्त, दन्तभेद, अस्थिभेद, अस्थिशूल, विवर्णता, केश, लोम, नख, श्मश्रु आदि में दोष उत्पन्न होना

मज्जावहस्त्रोतोदुष्टि लक्षण -

" रुक् पर्वणां भ्रमो मूर्छा दर्शनं तमसस्तथा । अरूषां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम् । "

पर्वो में पीड़ा होना, भ्रम, मूर्छा, आंखो के आगे अंधेरा आना, सधिंयो पर स्थूल मूल वाली फुन्सियां होना।

शुक्रवहस्रोतोदुष्टि लक्षण -

" शुक्रस्य दोषात् क्लैब्यमहर्षणम् । रोगि वा क्लीबमल्पायुर्विरुपं वा प्रजायते ।।

न चास्य जायते गर्भः पतति प्रस्रवत्यपि । शुक्रं हि दुष्टं सापत्यं सदारं बाधते नरम् ।। "

शुक्र दुष्टि होने पर (क्लैव्य) अहर्षण , (शुक्रमेह), शुक्राश्मरी (शुक्रदोष), विविध गर्भ विकार आदि लक्षण उत्पन्न होते है

Ayurvedic Formulation

चिकित्सा -

प्राणवह स्रोत में - दुष्टि या विकार होने पर श्वासरोग में कही गई चिकित्सा करे

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उदकवह स्रोत में - दोष या विकार होने पर तृष्णा को दूर करने वाली चिकित्सा करे

अन्नवह स्रोत के रोगों में - ' आम ' विकार में की जाने वाली जठराग्नि दीपन और पाचन चिकित्सा करे

मूत्रवह स्रोत की विकृति में - मूत्रकृच्छ्र की चिकित्सा करे

मलवह स्रोत की विकृति में - अतिसाररोग की चिकित्सा करे

स्वेदवह स्रोत के दूषित होने पर - ज्वररोग की चिकित्सा करे

रसज रोगों का चिकित्सासूत्र -

" रसजानां विकाराणां सर्व लङ्गनमौषधम् । "

रसज रोगों में सभी प्रकार के लंघन (वमन, विरेचन, निरूह नस्य पिपासा वायुसेवन आतपसेवन, पाचन उपवास और व्यायाम) का पालन करना ही चिकित्सा है।

रक्तज रोगों की चिकित्सा -

" कुर्याच्छोणितरोगेषु रक्तपित्तहरी क्रियाम् । विरेकमुपवासं च सावणं शोणितस्य च ॥ "

रक्तज रोगों में रक्तपित्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिए। रक्त की विकृति के अनुसार विरेचन ,उपवास या रक्तमोक्षण करना चाहिए।

मांसज रोगों का चिकित्सा -

" मांसजानां तु संशुद्धिः शस्त्रक्षाराग्निकर्म च। अष्टीनिन्दितिकेऽध्याये मेदोजानां चिकित्सितम् ।। "

मांसज रोगों में वमन आदि संशोधन तथा शस्त्रकर्म , क्षारकर्म और अग्निकर्म द्वारा चिकित्सा की जाती है।

Ayurvedic Formulation

मेदज रोग चिकित्सा - **" प्रजागरं व्यवायं च व्यायाम चिन्तनानि च। "**

(1) प्रजागर (2) व्यवायं (3) व्यायाम (4) चिन्ता

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अस्थिरोगों की चिकित्सा -

" अस्थ्याश्रयाणां व्याधीनां पञ्चकर्माणि भेषजम् । बस्तयः क्षीरसौषि तिक्तकोपहितानि च ॥ "

अस्थियों में उत्पन्न रोगों की चिकित्सा वमन आदि पंचकर्म बस्तिप्रयोग और तिक्त औषधियों से सिद्ध दूध और घी आदि का सेवन करना है।

मज्जा रोगों की चिकित्सा एवं शुक्र रोगों की चिकित्सा -

" मज्जशुक्रसमुत्थानामौषधं स्वादुतिक्तकम । अन्नं व्यवायव्यायामी शुद्धिः काले च मात्रया ।। "

मज्जा और वीर्य में उत्पन्न रोगों का औषध, मधुर और तिक्त रसवाले अन्न और औषध का सेवन मैथुन, व्यायाम और उचित काल (वसन्त और शरद) में वमन विरेचन आदि का कराना है।

खवैगुण्य व स्त्रोतो दुष्टि

खवैगुण्य - खवैगुण्य अर्थात स्त्रोतोवैगुण्य

अर्थात् आकाश युक्त स्थान वैगुण्य - विकृति उत्पन्न होना।

" कुपितानां हि दोषाणां शरीरे परिधावताम् । यत्र संग खवैगुण्यात् व्याधिस्तत्र उपजायते ।। "

अहितकर आहार विहार के विशेष अंश के सेवन से ख वैगुण्य होता है अर्थात् स्रोतसों में विकृति उत्पन्न होती है। जिससे परिभ्रमण करते हुये दोष स्रोतो में रुक जाते है। इस प्रकार रुके हुये दोष स्रोतो में धातुओं के परिवहन को भी अवरोधित करते है और व्याधि को उत्पन्न करते है।

जैसे - वृक्काश्मरी वृक्क में निर्मित हुये मूत्र के प्रवाह को अवरोधित करती है। जिससे मूत्र बाहर निकलने की बजाय वृक्कों में एकत्रित होने लगता हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

स्त्रोतो दुष्टि - अहितकर आहार विहार के सेवन से दोष विषम होकर संचय, प्रकोप, प्रसर की अवस्था तक पहुँच जाते हैं किन्तु व्याधि उत्पन्न नहीं कर पाते हैं। केवल दोषो की विषमावस्था के ही लक्षण उत्पन्न होते हैं। ख वैगुण्य होने पर प्रकुपित दोष वही रुकते है उस स्रोतस में स्थित धातु मल आदि को दूषित करके दृष्य रूप में परिवर्तित कर देते है। जिससे कुछ समय पश्चात् दोष दूष्य समूर्च्छना की अवस्था उत्पन्न होती है। यह व्याधि की स्थानसंश्रयावस्था भी कहलाती है (दोष दुष्ट होकर न केवल धातुओं को कुपित करते है, अपितु अपने समीपवर्ती स्रोतसों को विकृत या दूषित करके उस स्थान पर रोग उत्पन्न करते है।

खवैगुण्य	स्रोतोदुष्टि
संचय, प्रकोप, प्रसर के कारण खवैगुण्य उत्पन्न होता है।	**स्थान संश्रय** अवस्था से स्रोतोदुष्टि उत्पन्न होती है।
यह **प्रथम अथवा प्रारम्भिक** अवस्था है।	**यह उत्तर** अवस्था है।
प्रारम्भिक अवस्था होने के कारण इसके कोई **व्यक्त लक्षण** दिखाई **नहीं** देते।	स्रोतोदुष्टि के **चार भेद** होते हैं। जो स्पष्ट रूप से व्यक्त होते हैं (अतिप्रवृति, संग, विमार्गगमन सिराग्रन्थि)
दोष प्रकोपक आहार-विहार अथवा बीज दोष आदि कारणों से खवैगुण्य उत्पन्न होता है।	दोष प्रकोपक निदानों का **अधिक सेवन** करने से स्रोतोदुष्टि उत्पन्न होती है।
स्रोतों में स्थित धात्वाग्नि दुष्टि होने से स्रोतों के सामान्य **कर्मों में विषमता** उत्पन्न होती है।	धातुओं का उत्तरोत्तर **सम्यक परिणमन् नही** होता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3.2.2 DIABETES MELLITUS

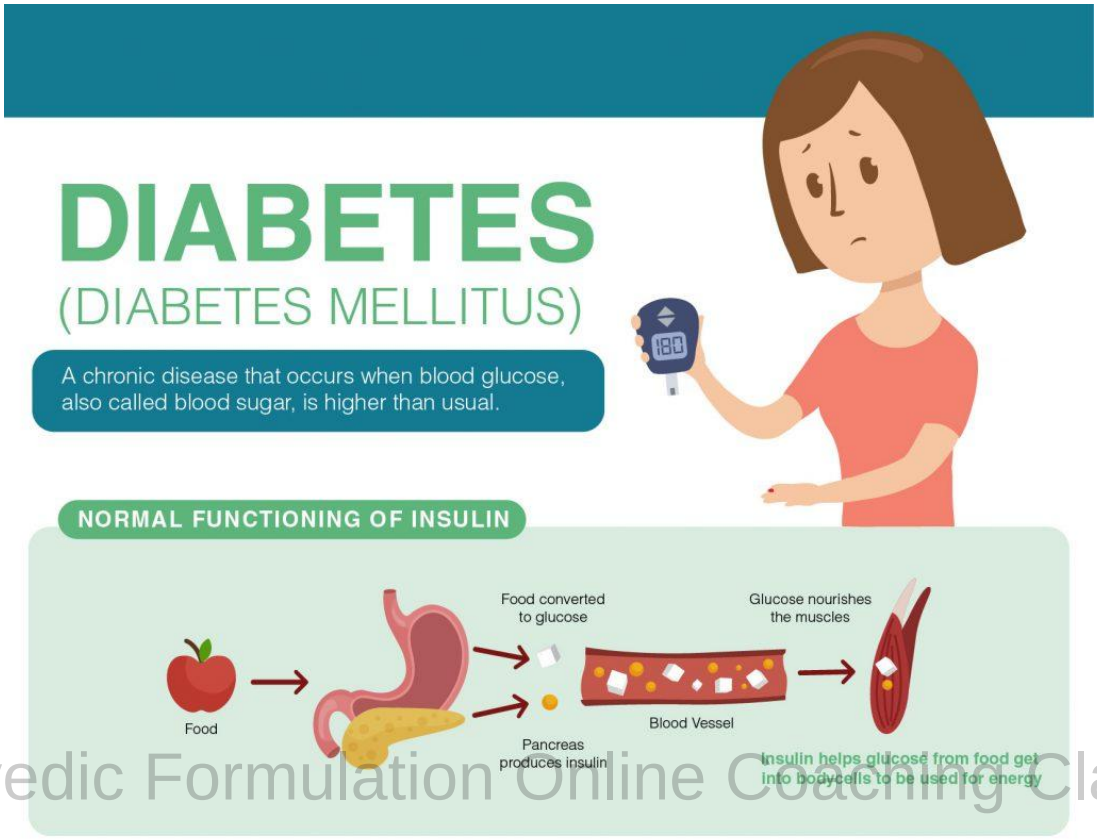
DIABETES
(DIABETES MELLITUS)
A chronic disease that occurs when blood glucose, also called blood sugar, is higher than usual.
NORMAL FUNCTIONING OF INSULIN
Food
Food converted to glucose
Pancreas produces insulin
Blood Vessel
Glucose nourishes the muscles
Insulin helps glucose from food get into body cells to be used for energy

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

DEFINITION -

- Group of Metabolic Disorders
- Share common features of Hyperglycemia

Hyperglycemia in Diabetes is result of

- Defects in Insulin Secretion
- Defects in Insulin Action
- Both Mentioned Earlier

DIAGNOSIS –

Normal Glucose Level = 70 – 120 mg / dl

(According To American Diabetes Association, Diagnostic criteria for diabetes include)

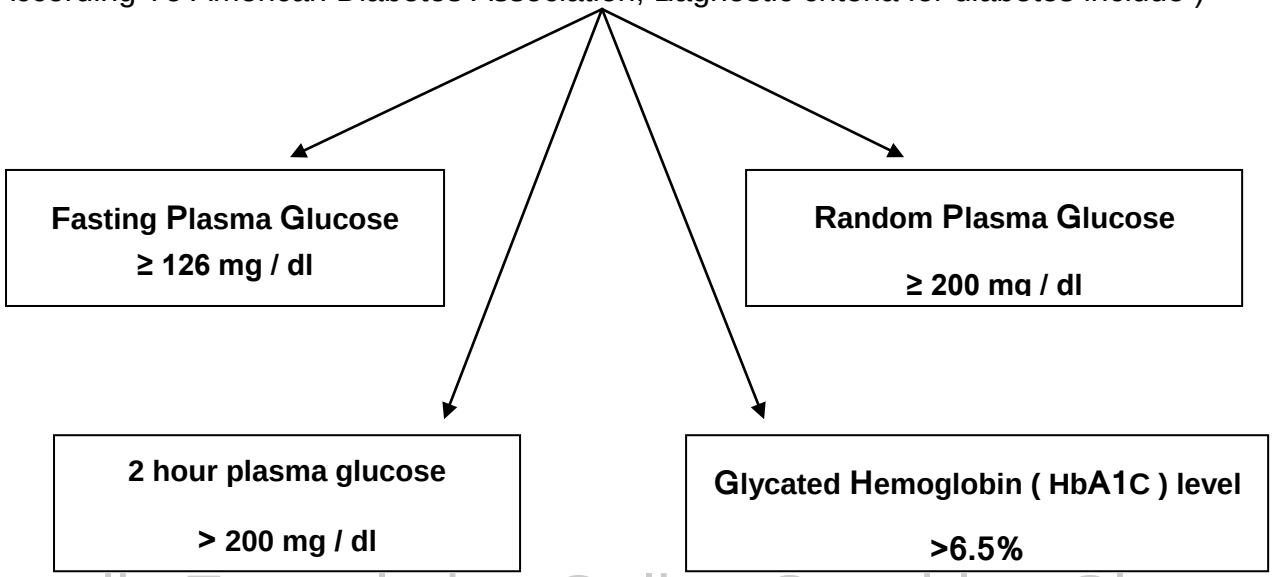
Fasting Plasma Glucose
≥ 126 mg / dl
Random Plasma Glucose
≥ 200 mg / dl
2 hour plasma glucose
> 200 mg / dl
Glycated Hemoglobin (HbA1C) level
>6.5%

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

Prediabetes -

	HbA1c (percent)	Fasting Plasma Glucose (mg/dL)	Oral Glucose Tolerance Test (mg/dL)
Diabetes	≥ 6.5	≥ 126	≥ 200
Prediabetes	5.7 – 6.4	100 - 125	140 – 199
Normal	~ 5.7	≤ 99	≤ 139

Glucose Homeostasis - Normal glucose homeostasis is tightly regulated by three interrelated processes.

- Glucose production in the Liver.
- Glucose uptake and utilization by peripheral tissues , chiefly skeletal muscles.
- Actions of insulin and counter regulatory hormones , including glucagon , on glucose uptake and metabolism.

Hormonal Mechanism -

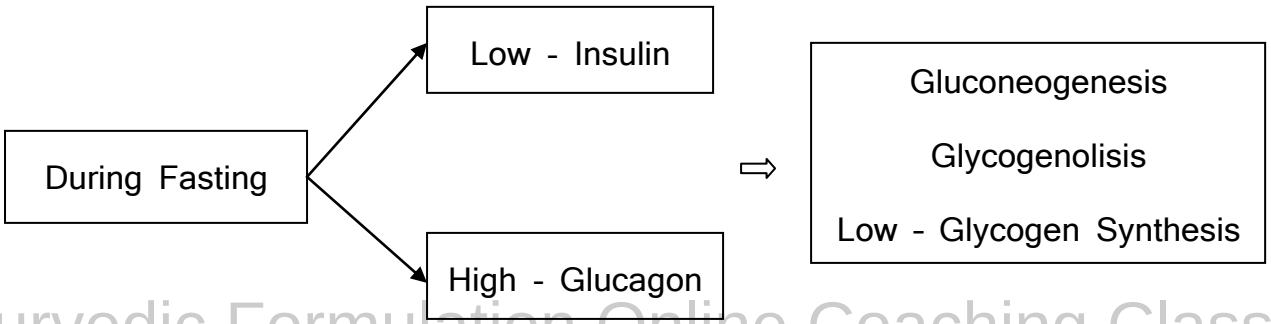

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

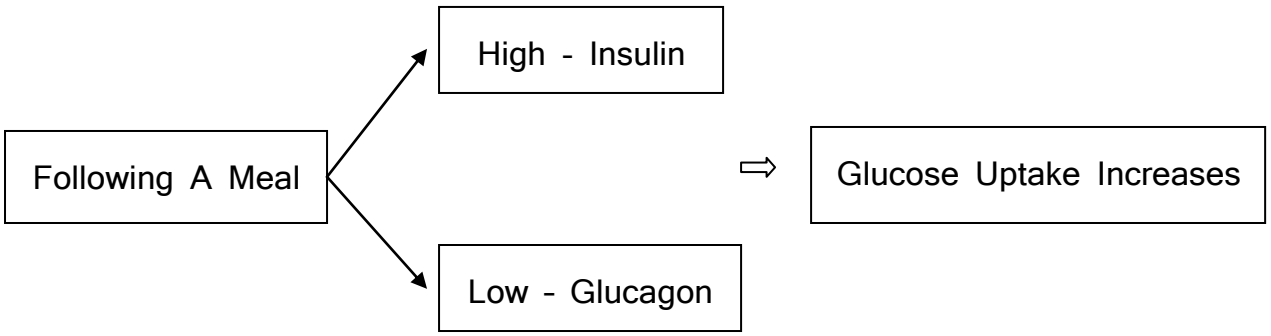

Pathogenesis of DM 1 - It is an Autoimmune Disease.

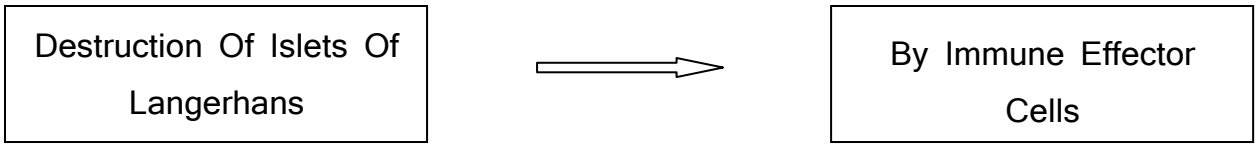

★ Immune effector cells react against ENDOGENOUS *beta* cells antigens.

Pathogenesis of DM 2 – It involves interplay of genetic and environmental factors.

Genetic factors – First degree relatives have 5-10 times higher risk of developing type 2 diabetes than those without a family history.

Environmental factors : Important risk factor – **Obesity**

Particularly central or visceral obesity contributes to

- Cardinal metabolic abnormalities of diabetes
- Insulin resistance early in disease
- Sedentary lifestyle is another risk factor for diabetes.

Metabolic defects in DM : The two cardinal metabolic defects

- Response of peripheral tissues to insulin especially skeletal muscle, adipose tissue and liver. It is known as **Insulin Resistance**.
- Inadequate insulin secretion in the face of insulin resistance and hyperglycemia . (***Beta* Cell dysfunction**)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

Insulin Action In Blood Glucose Level -

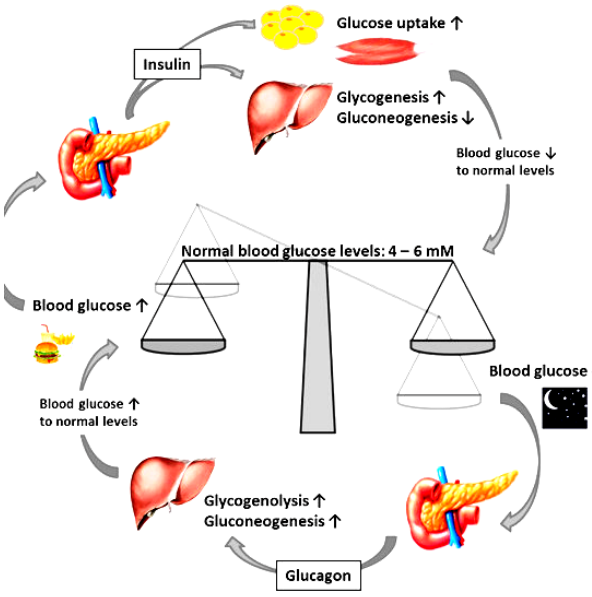

Insulin resistance results in development of Hyperglycemia by following mechanism –

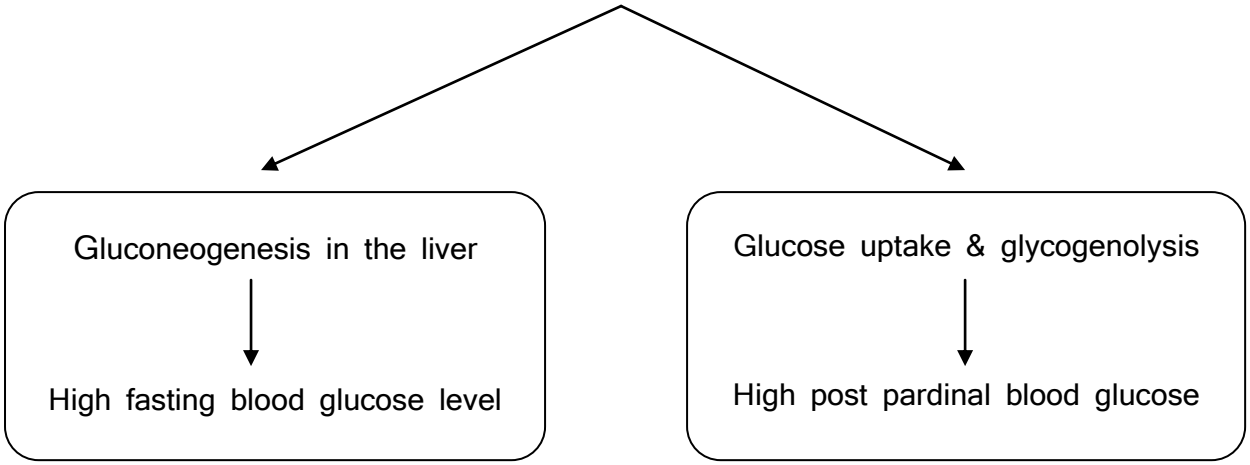
Gluconeogenesis in the liver
High fasting blood glucose level
Glucose uptake & glycogenolysis
High post pardinal blood glucose

Clinical Features –

- **Type 1 –**
  - Occur at any age exogenous
  - Requirement of insulin may be minimal because of ongoing endogenous insulin secretion (**Honeymoon Period**).
  - There after ß cell reserve is exhausted and insulin requirement ↑↑

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

- **Type 2 –**
  - Patients are typically older than 40 years and frequently obese.
  - Frequency is being increased in children and adolescents with sedentary lifestyle.
  - Unexplained fatigue , dizziness , blurred vision are the symptoms of diabetes.

Triad of Diabetes Mellitus –

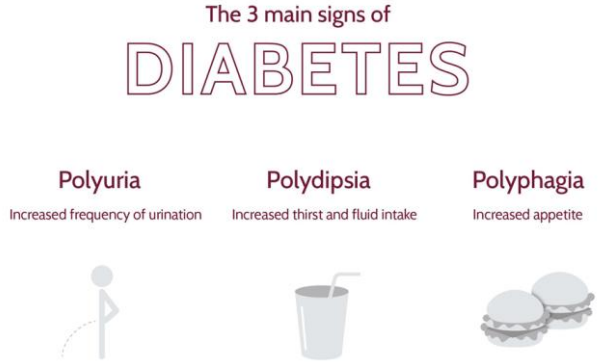

Major Complications of Diabetes

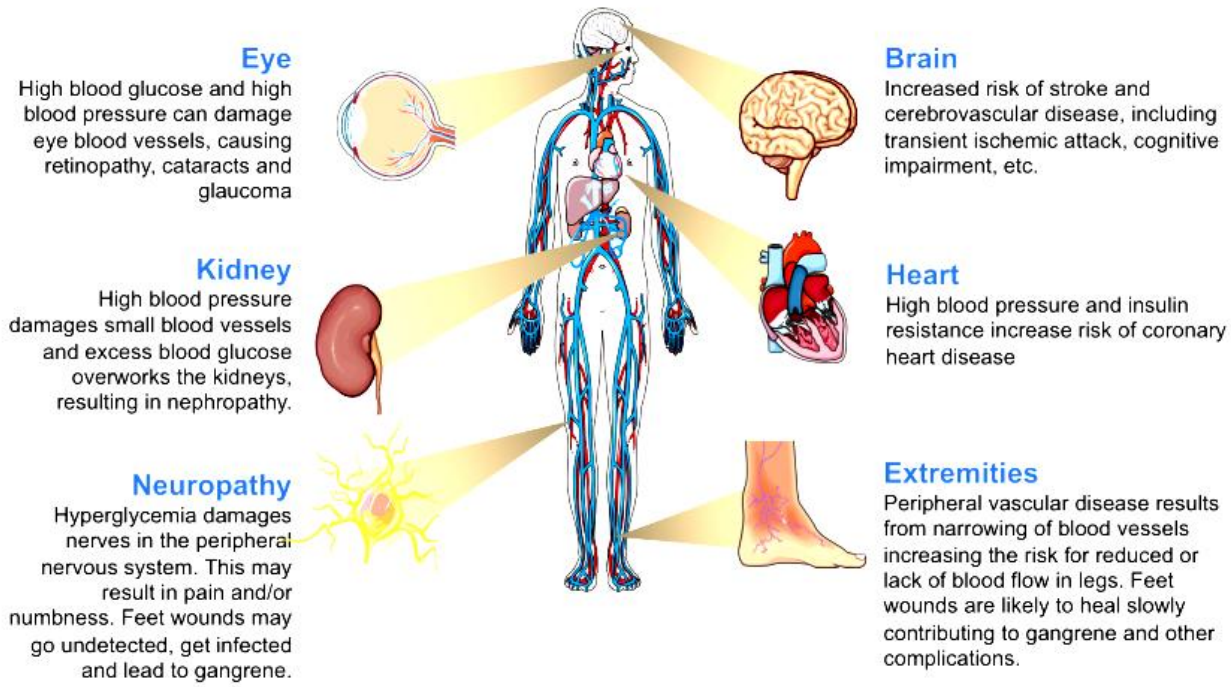
Microvascular
Macrovascular
Eye
High blood glucose and high blood pressure can damage eye blood vessels, causing retinopathy, cataracts and glaucoma
Kidney
High blood pressure damages small blood vessels and excess blood glucose overworks the kidneys, resulting in nephropathy.
Neuropathy
Hyperglycemia damages nerves in the peripheral nervous system. This may result in pain and/or numbness. Feet wounds may go undetected, get infected and lead to gangrene.
Brain
Increased risk of stroke and cerebrovascular disease, including transient ischemic attack, cognitive impairment, etc.
Heart
High blood pressure and insulin resistance increase risk of coronary heart disease
Extremities
Peripheral vascular disease results from narrowing of blood vessels increasing the risk for reduced or lack of blood flow in legs. Feet wounds are likely to heal slowly contributing to gangrene and other complications.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

DIFFERENCE BETWEEN IDDM & NIDDM

	IDDM	NIDDM
FREQUENCY	10%	90%
FAMILY HISTORY	Less than 1/5	over 1/2
AGE	under 40, most under 20	Most over 40
PHYSIQUE	Normal or thin	Usually obese
CLINICAL APPEARENCE	acute onset , Rapid progress	Delayed Recognition gradual progress
INSULIN	Low & absent	normal early, later progress
TREATMENT	Insulin & diet	diet , exercise , some drugs

3.1. PATHOLOGY & ITS DIVISIONS -

It is a **bridge between clinical practice and basic science**, and it involves the **investigation of the causes (etiology) of disease** as well as the underlying **mechanisms (pathogenesis**) that result in the presenting signs and symptoms of the patient.

IMPORTANT TERMS -

- **PATIENT** - Person affected by the disease.
- **LESIONS** - Characterstic changes in tissues or cells produced by disease.
- **MORPHOLOGY** - Examination of diseased tissue by naked eyes or by microscopic examination.
- **ETIOLOGY** - Casual factors responsibles for lesions.
- **PATHOGENISIS** - Mechanism by which lesions are produced.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

- **DIAGNOSIS** - Identification of the nature of an illness or other problem by examination of the symptoms.
- **PROGNOSIS** - An opinion, based on medical experience, of the likely course of a medical condition.

3.1.1 DIVISIONS OF PATHOLOGY - (CONVENTIONAL)

1. **GENERAL PATHOLOGY** - It deals with general principles of diseases.

2. **SYSTEMIC PAYTHOLOGY** - Study of diseases pertaining to specific organs and body systems

3.1.2 DIVISIONS OF PATHOLOGY - (IN GENERAL)

1. **MORPHOLOGICAL BRANCHES -** Microscope is used as an essential tool for studying.

EXMAPLES -

- **HISTOPATHOLOGY**
- **CYTOPATHOLOGY**
- **HEMATOLOGY**

2. **NON MORPHOLOGICAL BRANCHES -** Qualitative, semi quantitative and quantitative determinations are done at laboratory and microscope may also be used for it.

EXMAPLES -

- **CLINICAL PATHOLOGY**
- **CLINICAL BIOCHEMISTRY**
- **MICROBIOLOGY**
- **MEDICAL GENETICS**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

3.2 CELLULAR ADAPTATION & CELL INJURY

3.2.1 CELLULAR ADAPTATION -

Cells are active participants in their environment, constantly adjusting their structure and function to accommodate according to changing demands. They maintain normal homeostasis. As cells encounter physiologic stresses or pathologic stimuli, they can undergo adaptation, and achieving a new steady state and preserving viability and function.

TYPES OF ADAPTATION -

- **HYPERTROPHY - Size Of Cells Increses**
- **HYPERPLASIA - No. of Cells Increses**
- **ATROPHY - Size of Cells Is Reduced**
- **METAPLASIA - One Adult Cell Replaced By Another Cell**
- **DYSPALSIA - Disodered Cellular Development**

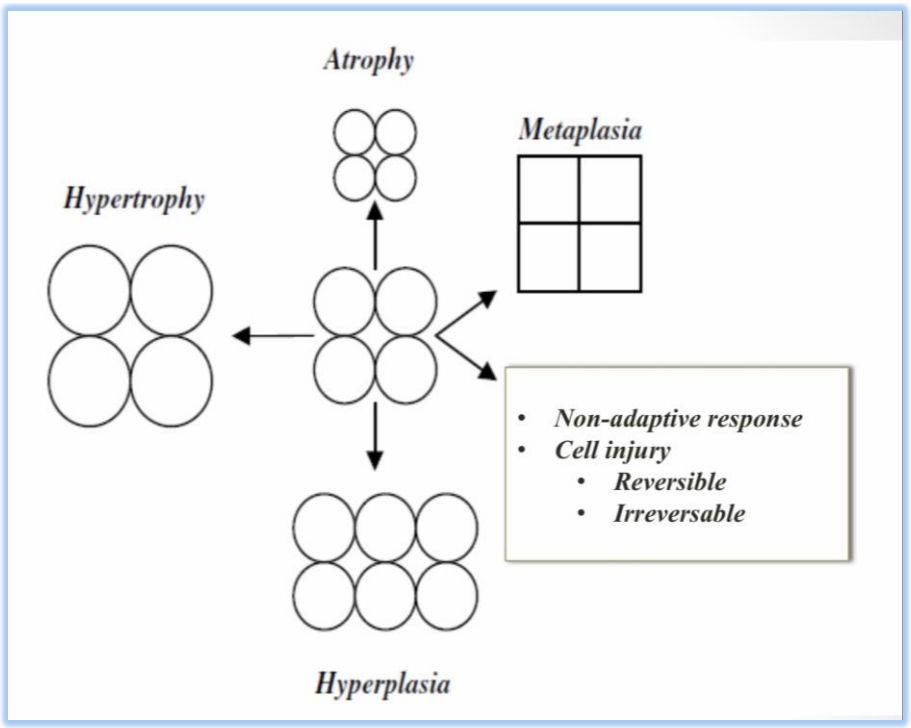

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

3.2.2 CELL INJURY -

When the cells are exposed to **severely damaging agent** that **no longer adaptation can be done,** cell may get injured.

Causes of Cell Injury

Most injurious stimuli can be grouped in the following categories.

- **Oxygen deprivation -** It is the common cause of cell injury in cell death. Cells become dead due to **hypoxia or oxygen deficiency**.
- **Genetic defects -** Genetic defects may cause cell injury because of **deficiency of functional protein.**
- **Nutritional imbalances - Nutritional deficiencies** is a major cause of cell injury. **Excess of nutrition** are also important causes of morbidity and mortality. Eg - Obesity

- **Physical agents** - Trauma, extremes of temperature, radiations, electric shocks and sudden changes in atmospheric pressure all have wide ranging effects on cells.

TYPES OF CELL INJURY -

- **REVERSIBLE CELL INJURY**
- **IRREVERSIBLE CELL INJURY**

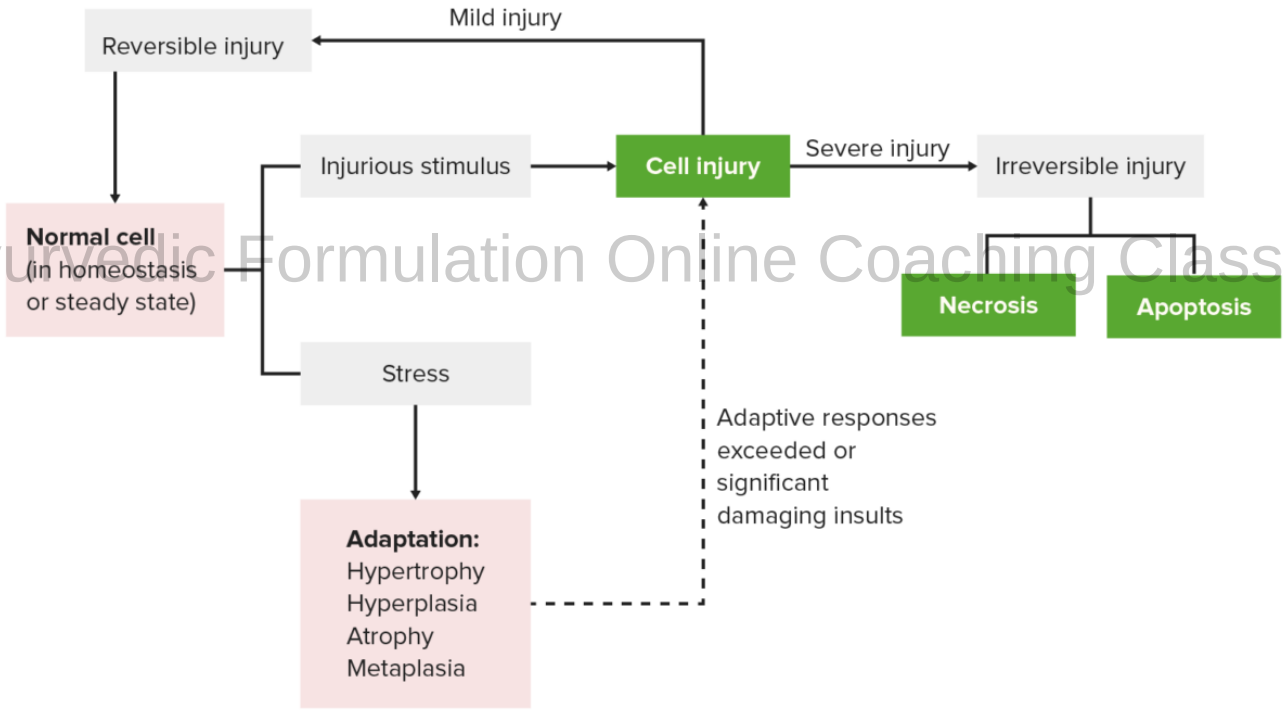

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

Example - Low doses of toxins, or a **brief duration of ischemia** may lead to **reversible cell injury**, whereas **larger toxin** doses or **longer ischemic interval** may result in **irreversible cell injury**.

PATHOGENESIS OF CELL INJURY -

- **Decreased Cellular ATP -** ATP is essential required for various cellular functions. Ischemia and hypoxia, causing decrease ATP generation.

  1. Sodium Potassium Pump Activity Reduced- The energy dependent sodium potassium pump operating at the plasma membrane allows active transaport of sodium out of the cell and diffusion of potassium into the cell. Lowered ATP lead to increase intracellular accumulation of sodium and efflux of potassium. The accumulation of sodium in the cell leads to increase intracellular water to maintain iso-osmotic condition, causing cell swelling and dilation of the ER.

  2. **Reduced Intra Cellular pH** - Due to low oxygen to the cell, aerobic respiration fails so there is a compensatory increase in anaerobic glycolysis in an attempt to maintain the cell's energy sources. As a consequence, intracellular glycogen stores are rapidly depleted, and lactic acid accumulates, leading to decreased intracellular pH and decreased activity of many cellular enzymes.

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

- **Failure of the Ca2+ Pump** - It leads to influx of Ca2+, with damaging effects on numerous cellular components, as it causes structural disruption of the protein synthetic apparatus. Ultimately, there is irreversible damage to mitochondrial and lysosomal membranes, and the cell undergoes necrosis.

- **Reduction in Protein Synthesis** - Prolonged depletion of ATP cause structural disruption of protein synthesis apparatus, so that detachment of ribosome occured from endoplasmio reticulum this will cause reduction in protein synthesis.

- **Accumulation of Oxygen Derived free Radicles -** When cells use oxygen to generate energy, free radicals are created as a consequence

of ATP (adenosine triphosphate) production by the mitochondria. The free radical can damage lipid, protein and nucleic acids. An imbalance between free radical generating and radical scavenging system results in oxidative stress.

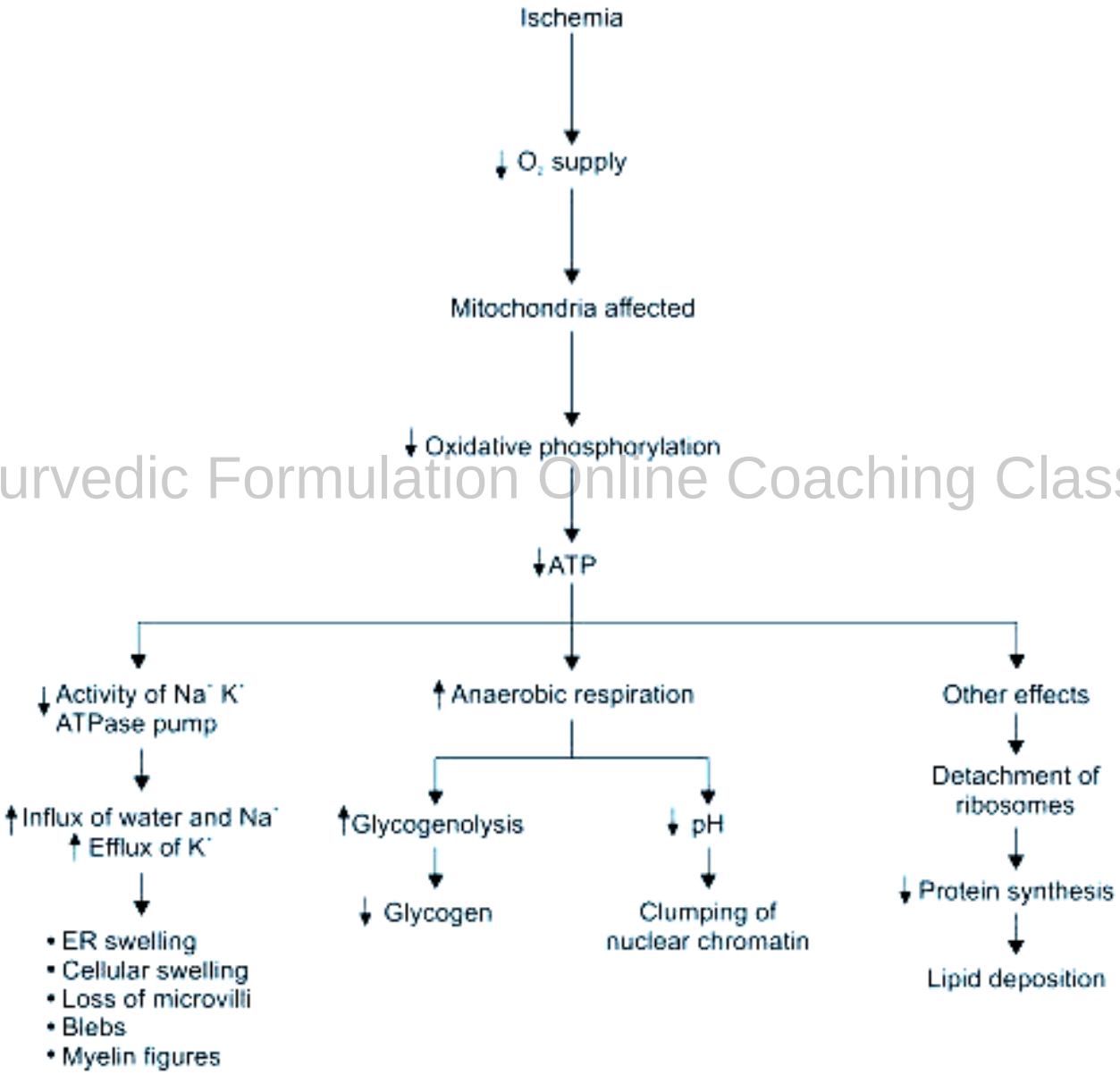

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

NECROSIS - (DEATH OF CELLS)

The morphological appearance of necrosis is a result of **two concurrent process-**

- **Enzymatic Digestion Of Cells**
- **Denaturation Of Intracellular Protiens**

➢ **Enzymatic Digestion Of Cells -**

Enzyme used in the process are derived from two sources -

a) From the lysosome of the dead cells, these lysosome digest the dead cell, this process called as **AUTOLYSIS.**

b) From the lysosome of immigrant leucocytes which arrived near dead cell. Leucocytic lysosome can also digest the dead cell, this process called as **HETEROLYSIS.**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

➢ **Denaturation Of Intracellular Protiens -** This process require hours to develop denaturation, so immediately after cell death there are no detectable necrotic change. The earliest histological evidence of myocardial necrosis manifest atleast after 4 to 12 hours.

TYPES OF NECROSIS -

1. **Coagulative Necrosis -** This is most common type of necrosis. It is most frequently caused by sudden cessation of blood flow (ischemia) in organs such as heart (Myocardial infarction (MI), Kidney, Spleen).

2. **Liquefication Necrosis** - It is necrotic degradation of tissue that rapidly under go softening and liquefication because of the action of hydrolytic enzymes. It occurs after infection of suppurative inflammation and in ischemic necrosis in brain.

3. **Caseous Necrosis** - It is variants of coagulating necrosis. It is most commonly encountered when cell death is attributed to certain organism like mycobacterium tuberculosis (TB) it called as caseous because of there cheesy white appcarance of the area of necrosis.

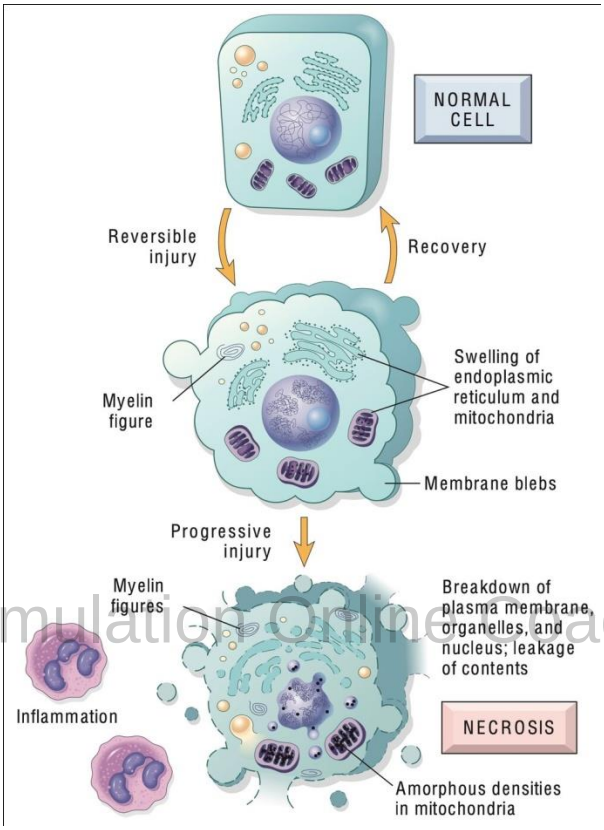

Ayurvedic Formulation Online Teaching Classes

APOPTOSIS - "FALLING OFF" LIKE LEAVES FROM TREE

It is a important process in health and disease by which **abnormal and unwanted cells are eliminated.**

- **Apoptosis in Health** - The Programmed Destruction of cells during embryogenesis, including implantation, organogenesis, developmental involution, and metamorphosis. The term **" Programmed Cell Death"** was originally coined to denote death of specific cell types at defined times during the development of an organism.

- **Apoptosis in Disease** - In tumor apoptosis and proliferative rates together control the rate of tumors growth.

3.2 OBESITY

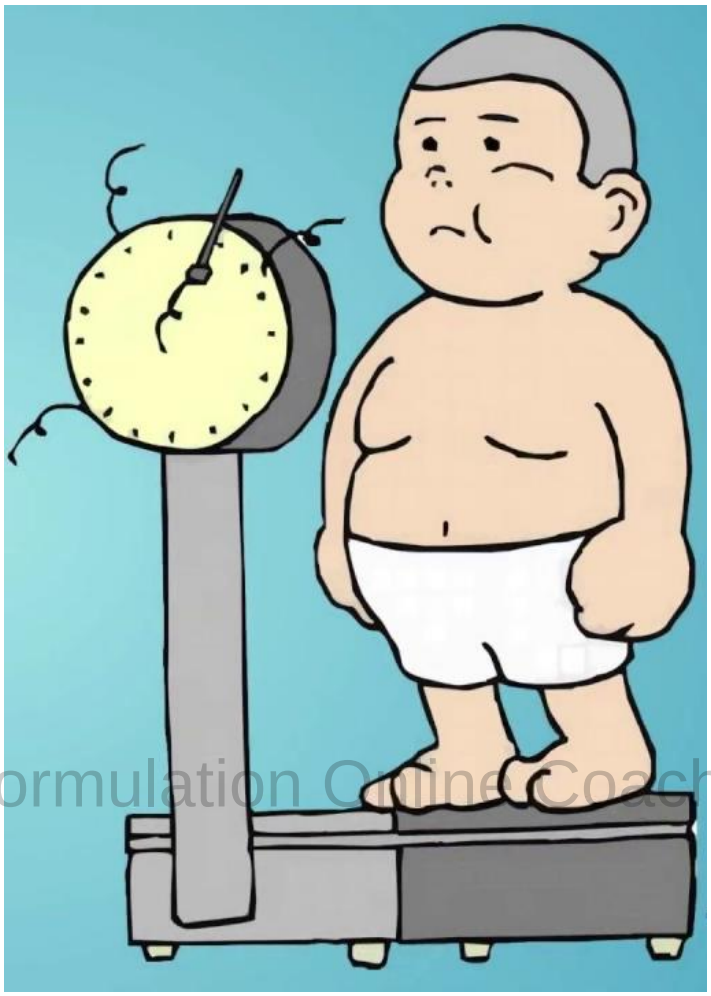

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

Accumulation of adipose tissue that is of sufficient magnitude to impair health.

★ Important –

- Body weight
- Distribution of the stored fat

➢ Central or visceral obesity - Higher risk for several disease.

➢ Central Obesity is more harmful than diffused obesity (accumulation of excess fat diffusely in subcutaneous tissue).

➢ **Central Obesity -** Obesity in which fat accumulates in the trunk and in the abdominal cavity.

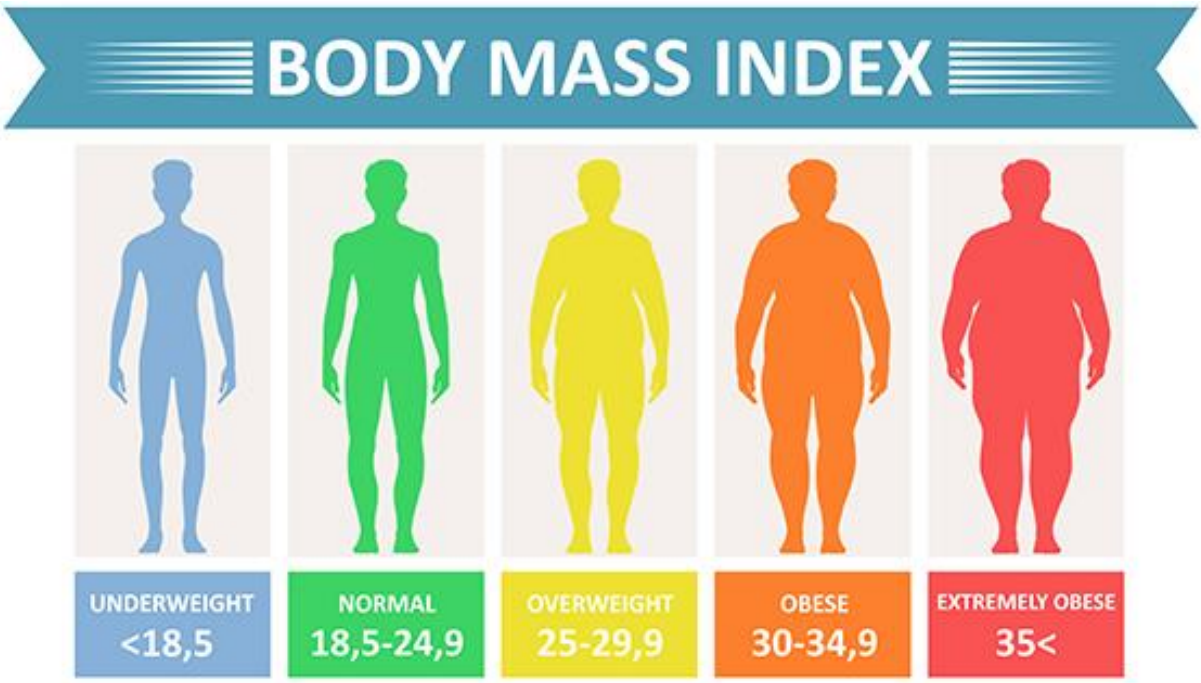

OBESITY AND BODY MASS INDEX

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

BMI	CLASSIFICATION
<18.4	Under Weight
18.5-24.9	Normal Weight
25.0-29.9	Over Weight
30.0-34.9	Class 1 Obesity
35.0-39.9	Class 2 Obesity
>40.0	Class 3 Obesity

Etiopathogenesis –

★ **Calories Intake > Calories Consumption**

Above situation can arise due to following conditions.

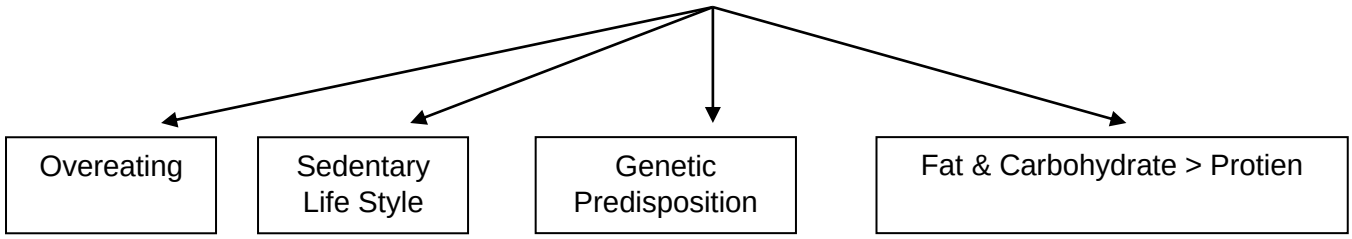

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

Other Types Of Obesity

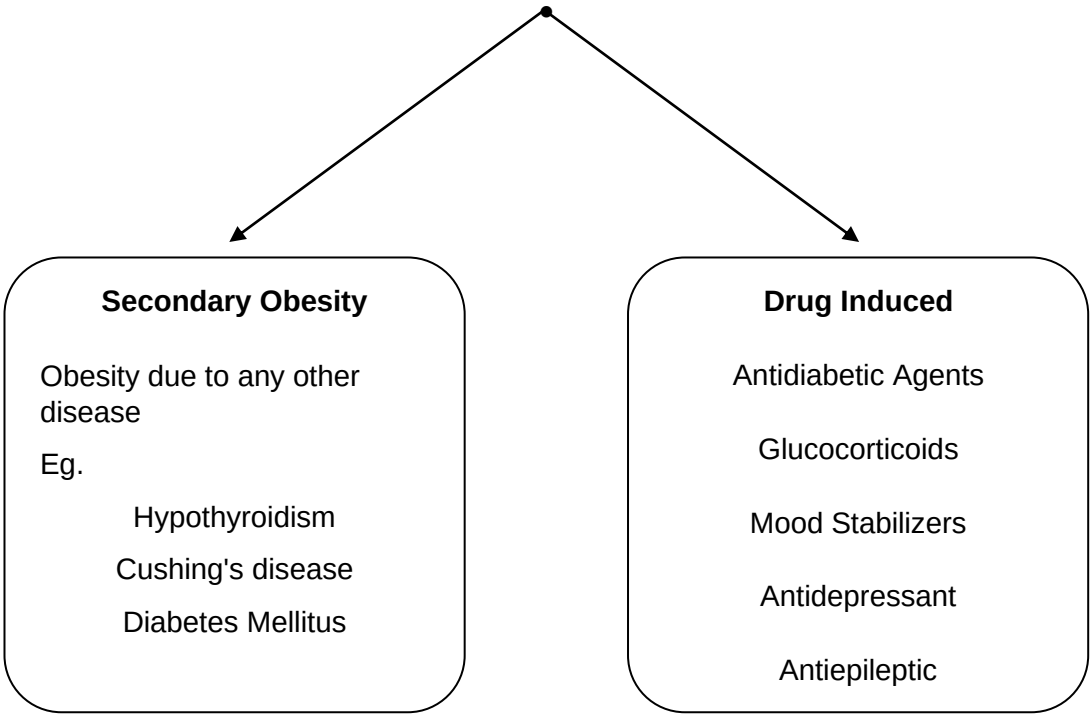

- **Hypertrophic Obesity -** Hypertrophy of Adipocytes
- **Hyper Cellular Obesity -** Hyperplasia of Adipocytes

Hormones Associated With Obesity -

Leptin

- Synthesized By Fat Cells
- Regulates Food Intake & Energy Loss

Adiponectin

- Stimulates Fatty Acid Oxidation
- Major Role In Insulin Senstivity

Ghrelin

Peptide YY

Insulin

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

★ **Derangement of central regulation of energy balance with alteration of nuerochemical and feedback signaling results in obesity.**

Diagnosis –

- **BMI**

BMI	CLASSIFICATION
<18.4	Under Weight
18.5-24.9	Normal Weight
25.0-29.9	Over Weight
30.0-34.9	Class 1 Obesity
35.0-39.9	Class 2 Obesity
>40.0	Class 3 Obesity

- **Waist Circumference –**
  - Women - > 35 Inches
  - Men - > 40inches

Investigations –

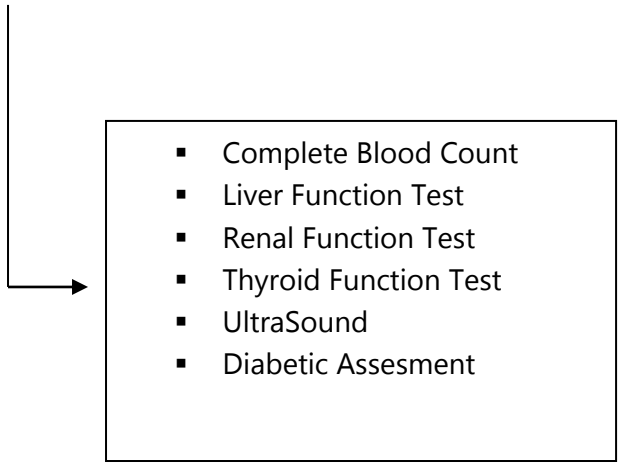

Consequences -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

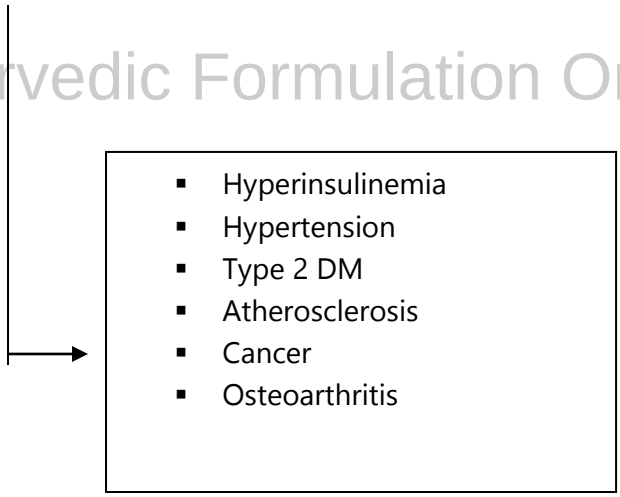

4.1 रोग एवं रोग परीक्षा

परीक्ष्यकारिणो हि कुशला भवन्ति ।

- चिकित्सा करते समय परीक्षा करने के बाद ही जो कार्य किया जाता है वही कुशल अथवा सफल होता हैं

प्रमाणैरर्थावधारणं परीक्षा ।

- प्रमाणों के द्वारा विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना परीक्षा कहलाता है

प्रतिपत्तिक ज्ञान – किसी भी रोग का जिस प्रकार आयुर्वेद शास्त्र में उत्पत्ति , लक्षण आदि बताया है , उसे उसी प्रकार जानकर व रोग की अवस्था के अनुसार चिकित्सा करने को प्रतिपत्तिक ज्ञान कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

रोगी परीक्षा का महत्त्व –

आतुरस्तु खलु कार्यदेशः । तस्य परीक्षा आयुषः प्रमाणज्ञानहेतोवांस्यात् , बलदोष प्रमाणज्ञानहेतोर्वा

- चिकित्सा रूपी कार्य का देश रोगी का शरीर होता हैं। इसकी परीक्षा आयु का प्रमाण जानने के लिए या रोगों के बल , दोषों के प्रमाणों को जानने के लिए की जाती हैं
- दोषों के प्रमाण या रोगी का बल तथा रोग का बल देखकर ही औषध की मात्रा निश्चित की जाती है

रोग परीक्षा का महत्त्व –

रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम् । ततः कर्म भिषक् पश्चाज्ज्ञानपूर्वं समाचरेत् ।
यस्तु रोगविज्ञाय कर्माण्यारभते भिषक् । आप्यौषधविधानज्ञस्तस्य सिद्धिर्यहच्छया ।

- चिकित्सा करते समय सर्वप्रथम रोग की परीक्षा , उसके बाद रोग के अनुसार उचित औषध की परीक्षा करनी करना चाहिये।

➢ तत् पश्चात् वैद्य के लिये उचित हैं कि रोग तथा औषध का सम्यक् ज्ञान हो जाने के पश्चात् ही चिकित्सा कार्य करे

रोग एवम् रोगी परीक्षा में अन्तर

रोग परीक्षा	रोगी परीक्षा
रोग रोगी पर ही आश्रित होता है, अतः रोग परीक्षा आश्रयी परीक्षा है।	***आतुर अस्तु खलु कार्य देशः।*** आतुर का शरीर चिकित्सा के लिए कार्यकारी स्थान है।
रोग विज्ञान के पांच उपाय है। निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय एवं सम्प्राप्ति।	रोग की परीक्षा की अनेक विधियाँ अलग अलग आचार्यों ने बदलाई है। ○ दसविध परीक्षा - चरक ○ षड्विध परीक्षा – शुश्रुत ○ चतुर्विध परीक्षा – अष्टांग
रोग परीक्षा के अंतर्गत रोगों की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है। जैसे ○ पूर्व रूप अवस्था में दोष दूष्य समूछर्ना को जाना जाता है। ○ उपचय द्वारा रोग के गूढ़ लिंगों को जाना जाता है।	रोगी परीक्षा के अंतर्गत रोगी की अवस्था यथा ○ शारीरिक स्थिती को जानने के लिए शरीर प्रमाण, शरीर संहनन का ज्ञान किया जाता है ○ मानसिक अवस्था के ज्ञान के लिए सत्व सात्म्य का ज्ञान किया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

निदान पञ्चकम् महत्त्व –

- ➢ ये निदान आदि पांचों व्यस्त (एकीय) एवं समस्त (सम्मिलित) रूप में व्याधि का ज्ञान कराते हैं अर्थात इनमें से प्रत्येक (निदान या पूर्वरूप आदि) पृथक् - पृथक् रूप में तथा पांचों एक साथ मिलकर भी व्याधि का बोधन कराते हैं
- ➢ उपलब्धि के अनुसार कहीं दो और कहीं तीन, चार या पांचों भी व्याधि के बोधक हो सकते हैं ।

निदान का महत्व –

निदान शब्द से अभिप्राय –

- व्याधि उत्पत्ति कारक
- व्याधि ज्ञानोपाय पञ्च निदान

निदान के प्रोयजन –

- निदान परिवर्जन हेतु यदि निदान का वर्णन नहीं किया जाये तो सभी व्याधियों की सामान्य चिकित्सा **निदान का परित्याग** ही हैं।

- निदान द्वारा उन्हीं रोगों का ज्ञान किया जा सकता हैं जिन रोगों की उत्पत्ति नियत निदान से होती हैं। यथा **मृतिका भक्षण से पाण्डु रोग व मक्षिका भक्षण से वमन होता हैं**

- निदान का विशेष अंश ही स्त्रोतसों में विगुणता को उत्पन्न करता हैं

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

पूर्वरूप का महत्व –

- चिकित्सा कार्य में पूर्वरूप का ज्ञान सहायक होता हैं। यथा **ज्वर की पूर्वरूपावस्था** में **लघु भोजन , अपतर्पण** (लंघन) करना चाहिए, अतः **पूर्वरूप का ज्ञान न किया जाये** तो **पूर्वरुपावस्था से वर्णित विशिष्ट उपचार भी नहीं किये जा सकेगा**

- **साध्य असाध्यता का ज्ञान-** रोग की साध्य असाध्यता का ज्ञान पूर्वरूप से होता है, जैसे -
  - पूर्वरूपावस्था में रोग के **सम्पूर्ण पूर्वरुप** दिखाई दे तो वह रोग **असाध्य** होता है।
  - रोग में **पूर्वरूप अल्प** ही वह **सुखसाध्य** होता है।

- रोगों के सापेक्ष निदान के लिए पूर्वरूप का विशेष महत्त्व हैं।
  (यदि पूर्वरुप का ज्ञान + रूप का ज्ञान = व्याधि निश्चित ज्ञान)

○ प्रमेहपूर्वरूप उपस्थित + हरिद्रवर्ण का मूत्र लक्षण रोगी में उपस्थित	=	**प्रमेह रोग**
○ प्रमेहपूर्वरूप उपस्थित नही + रोगी हरिद्रवर्ण का मूत्र प्रवृत्त करे	=	**रक्तपित्त रोग**

- अकेले निदान के ज्ञान रोग विनिश्चय नहीं हो पाता, एक हेतु से अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं एवं एक हेतु से एक रोग भी हो सकता है जैसे
    - ज्वर और गुल्म दोनों रोगों की उत्पत्ति एक हेतु से होती हैं।

रूप का महत्व –

- केवल उत्पन्न व्याधि का ज्ञान कराने वाला लिङ्ग ही रूप कहा जाता है।
- निदान , सम्प्राति और उपश उत्पन्न व अनुत्पन्न दोनों व्याधियों का ज्ञान करने में उपयोगी हैं।
- ***'स्वीयं रूपं स्वरूपम्'-*** व्याधि का अपना रूप या स्वभाव ही रूप हैं , जिसके अनुसार चिकित्सा की जाती।
- **साध्य असाध्यता का ज्ञान -** व्याधि के सभी लक्षण रोगी में दिखाई देने पर वह रोग असाध्य रोग होता है। **जैसे-**
    - सन्निपातिक ज्वर में ***क्षणेदाह क्षणेशीतम्*** आदि सम्पूर्ण लक्षण उपस्थित होने पर सन्निपातिक ज्वर असाध्य हो जाता है**। इसी प्रकार अल्य लक्षण होने पर कोई भी व्याधि सुखसाध्य हो जाती हैं**

उपशय का महत्व –

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

जिन व्याधियों के लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं
अथवा दो व्याधियों के लक्षणों में सादृश्यता दिखाई दे

↓

ऐसी व्याधियों के यथावत् ज्ञान के लिए उपशय का ज्ञान करना आवश्यक है

↓

वातव्याधि तथा उसस्तम्भ का संदेह होने पर **तैल अभ्यंग** से **उरूस्तम्भ व्याधि के लक्षणों में वृद्धि** होती है, जबकि **वात व्याधि** होने पर रोगी को **तैल अभ्यंग से लाभ** होता है

सम्प्राप्ति का महत्व -

- चिकित्सा विशेष हेतु, निदान आदि का ज्ञान कर लेने के पश्चात् भी चिकित्सा व्यवस्था के लिए सम्प्राप्ति घटकों का ज्ञान परम आवश्यक है।
- दोषों की अशांश कल्पना , बल से , ऋतु एवं अहोरात्र सम्बन्धित काल आदि का ज्ञान सम्यक् रूप से करने के पश्चात् ही चिकित्सा कर्म करना चाहिए

- निदान , पूर्वरूप आदि से रोग का सामान्य ज्ञान होता है।
- जबकि रोग का सम्यक् ज्ञान सम्प्राप्ति ज्ञान के बिना संभव नही होता है। क्योंकि दोष , दूष्य , स्त्रोतस आदि की विकृत स्थिति को मात्र सम्प्राति द्वारा ही जाना जा सकता है

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

निदान पंचक

निदान -

" व्याध्युत्पत्तिहेतुर्निदानम् "

अर्थात् व्याधि की उत्पत्ति का हेतु (कारण) निदान कहलाता हैं या जिससे व्याधि का पूर्णतः ज्ञान हो उसे निदान कहते हैं।

आचार्य चरक के अनुसार -

" तत्र निदानं कारणमिहोच्यते तच्चेह व्याधिजनकं व्याधिबोधकं च तत्र व्याधिजनकं निदानं हेतुः, व्याधिबोधकं पञ्चकम्। "

अर्थात् निदान को कारण कहा जाता है। निदान शब्द का प्रयोग व्याधिजनक (Etiological Factor), व्याधिबोधक हेतु (Diagnosis) दोनों के लिए किया जाता हैं। परन्तु विषयान्तर्गत निदान का अर्थ व्याधिजनक रूप में ही ग्रहण किया जायेगा।

निदान के पर्याय - **" निमित्तहेत्वायतनप्रत्ययोत्थानकारणैः। "**

निमित्त , हेतु , आयतन , प्रत्यय , उत्थान , कारण

निदान के भेद - हेतु के चार प्रकार हैं -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1. सन्निकृष्ट निदान -

सनिकृष्ट का अर्थ होता है निकटवर्ती, रोगों की उत्पत्ति के साथ सीधा साक्षात संबंध रखना। जैसे दिन के आदि में कफ, मध्य में पित्त तथा अन्त (सायंकाल) में वात का प्रकोप होता है।

2. विप्रकृष्ट निदान -

विप्रकृष्ट का अर्थ है दूरवर्ती। रोगों की उत्पत्ति में सीधा सम्बन्ध नहीं होता है। जैसे- हेमन्त ऋतु में संचित हुआ कफ ही वसन्त ऋतु में प्रकुपित होकर रोग उत्पन्न करता हैं।

3. व्यभिचारी निदान -

दुर्बल होने से जो हेतु व्याधि को उत्पन्न करने में असमर्थ होता हैं उसे व्यभिचारी कहते हैं। रोग की उत्पत्ति आहार विहार आदि बाह्य निदान तथा उससे प्रकुपित दोष और दूष्य के बल पर निर्भर करती हैं। निदान यदि अल्प हो तो दोष दुष्टि भी सौम्य स्वरूप की ही होती हैं। परिणामस्वरूप रोग सॉम्य स्वरूप का होता हैं।

4. प्राधानिक निदान -

स्वभाव के कारण शीघ्र ही दोषों को प्रकुपित करके रोगों को उत्पन्न करने वाला हेतु प्रधानिक कहलाता ।। जैसे- मारक विष प्रत्येक व्यक्ति में निश्चित रूप से मारकता उत्पन्न करता है।

चरकानुसार हेतु के तीन भेद है -

" त्रीण्यायतनानीति अर्थानां कर्मणः कालस्य चातियोगायोगमिथ्यायोगाः। "

1) असात्म्येन्द्रियार्थसंयोग
2) प्रज्ञापराध
3) परिणाम

आचार्य चरक ने दोषो के पुनः दो भेद बताये है -

अनुबन्ध्य -

स्वतंत्र स्पष्ट लक्षण वाले उन दोषों एवं रोगों के उत्पन्न होने के जितने कारण शास्त्रों में बताये गये हैं उन्हीं कारणों से उत्पन्न होने वाला व उन दोषों या रोगों की शांति करने का जो उपाय बताया गया है उसी से शांत होने वाला अनुबन्ध्य होता हैं।

अनुबन्ध - अनुवन्ध्य से विपरीत लक्षण वाले होते हैं , स्वचिकित्सा से ठीक नहीं होते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अशयापकर्ष - आशयापकर्ष के आधार पर दोष भेद दोष अपने प्राकृत स्थान पर रहते हुए तथा स्वयं के प्रकुपित न होने पर भी प्रकुपित वायु के द्वारा अन्य स्थान पर ले जाये जाते हैं, इसे आशयापकर्ष कहा जाता हैं।

श्लेष्मा के क्षीण होने पर बढ़ी हुयी वायु, उचित मात्रा एवं स्थान में स्थित पित्त को उसके प्रधान स्थान (ग्रहणी) से आकृष्ट करके शरीर के जिस भाग में लेकर घूमती है, अतः चिकित्सा करते हुए विगुण वात की शांति तथा विकृत स्थान (स्वस्थान से चलित) पर गये हुए दोषों को स्वस्थान पर लाना आवश्यक होता हैं। जिन्हें पित्त के स्थानापकर्ष का ज्ञान नहीं है, वह दाह आदि लक्षणों को देखकर पित्त वृद्धि का ज्ञान करते हैं तथा पित्त शामक चिकित्सा द्वारा शरीर में उचित प्रमाण में स्थित पित्त का भी क्षय कर दिया जाता हैं। जिससे रोगी को लाभ पहुचने की बजाय और अधिक कष्ट पहुंचता है।

पूर्वरूप -

" पूर्वरूपं प्रागुत्पत्ति लक्षणं व्याधेः । "

अर्थात व्याधि की उत्पत्ति के पूर्व जो लक्षण होते हैं उन्हें पूर्व रूप कहा जाता है या दोष विशेष के ज्ञान के बिना ही केवल उत्पन्न रोग जिन लक्षणों से जाना जाये उन्हें ' पूर्वरूप' कहते हैं।

भेद - सामान्य पूर्वरूप, विशिष्ट पूर्वरूप

1. सामान्य पूर्वरूप -

सामान्य पूर्वरूप से उत्पन्न होने वाली व्याधि का सम्पूर्ण (दोष विशेष) ज्ञान नहीं होता है केवल भावी जैसे ज्वर के श्रम आदि सामान्य पूर्वरूप मिलने पर वातादि भेद का ज्ञान नहीं किया जा सकता है।

2. विशिष्ट पूर्वरूप -

विशिष्ट पूर्वरूप उसे कहते हैं जिससे रोग आरम्भक दोष का ज्ञान होता है, जैसे कि ज्वर के विशिष्ट पूर्वरूप अतिजृम्भा होना वात प्रकोप के कारण, नयनदाहे पित्त प्रकोप के कारण, अन्न के प्रति अरूचि कफ प्रकोप के कारण।

रूप -

परिभाषा - **" प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिङ्गम । "**

उत्पन्न हुए रोगों के लक्षणों को लिङ्ग कहते हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वर्तमान में विद्यमान व्याधि के स्वरूप का ज्ञान रूप द्वारा किया जाता है तथा वातादि दोष, आमपक्वादि विशेष अवस्थाओं का ज्ञान केवल रूप द्वारा किया जा सकता है। निदान, उपशय, सम्प्राप्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है।

आचार्य मधुकोषकार ने रूपों का वर्णन करते हुए बताया कि दोष दूष्य का विशेष प्रकार का संयोग व्याधि है तथा इसमें अरूचि आदि विभिन्न रूप या व्याधि को दर्शाता है।

पर्याय - संस्थान , व्यञ्जन, लिङ्ग लक्षण चिह्न, आकृति तथा रूप

रूप के भेद - रूप के दो भेदों का वर्णन किया गया है।

(1) समान्य रूप - किसी व्याधि के सामान्य लक्षणों को सामान्य रूप कहा जाता है।

- ✓ जैसे ज्वर के सामान्य लक्षण - संताप
- ✓ अतिसार के सामान्य लक्षण - बहुद्रव सरण

(2) विशेष रूप - किसी व्याधि के दोषानुसार विशेष लक्षणों का ज्ञान होना।

- ✓ जैसे वातिक ज्वर लक्षण, पैत्तिक ज्वर लक्षण, कफज

ज्वर लक्षण रूप अथवा लक्षणों को पुन: 4 भागों में बांटा गया है -

1. प्रत्यात्म लक्षण (Cardinal Sign) -

व्याधि के वह लक्षण जिससे तुरन्त उस व्याधि का बोध हो जाये उसे प्रत्यात्म लक्षण कहते हैं , जैसे -

- ➢ ज्वर का प्रत्यात्म लक्षण शरीर और मन का संताप ही होता है।
- ➢ स्पर्श में पिण्ड के समान हो उसे गुल्म कहते हैं।
- ➢ गुद से अधिक द्रवयुक्त मल का निकलना ही अतिसार कहलाता है।

2. सामान्य लक्षण (Presumptive sign) -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

जो लक्षण व्याधि में प्रत्यात्म के अतिरिक्त होते हैं व सामान्यतौर पर मिलते हैं , जैसे -

- ➢ स्वेदावरोध संताप और अंगों में जकड़ाहट का एक साथ दिखाई देना ज्वर का सामान्य लक्षण है।

3. दोषादि के अनुसार विशेष लक्षण (Specific Symptoms) -

किसी व्याधि के दोषानुसार विशेष लक्षणों का ज्ञान होना , जैसे -

- ➢ वातिक ज्वर लक्षण, पैत्तिक ज्वर लक्षण, कफज

4. व्याधि की उपद्रवावस्था के लक्षण (Complication) -

उपद्रव लक्षण व्याधि की रूपावस्था का ही अन्तिम परिणाम है , जैसे –

- मूर्च्छा प्रलाप, वमन, मुँह से पानी आना, अंगसाद, भ्रम यह अजीर्ण के उपद्रव है इनके अतिरिक्त अजीर्ण से मृत्यु तक हो सकती है।

Symptoms – are described by the patient in their complaints or history of past illness.

Characteristics -

- ✓ Character of pain - Spasmodic thrombing, dull etc.
- ✓ Location - Site of Pain
- ✓ Radiation - pain radiation to differnt parts of body.
- ✓ Severity - Mild, moderate or severe pain
- ✓ Timing - Pain aggrvate after having food or in morning.
- ✓ Aggrevating factor - Sleep, sunexposure etc.
- ✓ Relieving factor - rest, intake food etc. since, onset.

Sign – are the objective findings observed by health care providers during examination of patient.

Ayurvedic Formulation

उपशय -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

“ गूढलिङ्गं व्याधिमुपशयनुपशयाभ्यां परीक्षेत् । ”

किसी व्याधि के लक्षण अति अल्प हो अथवा छुपे हुये हो तो रोगों का निदान (Diagnosis) उपशय व अनुपशय द्वारा किया जाता है। जैसे शोथ स्नेहन, उष्ण उपचार तथा मर्दन से शांत होता है स्नेहनादि को उपशय कहते हैं।

उपशय के भेद - चरक 6

1) हेतुविपरीत
2) व्याधिविपरीत

3) हेतुव्याधि उभयविपरीत
4) हेतुविपरीतार्थकारी
5) व्याधिविपरीतार्थकारी
6) हेतुव्याधिउभयविपरीतार्थकारी

1. हेतुविपरीत (हेवि) - Code - हेवि (शुंढ शोकजे (मांस + श्राव (wine) खाके दिवास्वपन से वढे कफ में रात्रि जागरण करती है।

2. हेतुविपरातार्थकारी - Code - हेवि प्यारे फोडे में उपनाह व विदाही अन्न, उन्मादी को वातों से डरा देता है।

उपशय भेद	औषध	अन/आहार	विहार
हेतुविपरीत	शीतकफज ज्वर में शुण्ठी आदि उष्ण औषध	श्रम व वातज ज्वर में मांसरस व भात	दिवास्वपन से उत्पन्न कफ में रात्रि जागरण
हेतुविपरातार्थकारी	पित्तप्रधान फोडे या व्रण पर उपनाह का प्रयोग	पित्तप्रधान फोडे या व्रण पर विदाही अन्न	वातज उन्माद में भयदर्शन

3. व्याधिविपरीत (वेवि) -

- अतिसार में कुट के पढाते।
- अतिसार रोकने के लिए मसूर खिलाते
- उदाहरण में प्रवाहण करवाते हैं। (उदावत)

4. व्याधिविपरीतार्थकारी (वावा) -

- वमन में मदनफल खाते हैं
- अतिसार में क्षीर पीते हैं
- छर्दी में वमन के लिए प्रवाहण करते हैं

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91- 8319811628 , 8962265728

उपशय भेद	औषध	अन्न	विहार
व्याधिविपरीत	अतिसार में स्तम्भनार्थ कुटज	अतिसार में स्तम्भनार्थ मसूर	उदावर्त में प्रवहण
व्याधिविपरातार्थकारी	छर्दी रोग में वमनकारक मदनफल का प्रयोग	अतिसार में विरेचनार्थ दुग्ध का प्रयोग	छर्दी रोग में वमन करवाने के लिए प्रवहण

5. **हेतुव्याधि उभयविपरीत - Code -** हेवि व्याधि में दम वसा तभी शिवजी पीते वाग में तक्र व पंग में दूध, तथा तंद्रा में रात्रिजागरण करते है।

6. **हेतुव्याधि उभयविपरीतार्थकारी - Code -** आग में आग व विष में विष के साथ चिकित्सा Army man daily आहार के साथ मदिरा लेते हैं। मूड होने पर जल में तैरना।

उपशय भेद	औषध	अन्न	विहार
उभयविपरीत	वातिक शोथ में वातहर व शोथहर दशमूल क्वाथ	शीतजन्य वातज ज्वर में पेया वातकफज ग्रहणी में तक्र पित्तज ग्रहणी में दुग्ध	स्निग्ध पदार्थ सेवन व दिवास्वपन से उत्पन्न तन्द्रा में रात्रिजागरण
उभयविपरीतार्थकारी	अग्निदग्ध में अगरु सदृश उष्णपदार्थ लेप, विषज रोगों में विष का प्रयोग	मद्यापानजन्य मदात्य में मद्य का प्रयोग	व्यायाम जन्य समूढवात, उरूस्तम्भ में जल में तैरना

संप्राप्ति -

संप्राप्ति का अर्थ - सम्यक रूप से किसी चीज को पाना।

सम्प्राप्ति के पर्याय - जाति, आगति

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

परिभाषा -

" व्याधिजनकदोषव्यापारविशेषयुक्तं व्याधिजन्मेह सम्प्राप्तिः। "

अपितु रोगारम्भक दोष किस प्रकार दुष्ट हुआ है, तदनन्तर शरीर व्याधिजनकदोषों के विविध व्यापारों एवम् परिणामों से युक्त व्याधिजन्म ही सम्प्राप्ति है। यहाँ सम्प्राप्ति केवल व्याधि जन्म मात्र का ही ग्रहण नहीं करते में उसके अनुधावन का क्या स्वरूप है इसका विवरण सम्प्राप्ति कहलाता है।

सम्प्राप्ति चक्र -

निदानों का सेवन

⇩

तद् अनुसार दोष दुष्ट

⇩

दोष दूष्यों को दूषित करते है

⇩

स्थान अथवा अवयवविशेष में दोष दूष्य सम्मूर्च्छना

⇩

लक्षण व्यक्त होना

⇩

रोगोत्पत्ति

सम्प्राप्ति

(दोष दूष्य व्यापार)

सम्प्राप्ति घटक -

1) निदान सेवन
2) दूष्य
3) अधिष्ठान
4) स्रोतस
5) स्रोतोदुष्टि
6) अग्निदुष्टि
7) अवस्था
8) साध्यासाध्यता

सम्प्राप्ति के भेद -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य वाग्भट्ट के अनुसार सम्प्राप्ति के 5 भेद बातये गये ।

“ संख्याविकल्पप्राधान्यबलकालविशेषतः । ”

1) संख्या सम्प्राप्ति
2) विकल्प सम्प्राप्ति
3) प्राधान्य सम्प्राप्ति
4) बल सम्प्राप्ति
5) काल सम्प्राप्ति

आचार्य **चरक ने सम्प्राप्ति के 6 भेद** बताते हुये **विधि सम्प्राप्ति** का अतिरिक्त वर्णन किया।

1. **संख्या सम्प्राप्ति -** संख्या सम्प्राप्ति द्वारा रोगों के भेदों की गणना की जाती है , यथा - ज्वर के आठ प्रकार, गुल्म पाँच प्रकार

ज्वर के आठ भेद 1. वातज, 2. पित्तज 3. कफज, 4. वातपित्तज, 5. वाराकफज, 6. पित्तकफज, 7. सन्निपातज, 8. आगन्तु

कामला के 2 भेद 1. शाखाश्रित कामला, 2. कोष्ठाश्रित कामला

2. विकल्प सम्प्राप्ति -

व्याधि से सम्बद्ध दोषों की अशांश कल्पना को विकल्प सम्प्राप्ति कहते हैं। चरक के अनुसार दोषों के अधिक अंशों अथवा अल्प अंशों द्वारा उत्पन्न व्याधि की सम्प्राप्ति को विकल्प सम्प्राप्ति जाना जाता है। वात के रुक्षादि गुणों को अंश कहते हैं जैसे-

1) कलाय - वात के सम्पूर्ण अंशों को प्रकुपित करता है।
2) तण्डुलीयक - रुक्षता, शीतता, लघुता इन तीन गुण वात को केवल तीन अंशों से कुपित करता है।
3) ईक्षुकाण्ड - इसमें रूक्षता तथा शीतता दो गुण, वात के दो अंशों को हो कुपित करता है।
4) सीधू - इसमें रुक्षता ही एक मात्र गुण है यह वात को एक अंश से ही कुपित करता है।

3. प्राधान्य सम्प्राप्ति -

व्याधि से सम्बन्धित दोषों की स्वतन्त्रता एवम् परतन्त्रता के आधार पर व्याधि की प्राधान्य व अप्राधान्य सम्प्राप्ति का निर्देश करना चाहिये। रोगोत्पादक मुख्य दोषों की स्वतन्त्रता का जिसके द्वारा ज्ञान हो उसे उस रोग की प्राधान्य सम्प्राप्ति और जिसके द्वारा गौण दोषों की परतन्त्रता का ज्ञान हो उसे उस रोग की अप्राधान्य सम्प्राप्ति कहते है। जैसे उनमें से एक दोष रोग को उत्पन्न करने में स्वतन्त्र (प्रधान) होता है और अन्य दोष रोगोत्पादकता में गौण होने पर परतन्त्र होते है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4. बल सम्प्राप्ति -

निदान , पूर्वरूप एवम् रूप के आधिक्य अथवा अल्पता के कारण व्याधि के बलावल का ज्ञान जिससे होता। है उसे बल सम्प्राप्ति कहते हैं ,

जैसे निदान , पूर्वरूप , रूप जितने अधिक प्रकट होते हैं व्याधि का बल उतना ही अधिक होता है और उसे सबल व्याधि जानना चाहिये। इसके विपरीत निदान , पूर्वरूप , रूप का कम प्रकट होने पर व्याधि का बल उतना ही कम होता है उसे निर्बल व्याधि जानना चाहिये। जिस व्याधि में निदान पूर्वरूपादि बहुत कम न हो अर्थात् मध्यम रूप में हो तब उसे मध्यमबल वाली व्याधि जानना चाहिये ,सबल व्याधि की चिकित्सा पूर्ण सावधानी से शीघ्र प्रारम्भ कर देनी चाहिये।

5. काल सम्प्राप्ति -

जिसमें रात्रि, दिन, ऋतु एवं भोजन के आदि, मध्य और अन्त के अनुसार दोष विशेष का निश्चय किया जाता है उसे काल सम्प्राप्ति कहते हैं। जैसे रात्रि, दिन, ऋतु तथा भोजन के आदि में कफ, मध्य में पित्त तथा अन्त में वात का प्रकोप होता है एवं उस काल में उस दोष विशेष से सम्बन्धित रोग की उत्पत्ति होती है।

6. विधि संप्राप्ति -

विधि का अर्थ प्रकार है और उसका प्रयोग एक ही जाति के अन्तर्गत दो या दो से अधिक व्यक्तियों में भेद प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है। जैसे गोत्व गौ में ही रह सकता है। अश्व में नहीं। किन्तु गौ भी अनेक प्रकार की होती है और उनका भेद किसी विशेष धर्म के आधार पर करना होगा तो उसे विधि कहेंगे।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आनाह

संदर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय **26** **" त्रिमर्मीय चिकित्साध्याय "**
- सुश्रुत संहिता, उत्तर तंत्र, अध्याय **56** **" विसूचिका प्रतिषेध "**
- सुश्रुत संहिता, निदान स्थान, अध्याय **1** **" वात व्याधि निदानम् "**
- अष्टाङ्ग हृदय, निदान स्थान, अध्याय **15** **" वातव्याधि निदानम् "**
- माधव निदान पूर्वार्ध, अध्याय **22** **" वातव्याधि निदानम् "**

सामान्य व्याधि परिचय -

आनाह, आध्मान, आटोपादि व्याधियों का पृथक वर्णन संहिता ग्रन्थों में प्राप्त नहीं होता अपितु यत्र अध्यायों के अन्तर्गत इनका वर्णन प्राप्त होता है। वर्तमान समय में आनाह अत्यन्त सामान्य रूप से पाई जाने समस्या है। मल मूत्रावरोध युक्त आध्मान को आनाह कहते है।

वर्तमान चिकित्सा शास्त्र में आध्मान का सामन्जस्य **Constipation/Stasis of feces and urine** से किया जाता है।

निरुक्ति -

आनाहः पुं (आङ् + न + धञ्च)

" आ समन्तात् नह्यते बाध्यते अवरुध्यते, वा मलस्य वायोश्चमार्गो यस्मिन् रोगे स आनाहः॥ "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

परिभाषा - मल एवं वायु का वात वैगुण्य से स्वमार्गों से न निकल पाना आनाह है।

निदान - आनाह के निदान निम्नानुसार हैं -

- तेरह प्रकार के अधारणीय वेगों का धारण करना,
- वात प्रकोपक रस (कटु, तिक्त, कषाय) प्रधान द्रव्यों का सेवन,
- रुक्षान्न सेवन, लङ्घन (उपवास) करना,
- शारीरिक श्रम न करना

सम्प्राप्ति -

" आमं शकृद्वा निचितं क्रमेण भूयो विबन्धं विगुणानिलेन ।

प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारमानाहमुदाहरन्ति ।। "

विगुण वात द्वारा आमरस तथा पुरीष आमाशय, पक्वाशय एवं मलाशय में धीरे-धीरे संचित हो कर विबद्ध होकर अपने यथोचित मार्ग से प्रवर्तित न हो सके उस विकार को आनाह कहते हैं ।

सम्प्राप्ति चक्र -

निदान सेवन (वेगधारण, रुक्षान्न सेवन इत्यादि)

↓

वात प्रकोप

↓

अपक्व अन्न रस तथा पुरीष का संचय

↓

पुरीष उद्गार व अधोवायु की अप्रवृत्ति

↓

आनाह रोग

सम्प्राप्ति घटक -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **दोष** - वात (आपान वायु)
- **दूष्य** - अपक्व अन्नरस, पुरीष
- **स्रोतस** - अन्नवह, पुरीषवह
- **स्रोतोदुष्टि** - संग/विमार्गगमन
- **अधिष्ठान** - आमाशय, पक्वाशय
- **साध्यतासाध्यता** - साध्य
- **अग्नि** - अग्निमांद्य
- **प्रत्यात्म लक्षण** - मलमूत्रावरोध एवं उदर का फूलना

भेद - आचार्य सुश्रुत के अनुसार आनाह के दो भेद स्वीकार किये गये हैं -

1) आमज आनाह
2) पुरीषज आनाह

लक्षण - आचार्य **चरकानुसार** आनाह के सामान्य लक्षण निम्नानुसार हैं -

1) हृत्स्तम्भ (Heaviness in chest)
2) गात्र गौरव (Heaviness in body)
3) उद्गारसङ्ग आदि (Absence of eructation)
4) शिरोरोग (Headache)
5) पीनस (Coryza)

आचार्य **सुश्रुत** ने भेदानुसार लक्षणों का वर्णन किया है -

1) **आमज आनाह -**

- तृष्णा (Polydipsia),
- प्रतिश्याय (Coryza),
- शिरोविदाह (Burning sensation in head),
- आमाशय शूल, गुरुता (Pain and heaviness in abdomen),
- हृल्लास (Nausea),
- उद्गारावरोध आदि। (Obstruction of belching)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) **पुरीषज आनाह लक्षण -**

- कटि, पृष्ठ में स्तम्भ (Stiffness in back and lumber region),
- मलमूत्र स्तम्भ (Obstruction of feces and urine),
- कटि एवं पृष्ठ शूल (Pain in back and lumber region),
- मूर्च्छा (Faint),
- पुरीष वमन (Excertion of stool from oral route),
- श्वास तथा अलसक रोग के लक्षण मिलते हैं। (Symptoms of dyspnea)

आध्मान निदान

सन्दर्भ ग्रन्थ -

- माधव निदान पूर्वार्ध, अध्याय **22 " वातव्याधि निदानम् "**
- सुश्रुत संहिता, निदान स्थान, अध्याय **1 " वात व्याधि निदानम् "**
- सुश्रुत संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय **5 " वातव्याधि चिकित्सा "**
- चरकसंहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय **28 "वातव्याधि चिकित्सा "**

सामान्य व्याधि परिचय -

आध्मान का वर्णन संहिताओं में स्वतंत्र रूप से प्राप्त न होकर विभिन्न व्याधियों के लक्षण के रूप में है। आध्मान की अवस्था में मल का संचय नहीं होता, मलमूत्र की प्रवृत्ति के साथ ही उदर में शायु की से आटोप, फुलाव एवं गुडगुडाहट की ध्वनि होती है।

शूल उदर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में आध्मान का सामञ्जस्य **Tympanites** से किया जाता है।

निरुक्ति -

" वायुना कुपितेन नाभरधः सशूलमापूर आध्मानः। "

वात प्रकोप जन्य नाभि के नीचे होने वाला शूल आध्मान कहलाता है।

निदान - आनाह निदान के समान यथा -

- वेग विधारण,
- अविपाक,
- वातवर्धक आहार यथा रुक्षान्नपान सेवन,
- पित्तक्षय इत्यादि

सम्प्राप्ति - उपरोक्त निदान सेवन द्वारा पित्त क्षय व वात प्रकोप होने से आहार का पाक सम्यक् रूप से नहीं हो पाता तथा वात निरुद्ध होकर उदर में आटोप युक्त तीव्र शूल उत्पन्न करता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सम्प्राप्ति चक्र -

निदान सेवन

↓

पित्तक्षय

↓

आहार का सम्यक पाक न होना

↓

वातवृद्धि मार्गावरोध

↓

विगुणित वात का उदर में संचय

↓

आटोप एवं उदर में फुलाव व शूल

↓

आध्मान

भेद - आचार्य सुश्रुतानुसार दो भेद स्वीकार किये गये हैं -

1) आध्मान,
2) प्रत्याध्मान

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लक्षण -

1) आध्मान -

" साटोपमत्युग्ररुजमाध्मातमुदरं भृशम्। आध्मानमिति तं विद्याद्घोरं वातनिरोधजम्॥ "

- सम्पूर्ण उदर में आटोप (Bloating),
- अत्यधिक पीडा (Pain in abdomen),
- उदर में फुलाव आदि (Distended abdomen)

2) प्रत्याध्मान -

" विमुक्तपार्श्वहृदयं तदेवामाशयोत्थितम् । प्रत्याध्मानं विजानीयात्कफव्याकुलितानिलम् ॥ "

पार्श्व तथा हृदय प्रदेश को छोड़कर सारे लक्षण आमाशय में प्रकट हो तो उसे प्रत्याध्मान कहते हैं। इस अवस्था में कफ वायु को आवृत कर लेता है।

साध्यतासाध्यता - साध्य

आटोप निदान

सामान्य व्याधि परिचय -

आनाह व आध्मान के समान ही आटोप को भी स्वतंत्र व्याधि न मानकर लक्षणरूप में ही स्वीकार है, तथा आध्मान के साथ ही वर्णित किया गया है। आचार्य सुश्रुतानुसार उदर में वायु र होने से उत्पन्न होना ही आटोप कहलाता है।

निरुक्ति -

1) **आटोप : गुडगुडाशब्दः इति।** (मा. नि. 22 मधुकोषटीका)
2) **आटोप सञ्चलनं तेन सह वर्तते इति आटोपम्।** (डल्हण)

अर्थात् कुक्षि में वायु के संचरण से जो गुडगुड की ध्वनि उत्पन्न होती है उसे आटोप कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निदान एवं सम्प्राप्ति -

वातवर्धक आहार विहार का सेवन

↓

उदर में वात वृद्धि एवं संचरण

↓

गुड़गुड़ाहट की विशेष ध्वनि

↓

आटोप

संप्राप्ति घटक -

- **दोष -** वात
- **दूष्य -** अन्नरस
- **स्त्रोतस -** अन्नवह, पुरीषवह
- **स्त्रोतोदुष्टि -** संग, विमार्गगमन
- **अग्नि -** मंद
- **साध्यतासाध्यता -** साध्य
- **अधिष्ठान -** कुक्षि
- **लक्षण -** आध्मान के समान
- **प्रत्यात्म लक्षण -** उदर में गुड़गुड़ की ध्वनि होना

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

राजयक्ष्मा निदान

सन्दर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, निदान स्थान, अध्याय **6 " शोष निदानम् "**
- चरक संहिता, चिकित्सा स्थान अध्याय **8 " राजयक्ष्मा चिकित्साध्याय "**
- सुश्रुत संहिता, उत्तर तन्त्र अध्याय **41 " शोष प्रतिषेध अध्याय "**
- माधवनिदान, पूर्वार्ध, अध्याय **10 " राजयक्ष्माक्षतक्षीण निदानम् "**

सामान्य व्याधि परिचय -

राजयक्ष्मा शब्द 'राज' और 'यक्ष्मा' दो पदों से बना है। यक्ष्मा का अर्थ रोग होता है अतः राजयक्ष्मा का अर्थ 'राजा' का रोग' किया जा सकता है। सर्वप्रथम यह रोग नक्षत्रों के राजा चन्द्रमा को हुआ था इसलिए इसे राजयक्ष्मा की संज्ञा दी गई है।

" राजयक्ष्मा रोगसमूहाना "

आचार्य चरक ने राजयक्ष्मा के लक्षणों के समूह का विचार कर प्रत्येक लक्षण की गम्भीरता के अनुसार राजयक्ष्मा को रोग समूह में श्रेष्ठ माना है।

" अनेकरोगानुगतो बहुरोगपुरोगमः। दुर्विज्ञेयो दुर्निवारः शोषो व्याधिर्महाबलः ॥ "

आचार्य सुश्रुत ने व्याधि का महत्व बताते हुए कहा है अनेक रोग उपद्रव रूप में जिसके आश्रित रहते हो, तथा जिसके होने से पूर्व प्रतिश्याय आदि अनेक रोग पूर्वरूप के रूप में उत्पन्न हो, जिसको जानना कठिन हो, चिकित्सा दुष्कर हो, ऐसे महाबलशाली रोग को शोष कहते हैं। आचार्य वाग्भट् ने इसे रोगराट् की संज्ञा दी है। राजयक्ष्मा का साम्य आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अन्तर्गत **Tuberculosis** से किया जा सकता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पर्याय -

" क्रोधोयक्ष्मा ज्वरो रोग एकार्थो दुःखसंज्ञकः ॥ "

आचार्य चरकानुसार क्रोध, यक्ष्मा, ज्वर, रोग और दुःख ये सभी 1 ही अर्थ कहते है।

निरुक्ति -

1) **शोषयतीति शोषः।** अर्थात् जो शरीर का शोषण करता है।
2) **क्षीयतेऽनेनेति क्षयः।** अर्थात् जिसके द्वारा क्षीणता हो उसे क्षय कहते हैं।

निदान -

" अयथाबलमारम्भं वेगसंधारणं क्षयम् । यक्ष्मणः कारणं विद्याच्चतुर्थं विषमाशनम् ॥ "

- वेगविधारण
- साहस
- क्षय
- विषमाशन

सम्प्राप्ति -

" स्रोतसां संनिरोधाच्च रक्तादीनां च संक्षयात् । धातूष्मणां चापचयाद्राजयक्ष्मा प्रवर्तते ॥ "

निदान सेवनोपरान्त अग्नियाँ विषम होने से आहार तथा धातुओं का पाक नहीं हो पाता एवं आहार रस से कफ का निर्माण होता है। बढ़ा हुआ कफ स्रोतो मार्ग को अवरुद्ध कर रक्तादि धातुओं का क्षय कर देता है तथा प में रहने वाली 7 धात्वाग्नियों का नाश कर देता है। इसी से राजयक्ष्मा रोग की उत्पत्ति होती है ।

सम्प्राप्ति चक्र -

निदान सेवन (वेगावरोध, क्षय, साहस, विषमाशन)

⇩

विषमाग्नि द्वारा आहार रस से कफ का अधिक निर्माण होना

⇩

रस, रक्तादि धातुओं का क्षय एवं धात्वाश्रित धात्वाग्नि का नाश

⇩

राजयक्ष्मा

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निदानानुसार विशिष्ट सम्प्राप्ति -

1) वेगावरोधजन्य यक्ष्मा की सम्प्राप्ति -

वेग संधारण ⇨ विषमाग्नि ⇨ वातसहित त्रिदोष प्रकोप

⇩

स्रोतोवरोध ⇦ धातुक्षय ⇦ राजयक्ष्मा

2) क्षयजन्य राजयक्ष्मा की सम्प्राप्ति -

ईर्ष्या, भय, त्रासादि निदान सेवन

⇩

कफ प्रधान दोष प्रकोप

⇩

स्रोतावरोध

⇩

रसादि धातुओं का उचित पोषण न होना

⇩

अनुलोम क्रम से धातुक्षय

अतिव्यवाय

⇩

शुक्रक्षय

⇩

वातप्रधान दोष प्रकोप

⇩

प्रतिलोम क्रम से धातुक्षय

सर्वधातु क्षय

⇩

शोष

⇩

राजयक्ष्मा

3) साहसजन्य राजयक्ष्मा की सम्प्राप्ति -

अतिसाहस

⇩

फुफ्फुस में क्षत होना

⇩

उरः क्षत

⇩

वात प्रकोप

⇩

प्रकुपित वात द्वारा कफ पित्त को उभाड़ना

⇩

स्रोतावरोध

⇩

राजयक्ष्मा

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

4) विषमाशनजन्य यक्ष्मा की सम्प्राप्ति -

विषमाशन (विविध अन्नपानों का विषम रूप से सेवन)

⇩

त्रिदोष प्रकोप

⇩

स्रोतावरोध

⇩

रसादि धातुओं का उचित रूप से पोषण न करना

⇩

धातुक्षय

⇩

राजयक्ष्मा

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष** - त्रिदोष (वात कफ प्रधान)
- **दृष्य** - रसादि धातुएं
- **स्रोतस** - रस, रक्तादि समस्त स्रोतस
- **स्रोतोदुष्टि** - सङ्ग
- **अधिष्ठान** - सर्वशरीर
- **अग्निदुष्टि** - अग्निमांद्य
- **स्वभाव** - दारुण एवं चिरकारी
- **साध्यासाध्यता** - कृच्छ्रसाध्य

प्रत्यात्म लक्षण - **अंसपार्वाभितापश्च, संताप: करपादयो: , ज्वर: सर्वाङ्गश्चेति**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

शारीरिक पूर्वरूप

- प्रतिश्याय (Rhinitis)
- दौर्बल्य (weakness)
- कफसंस्रव (sputum expectation)
- तालुशोष (Dryness of throat)
- कास (Cough)
- वमन (Vomiting)

मानसिक पूर्वरूप

- दोषरहित वस्तुओं में दोष दिखना
- शरीर में वीभत्सता का दर्शन होना
- प्रत्येक वस्तु से घृणा करना
- अतिस्त्री प्रसंग की कामना
- मद्य तथा मांस सेवन की तीव्र इच्छा होना
- अन्न तथा पेय पदार्थों में मक्षिका, घुन, केश, तृण दिखाई देना

सामान्य लक्षण -

त्रिरूप राजयक्ष्मा -

" अंसपार्श्वभितापश्च सन्ताप: करपादयो: । ज्वर: सर्वाङ्गश्चेति लक्षणं राजयक्ष्मण: ॥ "

- अंस और पार्श्व में अभिताप (Burning sensations in scapular and costal region),
- हाथ पैर में दाह (Burning sensation in hands & feet),
- सम्पूर्ण शरीर में ज्वर (Fever)

षडरूप राजयक्ष्मा -

" भक्तद्वेषो ज्वर: श्वास: कास: शोणितदर्शनम् । स्वरभेदश्च जायते षड्पं राजयक्ष्मणि ॥ "

- अरुचि (Anorexia)
- श्वास (Dyspnea)
- ज्वर (Fever)
- रक्तष्ठीवन (Haemoptysis)
- कास (Cough)
- स्वरभेद (Harshness of voice)

एकादशरूप राजयक्ष्मा -

" स्वरभेदोऽनिलाच्छूलं संकोचश्चांसपार्श्वयो:। ज्वरो दाहोऽतिसारश्च पित्ताद्रक्तस्य चागम: ॥

शिरस: परिपूर्णत्वमभक्तच्छन्द एव च। कास: कण्ठस्य चोध्वंसो विज्ञेय: कफकोपत:।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **वात** के कारण - स्वरभेद, अंस तथा पार्श्व में शूल व संकोच
- **पित्त** के कारण - ज्वर, दाह, अतिसार, रक्तष्ठीवन
- **कफ** के कारण - सिर में भारीपन, भोजन में अरुचि, कास तथा कण्ठ में पीड़ा

असाध्य लक्षण -

- एकादश रुप, षरूप या त्रिरुप (कास, श्वास तथा रक्तष्ठीवन) से युक्त रोगी
- एकादश, षड्रुप या त्रिरूप से युक्त जिस रोगी का बल तथा मांस क्षय हो गया हो

- पर्याप्त भोजन करने पर भी निरन्तर क्षीण होने वाले
- अतिसार से पीडित या जिसके उदर तथा अण्डकोष में सूजन हो
- आंखे श्वेत हो, अन्न से घृणा करता हो
- ऊर्ध्व श्वास से पीडित रोगी

भेदानुसार एकादशरूप -

साहस जन्य	वेगविधारण जन्य	क्षयजन्य	विषमाशन जन्य
शिरःशूल	शिरःशूल	शिरःशूल	शिरःशूल
कण्ठोद्ध्वंस	अंसावमर्द	असंताप	असंताप
कास	कास	कास	कास
स्वरभेद	स्वरभेद	स्वरभेद	स्वरभेद
अरोचक	अरोचक	अरोचक	अरोचक
पार्श्वशूल	पार्श्वशूल	पार्श्वशूल	पार्श्वशूल
अतिसार	अतिसार	अतिसार	**रक्तवमन**
जृम्भा	अङ्गमर्द	अङ्गमर्द	**प्रसेक**
ज्वर	ज्वर	ज्वर	ज्वर
उरः शूल	प्रतिश्याय	प्रतिश्याय	प्रतिश्याय
रक्तमिश्रित	वमन कफ मिश्रित	कास	वमन

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विसूचिका रोग निदान

संदर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, विमान स्थान, अध्याय **2 " त्रिविध कुक्षीय विमान "**
- सुश्रुत संहिता, उत्तर तन्त्र, अध्याय **56 " विसूचिका प्रतिषेध "**
- अष्टाङ्ग हृदय, सूत्र स्थान, अध्याय **8 " मात्राशितीय अध्याय "**
- माधव निदान, पूर्वार्ध, अध्याय **6 " अग्निमान्द्याजीर्णविसूचिकाकालसकविलम्बिकानिदानम् "**

सामान्य व्याधि परिचय -

आचार्यों ने आमदोष से उत्पन्न होने वाले विकारों में अलसक, विसूचिका एवं विलम्बिका रोगों का वर्णन कया है। आचार्य चरक ने विमान स्थान में आमदोष से विसूचिका एवं अलसक की उत्पत्ति का वर्णन कया है। विसूचिका रोग में वमन एवं अतिसार दोनों लक्षण एक साथ पाये जाते हैं।

लक्षणों का अत्यर्थ साम्य होने से आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में वर्णित **Cholera** नामक रोग से विसूचिक साम्य किया जाता है।

परिभाषा -

" सुचीभिरिव गात्राणि तुदन् संतिष्ठते ऽनिलः। यत्राजीर्णेन सा वैद्यैविसूचीति निगद्यते ।। "

जिस रोग में अजीर्ण हो जाने से प्रकुपित वायु अङ्गों में सुई चुभोने सी वेदना उत्पन्न करती है उसे विसूचिका है। अर्थात् विसूचिका रोग में बात दोष की प्रधानता मानी गई है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निदान -

आचार्य चरकानुसार विसूचिका को आमप्रदोषज विकार माना गया है एवं आम उत्पत्ति के निम्न निदानों बताए है -

- अतिमात्रा में भोजन,
- गुरु, रुक्ष, शीत, शुष्क, विष्टम्भी, विदाही भोजन,
- अशुचि, अपवित्र भोजन,
- विरुद्ध भोजन, अकाल भोजन का सेवन करने से,
- काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, शोक, उद्वेग से तप्त मन होने पर आहार का सम्यक् परिपाक न होने से आमदोष उत्पन्न होता है

सम्प्राप्ति -

अतिमात्रा पूर्वक भोजनादि निदान सेवन से प्रकुपित त्रिदोष सेवन किये गये आहार को ऊर्ध्व व अधः मार्ग से आमरूप में बाहर निकालता है।

सम्प्राप्ति चक्र -

निदान सेवन

⇩

त्रिदोष प्रकुपित

⇩

कफ दुष्टि	पित्त दृष्टि	वात दुष्टि
आमाशय	अग्निमांद्य	पक्वाशय
⇩	⇩	⇩
अन्नवह स्रोतो दुष्टि	आमविष	पुरीषवह स्रोतो दुष्टि
⇩		⇩
विमार्गगमन		अतिप्रवृति
⇩		⇩
वमन		अतिसार
⇩		
विसूचिका रोग		

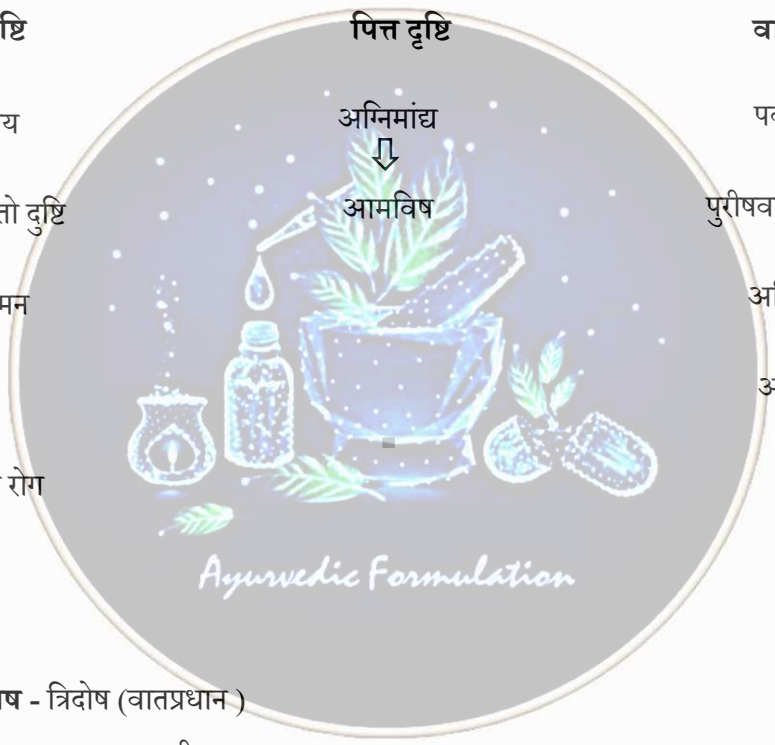

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** त्रिदोष (वातप्रधान)
- **दूष्य -** रस, अन्न, पुरीष
- **स्रोतस -** अन्नवह, पुरीषवह, उदकवह स्रोतस
- **स्रोतोदृष्टि -** संग, विमार्गगमन, अतिप्रवृत्ति
- **आशय -** आमपक्वाशयोत्थ
- **अग्नि -** मंद
- **व्याधि -** स्वभाव आशुकारी, उग्र
- **प्रत्यात्म लक्षण -** " ऊर्ध्वं चाधश्च प्रवृत्तामदोषां " (चरक)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विसूचिका लक्षण -

आचार्य चरकानुसार -

" ऊर्ध्वं चाधश्च प्रवृत्तामदोषां यथोक्तरुपां विसूच विद्यात् । "

उर्ध्व मार्ग, अधोमार्ग से आमदोष की प्रवृत्ति होने पर विसूचिका व्याधि जानना चाहिए।

आचार्य सुश्रुतानुसार -

- मूर्च्छा (Faint)
- बमन (Vomiting)
- शूल (Pain)
- उद्वेष्टन, जृम्भा (Yawning)
- वैवर्ण्य (Discolouration)
- हृत्प्रदेश में पीडा (Pain in chest)

विसूचिका उपद्रव -

" निद्रानाशोऽरतिः कम्पो, मूत्राघात विसंज्ञता । अमी ह्युपद्रवाघोरा, विसूच्यां पञ्च दारुणाः।। "

- निद्रानाश (Insomnia)
- कम्प (Tremors)
- संज्ञानाश (Loss of consciousness)
- अरति (Uneasyness)
- मूत्राघात (Obstruction of urine)

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अलसक निदान

संदर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, विमान स्थान, अध्याय **2 " त्रिविध कुक्षीय विमान "**
- सुश्रुत संहिता, उत्तर तन्त्र, अध्याय **56 " विसूचिका प्रतिषेध "**
- अष्टाङ्ग हृदय, सूत्र स्थान, अध्याय **8 " मात्राशितीय अध्याय "**
- माधव निदान, पूर्वार्ध, अध्याय **6 " अग्निमान्द्याजीर्णविसूचिकाकालसकविलम्बिकानिदानम् "**

सामान्य व्याधि परिचय -

आचार्य चरक ने अलसक का वर्णन भी विसूचिका के साथ आम प्रदोषज वि अन्तर्गत करते हुए अलसक को आमविष से उत्पन्न होने तथा विरुद्ध चिकित्सा उपक्रम होने से अत्यन्त असाध्य कहा है , आमाशय में आहार के पूर्णतः रुक जाने व ऊर्ध्व व अधः मार्ग से उसकी प्रवृत्ति न होने को अलसक कहा है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के लक्षणों के अनुसार अलसक का साम्य **Intestinal obstraction** से किया जाता है।

परिभाषा -

" प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न विपच्यते। आमाशयेऽलसी भूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः॥ "

आमाशय में अपक्व भोजन का पूर्णतया रुक जाना एवं किसी भी मार्ग से बाहर न निकलना ही अलसक कहलाता है।

निदान -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य चरक ने अलसक के निदानों का वर्णन निम्नानुसार किया है -

- दुर्बलाग्नि पुरुष,
- वात, मूत्र, मल का वेग धारण करना,
- अधिक कफ युक्त पुरुष,
- अध्यशन एवं विषमाशन
- स्थिर, गुरु, रुक्ष, पर्युषित, शुष्कान्न सेवन करना

सम्प्राप्ति -

निदान सेवन

⇩

बात एवं कफ का प्रकोप

⇩

प्रकुपित कफ द्वारा मार्गावरोध तथा प्रकुपित बात द्वारा भुक्ताहार को पीड़ित करना (रुक्ष गुण द्वारा आहार का शोषण करना)

⇩

अवरोध होने से भोजन का आमाशय में ही अलसी भूत होना (रुक जाना)

⇩

ऊर्ध्व व अधः मार्ग से अप्रवृत्ति

⇩

अलसक रोग की उत्पत्ति

सम्प्राप्ति घटक -

- दोष - वात, कफ, त्रिदोष
- दूष्य - अन्न
- स्रोतस - अन्नवह, पुरीषवह
- स्रोतोदुष्टि - संग
- स्वभाव - आशुकारी
- अधिष्ठान - आमाशय
- अग्नि - मंद
- साध्यतासाध्यता- कृच्छसाध्य

Ayurvedic Formulation

प्रत्यात्म लक्षण -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न विपच्यते । आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः।। "

लक्षण -

- कुक्षि आनाह (फूल जाना) (Distended abdomen),
- रोगी मूर्च्छित हो जाता है (Faintness),
- परिकूजन (अर्न्तनाद) (Discomfort due to severe abdominal pain),
- रुकी हुई वायु उदर के ऊपरी देश (हृदय कण्ठ आदि) में घूमती है (Flatulence),
- अधोवायु एवं मल का पूर्णतः अवरोध हो जाता है (Obstruction of flatus and feces),
- अत्यधिक तृष्णा एवं उद्गार से पीडित (Polydipsia and belching)

दण्डालसक - अलसक की उग्रावस्था में जब अधिक मात्रा में दूषित दोष अधिक दुष्ट आमदोष के मार्ग के रुक जाने से शरीर में तिर्यक गमन करते हुए सम्पूर्ण शरीर को दण्ड के समान जकड़ देते है तो उसे दण्डालसक कहते है।

साध्यतासाध्यता - विसूचिका के समान वर्णित है।

विलम्बिका निदान

सामान्य व्याधि परिचय -

विलम्बिका मुख्य रूप से आम दोष के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली व्याधि है जिसका वर्णन आचार्यों ने अलसक विसूचिका के साथ ही किया है। कफ एवं वात प्रधान व्याधि होने तथा आम रूप में उपस्थित अन्न का ऊर्ध्व या अधः मार्ग से प्रवर्तन न होने जैसे लक्षणों की उपस्थिति से यह अलसक के ही समान प्रतीत होती है वस्तुतः यह अलसक की भी प्रवृद्ध अवस्था कही जा सकती है।

निरुक्ति -

" तदनुबन्धेन दीर्घकाल विलम्बनात् विलम्बिकेत्युच्यते। "

जिस व्याधि में दीर्घकाल तक दोषों का अनुबन्ध बना रहे तथा आम दोष लीनावस्था में विलम्ब तक बने रहें उसे विलम्बिका कहते हैं।

परिभाषा -

अन्नवह स्रोतस दुष्टि जन्य, कफ एवं वात प्रधान वह व्याधि जो मुख्यतः अजीर्ण से उत्पन्न होती है तथा आम युक्त अन्न का प्रवर्तन ऊर्ध्व या अधः किसी भी मार्ग से नहीं हो पाता विलम्बिका कहलाती है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निदान - अजीर्ण में कहे गये समस्त निदान

लक्षण -

" दुष्टं तु भुक्तं कफमारुताभ्यां प्रवर्तते नोर्ध्वमधश्च यस्य।

विलम्बिकां तां भृशंदुश्चिकित्स्यामाचक्षते शास्त्रविदः पुराणाः॥ "

जिस रोग में कफ और बात से दुष्ट अन्न ऊपर या नीचे के किसी भी मार्ग से नहीं निकलता है प्राचीन शास्त्रविद इस अत्यन्त कष्ट साध्य व्याधि को विलम्बिका कहते है।

साध्यतासाध्यता - कृच्छ्रसाध्य या असाध्य

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसका समन्वय Paralytic ilius से किया जाता है।

अलसक एवं विलम्बिका मे भेद -

अलसक	विलम्बिका
सद्य: कालिक	विलम्ब से उत्पन्न
तीव्र शूल तथा आर्तनाद	शूल अनुपस्थित
मल तथा अधोवायु पूर्णतः अवरुद्ध	मल तथा अधोवायु का पूर्ण अवरोध
वात-कफ के संसर्ग से उत्पन्न	वात-कफ के संसर्ग से उत्पन्न
प्रारम्भ में साध्य जीर्ण होने पर असाध्य	प्रारम्भ से ही असाध्य व्याधि

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

IRRITABLE BOWEL SYNDROME

Definition -

Irritable bowel syndrome (IBS) is a functional bowel disorder (FBD characterized by abdominal pain or discomfort and altered bowel habits in the absence of detectable structural abnormalities.

Diagnostic criteria for IBS - Recurrent abdominal pain or discomfort at least. days per month in the last 3 months associated with two or more of the following -

1) Improvement with defecation
2) Onset associated with a change in frequency of stool.
3) Onset associated with a change in form (appearance) of stool.

Clinical features -

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **Incidences -** IBS is disorder that affects all ages, appearance of first symptom before age 45, women are predominant in prevalence.
- Pain and abdominal discomfort, associated with frequent diarrhoed, constipation and a chauge in bowel habits.
- Supportive symptoms: defecation straining, urgency or a feeling of incomplete bowel movement, passing mucus and bloating, Gastroesophageal reflux.

  - ✓ Chronic fotigue syndrome
  - ✓ Fibromaylagia
  - ✓ Depression and anxiety.

Types of IBS -

There are four types of the condition. There is IBS with constipation (IBS-C) and IBS with diarrhea (IBS-D). Some people have an alternating pattern of constipation and diarrhea. This is called mixed IBS (IBS-M). Other people don't fit into these categories easily, called unsubtyped IBS, or IBS-U.

Pathophysiology of IBS -

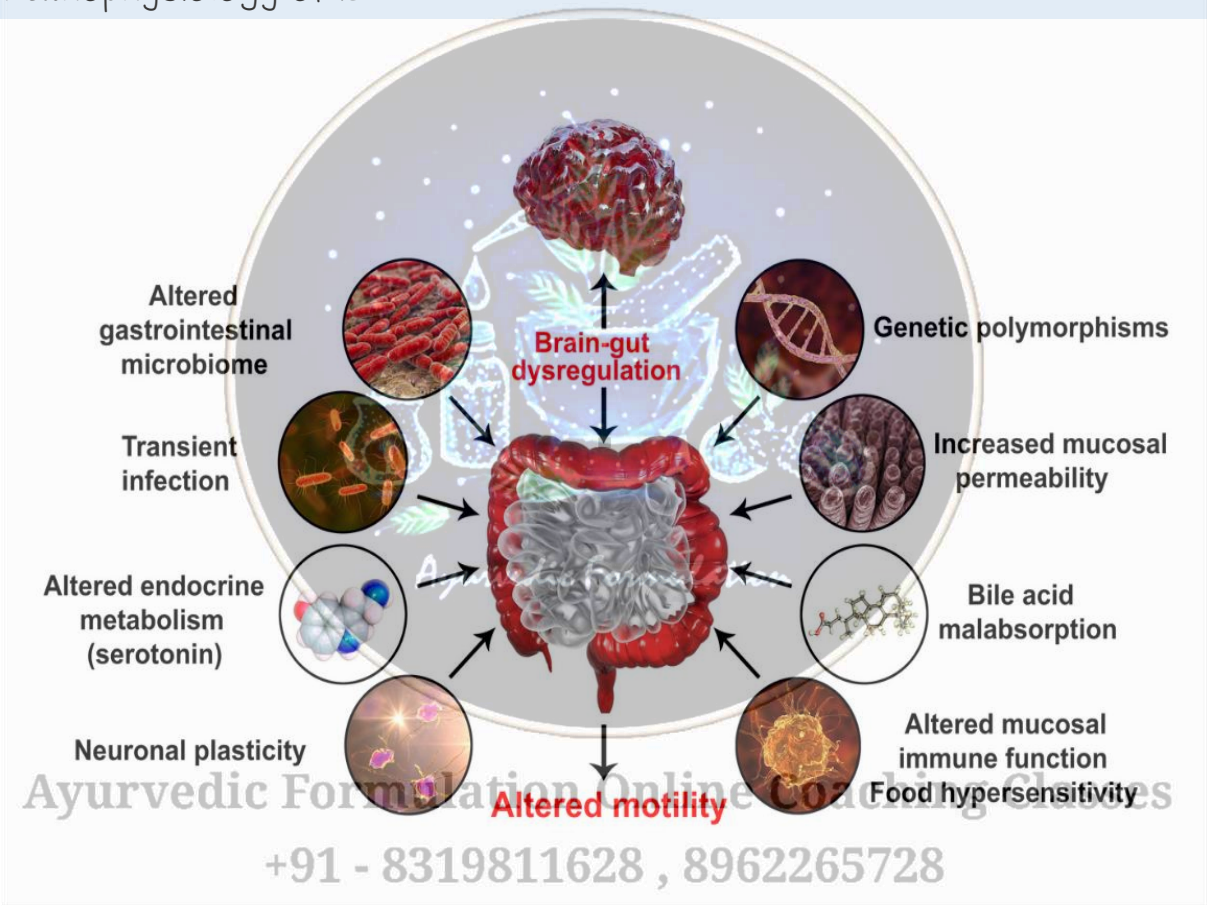

1) Gastro intestinal motor abnormalities -

Colonic motor abnormalities ⟶ IBS

2) Visceral hypersensitivity -

In IBS - Patients frequently exhibits exaggerated sensory response to visceral stimulation.

3) Central nerves degeneration -

Emotional disorder stress → gut brain axis abnormality → IBS

4) Abnormal psychological features → Influence pain thresholds in IBS .

5) Post infection IBS gastrointestinal infection → IBS

Risk factors for developing post infections IBS include -

- ✓ Prolonged duration of initial illness
- ✓ Smoking
- ✓ Female gender
- ✓ Hypochondriasis
- ✓ Toxicity of infecting bacterial strain
- ✓ Mucosal markers of inflammation
- ✓ Depression
- ✓ Adverse life events in the preceding 3 months.

6) Immune activation and mucosal inflammation: Persistent sign of low grade mucosal inflammation with activated lymphocytes, mast cells and enhanced expression of proinflammatory cytokines. → Abnormal epithelial secretion and visceral hypersensitivity → **IBS**

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

7) Altered gut flora → IBS

8) Abnormal serotonin pathways.

Differential diagnosis - Inflammatory bowel diseases like ulcerative colitis or Crohn's disease.

Diagnosis -

1) History and Physical examination -

2) Laboratory tests: no specific lab tests that can diagnose IBS, Investigations are performed to exclude other conditions –

- Stool tests (microscopy and culture): for blood or infections.
- Blood tests: to look for anemia, thyroid problems, and signs of infection - CBC, ESR. LFT, Thyroid profile test)
- Endoscopy and biopsies to exclude peptic ulcer disease, coeliac disease. inflammatory bowel disease, and malignancies)
- Abdominal X-rays, USG: to exclude gallstones and other biliary tract diseases Flexible sigmoidoscopy: to look for signs of blockage or inflammation in intestines
- Tests for lactose intolerance or celiac disease

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

श्वासरोग निदान

संदर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय 17 "हिक्काश्वासचिकित्साध्याय"।
- सुश्रुत संहिता, उत्तरतन्त्र, अध्याय 51 “श्वासप्रतिषेधवर्णन”।
- अष्टांङ्ग हृदय, चिकित्सास्थान, अध्याय - 4 “श्वासहिध्माचिकित्साध्याय"।

सामान्य व्याधि परिचय -

श्वास रोग प्राणवह स्रोतस की एक मुख्य व्याधि है। यह श्वास रोग स्वतंत्र रोग के रुप में तथा अन्य रोगों में लक्षणों तथा उपद्रव रुप में पाया जाता है। प्राणवह स्रोतस में अवरोधात्मक विकृति उत्पन्न होने से नियमित रूप से होने वाली श्वासोच्छवास की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है फलस्वरुप रोगी कष्टपूर्वक श्वास ग्रहण करता है।

हिक्का और श्वास ये दोनों रोग कफ एवं वात से उत्पन्न होते हैं तथा इनकी उत्पत्ति पित्त स्थान से होती है।

“ कफवातात्मकावेतौ पित्तस्थानसमुद्भवो ॥ " (च. चि. 17/8)

आचार्यों ने श्वास तथा हिक्का रोगों को अत्यंत दारुण तथा मारक मानते हुए कहा है कि संसार में ऐसी बहुत सी व्याधियाँ हैं जो प्राणों को नष्ट करने वाली होती हैं, परन्तु वे उतनी भयंकर नहीं हैं, जितनी की शीघ्र ही प्राणों का नाश करने वाली हिक्का तथा श्वास व्याधियाँ हैं।

“ कामं प्राणहरा रोगा बहवो न तु ते तथा। यथा श्वासश्च हिक्का च प्राणनाशु निकृन्ततः ॥ ”

(च. चि. 17/6)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अन्य किसी भी रोग से पीड़ित व्यक्ति अन्तिम समय में मृत्युकाल में पीड़ाकारक हिक्का या श्वास रोग से ग्रस्त हो जाता है।

“ मिथ्योपचरितौ क्रुद्धौ हत आशीविषाविव ॥ ” (च. चि. 17/9)

आचार्य सुश्रुत ने श्वास को महाव्याधि कहते हुए दुर्निवारणीय कहा है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र मे श्वास का साम्य Dyspnea से तथा तमक श्वास का साम्य Bronchial asthma से किया जाता है।

निरुक्ति एवं परिभाषा -

"पुः श्वसित्यनेनेति, श्वास+करणे घञ्ः यद्वा श्वसितोति-श्वस् स्याद् वद्येति।"।

- जिसमें श्वास क्रिया सम्पन्न होती है, उस व्यापार को श्वास कहा जाता है।
- अमरकोष के अनुसार "श्वास प्राणने" यानि श्वस् धातु प्राणने के अर्थ में लिया गया है,
- जिसका अर्थ प्राणों को धारण करने वाली प्राण वायु का व्यापार किया गया है।

निदान -

विदाहिगुरुविष्टम्भिरुक्षाभिष्यन्दिभोजनैः। शीतपानाशनस्थानरजोधूमातपानिलेः।।

व्यायामकर्मभाराध्ववेगाघातापतर्पणैः। हिक्का श्वासश्च कासश्च नृणां समुपजायते ॥

- विदाही (मरिच, सर्षप), गुरु (उड़द की दाल, शूकर मांसादि), विष्टम्भी, रुक्ष (चना) आदि के सेवन से,
- अभिष्यन्दि (दूध, दही, मछली) आदि पदार्थों का अधिक सेवन करने से,
- शीतल जल, शीतल आहार, शीतयुक्त स्थान का सेवन करना,
- धूल, धुँआ, धूप, तीव्र वायु के सम्पर्क से,
- अधिक व्यायाम, शक्ति से अधिक कार्य करना,
- अधिक भार उठाना, अधिक मार्ग गमन करने से,
- वेगधारण करने से, तथा अपतर्पण से (अत्यधिक उपवास आदि से पोषण की अल्पता से)
- मनुष्य में हिक्का, श्वास, कास रोग हो जाया करते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

श्वास रोग विशिष्ट सम्प्राप्ति -

यदा स्रोतांसि संरुध्य मारुतः कफपूर्वकः। विष्वग्व्रजति संरुद्धस्तदा श्वासान्करोति सः ।। (च. चि. 17/45)

आचार्य चरकानुसार जब कफ के साथ प्रकुपित वायु स्रोतसों (प्राणवह, अन्नवह, उदकवह) को अवरुद्ध कर तथा कफ के द्वारा स्वयं अवरुद्ध होकर शरीर में फैल कर प्राणवह स्रोतस में विकृत रूप से गमन करते हुए (विष्वग्व्रजति अर्थात् सभी ओर फैल जाना) शब्द युक्त कृच्छता पूर्वक श्वास प्रश्वास की क्रिया को सम्पन्न करती है तो उसे श्वास रोग कहते है।

सम्प्राप्ति चक्र -

उपरोक्त वर्णित कफ, वात वर्धक निदान सेवन

गुरु, विदाही कफवर्धक आहार सेवन शीतल पान, अन्न, स्थान सेवन आदि	रुक्षान्न, अपतर्पण, अत्यधिक व्यायाम, व्यवाय, भार उठाना, अध्वगमन, वेगधारण आदि
↓	↓
कफदुष्टि	वातदुष्टि
↓	↓
अग्निमांद्य	अग्निवैषम्य
↓	↓
आमोत्पत्ति	प्रकुपित वात

↓

रसधातु दुष्टि

↓

रसधात्वाग्निमान्द्य पूर्वक मलभूत कफ की उत्पत्ति

↓

वृद्ध कफ द्वारा प्राणवह स्रोतस में अवरोध होने से प्रकुपित वायु का विमार्गगमन

↓

श्वासकृच्छता पूर्वक श्वास रोग की उत्पत्ति

Ayurvedic Formulation

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** कफानुगत वात
- **दूष्य -** रसधातु
- **स्रोतस -** प्राणवह स्रोतस (प्रत्यक्ष रुप से) अन्नवह, उदकवह, रसवह स्रोतस
- **स्रोतोदुष्टि** - संग, विमार्गगमन
- **अधिष्ठान -** उरः प्रदेश
- **उद्भव स्थान -** पित्तस्थान सुमद्भवः (आमाशय समुत्थ)
- **अग्नि-** मंद अथवा विषम
- **व्याधिस्वभाव -** चिरकारी, दुर्जय
- **साध्यतासाध्यता -** क्षुद्र श्वास साध्य, तमक श्वास- याप्य, कृच्छसाध्य ,महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिन्न श्वास – असाध्य
- **प्रत्यात्म लक्षण -** पुनः पुनः श्वासोच्छवास प्रक्रिया का कष्टपूर्वक होना

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पूर्वरूप -

प्राग्रूपं तस्य हृत्पीडा शूलाध्मानमेव च । आनाही वक्रस्य शङ्खनिस्तोद एव च ।।

(सु. उ.51 /6)

- हृदय प्रदेश में पीडा, पार्श्वशूल होना (Pain in chest and costal region),
- आध्मान, आनाह (आम या मलावरोध से वात के द्वारा पेट फूलना) (Flatulence and constipation)
- मुख का स्वाद विकृत होना (Dystaste),
- शंख प्रदेश में सुई चुभाने सी पीडा होना (Pricking pain in temporal region) श्वास के पूर्वरुप कहे गये हैं।

भेद - सभी आचार्यों ने श्वास रोग के पाँच भेदों का वर्णन किया है -

महोर्ध्वच्छिन्नतमकक्षुद्रभेदैस्तु पञ्चधा। भिद्यते स महाव्याधिः श्वास एको विशेषतः ।।

(सु. उ.51/5)

आचार्य सुश्रुत ने श्वास को महाव्याधि स्वीकार करते हुए स्वरूप भेद से एक ही माना है, तथा लक्षणों की विविधता से 5 प्रकार का स्वीकार किया है -

1) महाश्वास,
2) ऊर्ध्वश्वास,
3) छिन्नश्वास,
4) तमक श्वास,
5) क्षुद्र श्वास

Ayurvedic Formulation

दोषानुसार श्वास रोग -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, क्षुद्रश्वास- वातदोष प्रधान
- छिन्नश्वास - कफ+वात प्रधान
- तमक श्वास - कफदोष प्रधान

1) महाश्वास -

- **महाश्वास में रुग्ण -** मत्त ऋषभ (सांड) के समान फुफकारने जैसे शब्द युक्त श्वास लेता है (Deep and noisy breath like that of mad bull),
- निरन्तर कष्ट पूर्वक श्वास (वात ऊर्ध्वशील होकर प्राणवह स्रोतोगत प्राणवायु को कुपित कर) (Dyspnea)

- **प्रनष्ट ज्ञान विज्ञान** - वायु की गति रुक जाने से रोगी का ज्ञान विज्ञान नष्ट हो जाता है (Loss of : orientation),
- **विभ्रान्त लोचन** - नेत्र विभ्रान्त (चंचल / अस्थिर) हो जाते है (Rolling eyes),
- मुख तथा नेत्र विवृत (फैल) जाते है (Distrotion of eyes and face),
- मल मूत्र का अवरोध हो जाता है (Retention of urine and stool),
- शब्द विशीर्ण (टूट जाते है, विकृत भाषा) हो जाते है (Feeble voice),
- मुख दीनता युक्त होता है (Anxious appearance),
- श्वास का शब्द इतना ऊँचा होता है कि दूर से ही श्वास निःश्वास का ज्ञान हो जाता है (Respiratiory sound becomes audible even from distance),
- महाश्वास का रोगी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त करता है (Instantaneous death)

2) ऊर्ध्व श्वास -

- **ऊर्ध्वदृष्टि** - (रोगी की दृष्टि ऊपर की ओर रहती है) तथा विभ्रान्त होकर इधर उधर देखना (Eyes remains upward),
- **प्रमुह्यन्** - मूर्छित हो जाता है (Unconsciousness),
- मुख शोष तथा बैचैनी से पीडित रहता है (Dry mouth and restlessness),
- ऊर्ध्वश्वास के प्रकुपित होने पर अधः श्वास रुक जाता है (Obstructed inspiration),
- मूर्च्छा, तमः प्रवेश (Faint and blackouts),
- मृत्यु (Fatal in nature)

आचार्य सुश्रुत ने उपरोक्त लक्षणों के अतिरिक्त हृदय, बस्ति, सिर इन मर्मस्थनों पर खिंचाव या वेदना तथा स्वर का विकृत होना भी स्वीकार किया है ।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) छिन्नश्वास -

- मर्म स्थान हृदय आदि की वेदना से पीडित हो श्वास नहीं ले पाता (Unable to respirate properly due to pain in vital organs),
- आनाह, स्वेदाधिक्य, मूर्च्छा (Suffering from constipation, perspiration and unconsciousness),
- बस्ति में दाह आदि से पीडित रहता है (Burning sensation in bladder),
- **विप्लुताक्ष -** नेत्र अश्रुपूर्ण रहते हैं (Watery eyes),
- क्षीणता, दौर्बल्य, कृशता (Emaciation and debility),
- **रक्तैकलोचन -** एक नेत्र का रक्तवर्ण हो जाना (Redness in one eye),

- संज्ञाहानि, मुखशुष्कता, विवर्णता, प्रलाप से पीडित रहता है (Loss of consciousness, dry mouth, } discoloration and delirium),
- शीघ्र ही मृत्यु प्राप्त होती है (Instantaneous death).

4) तमक श्वास -

श्वास का सामान्य रूप से पाया जाने वाला प्रकार तमक श्वास है। जो मुख्यतः कफदोषाधिक्य से उत्पन्न होता है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के संदर्भ में इसे Bronchial Asthma माना जाता है।

सम्प्राप्ति -

" प्रतिलोमं यदा वायुः स्रोतांसि प्रतिपद्यते। ग्रीवां शिरश्च संग्रह्य श्लेष्माणं समुदीर्य च ॥

करोति पीनसं तेन रुद्धो घुघुरुकं तथा। अतीव तीव्र वेगं च श्वासं प्राणप्रपीडकम् ॥ "

(च. चि. 17/55-56)

जब प्रतिलोम अर्थात् विरुद्ध गति को प्राप्त वायु प्राणवह स्रोतस में स्थित होकर ग्रीवा तथा शिर को जकड़कर कफ को और भी उदीर्ण कर पीनस रोग को उत्पन्न कर देता है, कफ से अवरुद्ध वात घुरघुर शब्द से युक्त प्राणों को कष्ट देने वाले एवं अत्यन्त तीव्र वेगों से युक्त तमक श्वास को उत्पन्न करता हैं।

सम्प्राप्ति चक्र -

वातप्रकोपक आहार विहार का सेवन (सन्निकृष्ट निदान)

शीतऋतु, वर्षाऋतु, प्रातःकाल (विप्रकृष्ट निदान)

↓

कफाधिक्य + वातप्रकोप

↓

कफ द्वारा मार्गावरोध

↓

वात की प्रतिलोमगति (विमार्गगमन)

↓

तमक श्वास

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लक्षण -

- तमः प्रवेश, तृष्णा, निश्चेष्ट हो जाता है (Drakness in front of eyes, thirst, loss of activity)
- बार बार कास का वेग आना (Frequent bouts of cough),
- खांसते खांसते मूर्च्छित हो जाना (Faint due to continuous coughing)
- कास के कफ युक्त होने पर अत्यंत कष्ट तथा कफ निकल जाने पर कुछ समय के लिए सुख का अनुभव करता है। (Aggravated coughing relieved for sometime after expectoration)
- कण्ठध्वसं तथा बोलने में कठिनाई होना (Choking of throat, difficulty in speaking),
- लेटने पर कष्ट का बढ़ जाना (Aggravated during lie down position),
- लेटने पर प्रतिलोम हुई वायु उसके पार्श्व को जकड़कर पीडा उत्पन्न करती है अतः रोगी सो नही पाता (Unable to sleep),
- **आसीनो लभते सौख्यं -** बैठने पर सुख की अनुभूति होती है (Comfortable with sitting posture),
- **ऊष्णं चैवाभिनन्दति -** ऊष्ण वस्तुओं की इच्छा होती है (Desire for hot things),
- **उच्छ्रिताक्ष -** नेत्र ऊपर की ओर रहते हैं (Upward eyes),
- **ललाटेन स्विद्यता भृशम् -** ललाट में अधिक स्वेद से पीडित रहता है (Excessive perspiration on forehead),
- मुख शोष से पीडित (Dry mouth), बार बार श्वास लेता है, तीव्र वेग से श्वास छोड़ता है (Frequent dyspnea),
- **मेघाम्बुशीत प्राग्वतैः श्लेष्मलैश्च विवर्धते** - मेघकाल (बादल होने पर, वर्षाऋतु में), शीत ऋतु में, शीतल पूर्वी वायु से, कफवर्धक आहार विहार से श्वास बढ़ जाता है। (Aggravates during cloudy days, cold season, breeze from east and consumption of kapha aggravating factors)

उपरोक्त लक्षणों से युक्त तमक श्वास याप्य तथा नवीन होने पर साध्य होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

तमक श्वास भेद - आचार्यों ने तमक श्वास के निम्न दो भेदों का वर्णन किया है -

1) प्रतमक श्वास
2) संतमक श्वास

1) प्रतमक श्वास लक्षण -

ज्वरमूर्च्छापरीतस्य विद्यात् प्रतमकं तु तम्। (च. चि. 17/63)

ज्वर तथा मूर्च्छा युक्त तमक श्वास को प्रतमक श्वास कहा गया है (Presence of fever and faint).

2) संतमक श्वास -

उदावर्तरजोऽजीर्णक्लिन्नकायनिरोधजः ।

उदावर्त रोग के कारण, मुख या नासिका मार्ग में धूल के प्रवेश से, अजीर्ण से, शरीर की क्लिन्नता से (शरीर के गीले या आर्द्र रहने से) तथा मलमूत्र का वेग धारण करने से उत्पन्न होने वाला श्वास संतमक श्वास कहा जाता रूप से पित्त के कुपित होने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है।

- **तमसा वर्धतेऽत्यर्थ -** तम से अर्थात् रात्रि के समय में बढ़ जाता है (Aggravates during night),
- **शीतैश्चाशु प्रशाम्यति -** शीतल आहार-विहार से शीघ्र ही शान्त हो जाता है (Relieved quickly by cold things),
- **मज्जतस्तमसीव -** रोगी अपने आपको अंधकार में डूबा हुआ प्रतीत करता है, इन लक्षणों से युक्त श्वास में संतमक श्वास कहलाता है (Patient feels like he is submerged in darkness).

5) क्षुद्रश्वास लक्षण -

- रुक्ष पदार्थों के सेवन से तथा आयास जन्य क्षुद्रः (अल्प) वायु कोष्ठ में कुपित होकर प्राणवह स्रोतस में बढ़कर क्षुद्र श्वास उत्पन्न करती है।
- क्षुद्र श्वास शारीरिक अंगों को अत्यधिक पीडा नहीं देता तथा अन्य श्वास भेदों की तरह क्षीण भी नही करता, भोजन तथा पेय पदार्थों को पीने में भी कष्ट नहीं देता (Not troublesome)
- इन्द्रियों में भी कोई पीडा या विकृति नहीं होती (Does not afflict sense organs)
- क्षुद्र श्वास साध्य होता है, विश्रामपूर्वक (Subcides with rest) स्वयं शान्त हो जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628, 896225728

साध्यतासाध्यता -

क्षुद्रः साध्यो मतस्तेषां तमकः कृच्छ्र उच्यते। त्रयः श्वासा न सिध्यन्ति तमको दुर्बलस्य च ।।

(सु. उ. 51/14)

आचार्य सुश्रुतानुसार -

- **क्षुद्र श्वास -** साध्य।
- **तमक श्वास -** कृच्छसाध्य, जीर्ण तथा दुर्बल रोगी का तमक श्वास असाध्य होता है। (चरक-याप्य)
- महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिन्नश्वास असाध्य होते हैं।

आचार्य चरक ने भी उक्त मत स्वीकार करते हुए तमक श्वास को याप्य तथा नवीन तमक श्वास को साध्य कहा है।

श्लीपद निदान

सन्दर्भ ग्रंथ -

- चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय **12 "श्वयथू चिकित्सा "**
- सुश्रुत संहिता, निदान स्थान, अध्याय **12 "वृद्ध्युपदशंश्लीपद निदानम्"**
- अष्टाङ्ग हृदय, उत्तर तंत्र, अध्याय- **29 "ग्रन्थ्यर्बुदश्लीपदापचीनाड़ीविज्ञानीय"**

सामान्य व्याधि परिचय -

आयुर्वेदीय संहिताओं में श्लीपद का वर्णन स्वतंत्र व्याधि के रूप में माधवकर ने किया, आचार्य चरक ने ध्यायन्तर्गत श्लीपद का वर्णन किया है। सामान्य भाषा में श्लीपद को हाथी पाँव के नाम से जाना जाता है, तथा बाहुल्य मुख्यतः कफदोष प्रधान, आनूप देशों में अधिक देखा जाता है। **(जलप्रायमनूपं स्यात्)**

श्लीपद बाहुल्य देश -

पुराणोदकभूयिष्ठाः सर्वर्तुषु च शीतलाः । ये देशास्तेषु जायन्ते श्लीपदानि विशेषतः।।

(सु. नि. 12/17) (मा. नि. 39/6)

पुराने जल से सदा भरे रहने वाले देश, सभी ऋतुओं में शीतल रहने वाले देश में श्लीपद बहुलता से पाया जाता है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में इसका साम्य Fileria से किया जाता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निरुक्ति -

शिलावत् पदं श्लीपदं।। शनैः शनैघनं शोफं श्लीपदं तत्प्रचक्षते ।। (अष्टाङ्ग संग्रह)

जिस व्याधि में पैर शिला के समान स्थूल एवं कठोर हो जाता है उसे श्लीपद कहते हैं। धीरे धीरे होने वाला घन शोथ श्लीपद कहलाता है।

निदान सम्प्राप्ति -

दोष प्रकोपक निदान सेवन (मुख्यतः कफ दोष प्रधान - आनूप देश)

↓

दोष प्रकोप

↓

दोषो का अधः गमन

↓

वंक्षण, ऊरु, जानु तथा जंघा में अवस्थित

↓

कालान्तर से पैर को आश्रय कर शोथ उत्पन्न करते हैं

↓

श्लीपद रोग

सम्प्राप्ति घटक -

- **दोष -** त्रिदोष, कफ प्रधान
- **दूष्य -** रस, रक्त, लसीका
- **स्त्रोतस -** मुख्यतः रक्तवह स्त्रोतस , संक्रमण जन्य व्याधि
- **अधिष्ठान -** वक्षण, ऊरु, जानु, जंघा
- **व्याधि स्वभाव -** चिरकारी, दारुण
- **साध्यतासाध्यता -** कृच्छ्रसाध्य
- एक वर्ष से अधिक पुराण असाध्य

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सामान्य लक्षण -

जङ्घासु पिण्डीप्रपदोपरिष्टात् स्याच्छलीपदं मांसकफास्त्रदोषात्।

(च. चि. 12/98)

मनुष्यों में जो ज्वरपूर्वक अधिक पीडायुक्त शोथ वंक्षण प्रदेश में उत्पन्न होकर क्रमशः नीचे की ओर पैर में चला जाता है उसे श्लीपद कहते हैं। कुछ विद्वान हाथ, कान, मूत्रेन्द्रिय, ओष्ठ तथा नासिका में भी इसकी उत्पत्ति मानते हैं।

भेद -

आचार्य चरक - श्लीपद का 1 भेद माना है

आचार्य सुश्रुत - 3 भेद

1) वातिक,
2) पैत्तिक,
3) कफज

अष्टाङ्ग हृदय एवं माधव निदान - 3 भेद

1) वातिक,
2) पैत्तिक,
3) कफज

1) वातिक श्लीपद -

- वातिक श्लीपद कृष्ण वर्ण का (Blackish discoloration)
- रुक्ष, स्फुटित दरारयुक्त (Rough and cracked edema),
- तीव्र वेदना युक्त (Severe pain),
- अकारण तीव्र रुजा युक्त, प्रायः ज्वर से युक्त होता है (Severe pain without reason and fever)

2) पैत्तिक श्लीपद -

- पीतवर्ण का (Yellowish discoloration),
- दाहयुक्त, ज्वर युक्त (With burning sensation and fever)
- स्पर्श में मृदु होता है (Soft edema),

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) कफज श्लीपद -

- श्लैष्मिक श्लीपद स्निग्ध, श्वेतवर्ण युक्त, पाण्डु वर्ण युक्त, गुरु तथा स्थिर होता है (Whitish or pale edema, heavy and stable at the site)

श्लीपद रोग में कफ दोष प्राधान्य -

त्रीण्यप्येतानि जानीयाच्छलीपदानि कफोच्छ्रयात् । गुरुत्वं च महत्वं च यस्मान्नास्ति कफ बिना ।।

(सु. उ. 12/16) (मा. नि. 39/5)

ये तीनों ही प्रकार के श्लीपद कफ की प्रधानता से होते हैं, यथा गुरुता भारीपन एवं महत (मोटापन / स्थूलता) कफ दोष के बिना संभव नहीं है।

साध्यतासाध्यता -

वल्मीकमिव संजातं कण्टकैरुपचीयते । अब्दात्मकं महत्तच्च वर्जनीयं विशेषतः ॥

(मा. नि. 39/4)

- संवतसरातीतम् - एक वर्ष से अधिक पुराण,
- महद्वल्मीकजातं अनेक शिखरादि से युक्त,
- प्रसृत - फैलने वाला या स्राव युक्त,
- श्लीपद असाध्य माना गया है

कफ प्रकृति वाले पुरुष को कफवर्धक आहार विहार का सेवन करने से उत्पन्न, स्राव युक्त, अधिक उन्नत, सब दोषों के लक्षण से युक्त, कण्डु युक्त, कफ बहुल श्लीपद को असाध्य जानना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कामला निदान

संदर्भ ग्रन्थ -

- चरक संहिता, चिकित्सा स्थान, अध्याय - **16 "पाण्डुरोगचिकित्सा"**
- सुश्रुत संहिता, उत्तर तन्त्र, अध्याय - **44 "पाण्डुरोगप्रतिषेधध्याय"**
- अष्टाङ्ग हृदय, निदान स्थान, अध्याय - **13 "पाण्डुरोगशोफविसर्प**

सामान्य व्याधि परिचय -

आयुर्वेदीय संहिताओं में कामला का वर्णन सभी आचार्यों ने पाण्डु रोगाध्याय के अन्तर्गत किया है। कामला मुख्य रूप से रक्तवह स्रोतस दुष्टि जन्य व्याधि है जिसमें रक्त, पित्त दोष द्वारा दूषित हो त्वक, नेत्र, मुख आदि में हारिद्रपीत वर्ण की विवर्णता उत्पन्न करता है। आचार्य चरक कामला को पाण्डु रोग की प्रवृद्ध अवस्था मानते हैं, आचार्य सुश्रुत ने कामला को पाण्डू रोग की अवस्था मानते हुए, अन्य व्याधियों के उपद्रव स्वरूप में भी स्वीकार किया है।

आचार्य हारीत ने कामला तथा हलमीक को पाण्डु रोग का भेद माना है। सामान्य भाषा में इसे 'पीलिया' नाम से जाना जाता है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में कामला का साम्य Jaundice से किया जाता है।

Ayurvedic Formulation

परिभाषा -

कामला मुख्य रूप से रक्तवह स्रोतसगत, पित्त दोष प्रधान व्याधि है जिसमें पित्त वर्धक पदार्थों का सेवन करने से बढ़ा हुआ पित्त दूषित होकर रक्त एवं मांस को भी दूषित कर, त्वक्, नख, नेत्र आदि में हारिद्र पीत वर्ण उत्पन्न करता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

निदान -

" पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते। " (च. चि. 6/34)

- पाण्डु रोग से पीड़ित व्यक्ति द्वारा पित्त वर्धक का सेवन करना
- उपरोक्त के अतिरिक्त पदार्थों का सेवन करना पाण्डु रोग में वर्णित निदानों को कामला रोग का निदान स्वीकार किया जा सकता है।
- आचार्य सुश्रुत ने भी व्याधि के अन्त में अम्ल, अन्न, मद्यपान, अपथ्य सेवन से कामला की उत्पत्ति मानी हैं।

सम्प्राप्ति -

" पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते। तस्य पित्तमसृऽमासं दग्ध्वा रोगाय कल्पते ।।

हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः। रक्तपित्तशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः।। "

(च. चि. 16/34-35) (मा. नि. 8/16-17)

जो पाण्डुरोगी अत्यधिक पित्तवर्धक पदार्थों यथा कटु, अम्ल, क्षार, ऊष्ण, तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन करता है उसका पित्त और अधिक दूषित हो जाता है एवं रक्त और मांस को भी अत्यधिक दूषित कर कामला रोग उत्पन्न करता है। रोगी के नेत्र, त्वचा, मुख, नख हारिद्र वर्ण के, तथा मल-मूल रक्तमिश्रित पीत वर्ण के दिखाई देते हैं।

सम्प्राप्ति चक्र -

पाण्डु रोगी द्वारा पित्तवर्धक आहार-विहार का सेवन

↓

प्रकुपित पित्त का अधिक दूषित हो जाना (ऊष्णता तथा तीक्ष्णता में वृद्धि)

↓

रक्त एवं मांस को दूषित कर

↓

त्वक, नेत्र, नख आदि में हारिद्र वर्ण की उत्पत्ति

↓

कामला

सम्प्राप्ति घटक -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- **दोष -** पित्त प्रधान त्रिदोष
- **दूष्य -** रक्त, मांस
- **स्रोतस -** रक्तवह
- **स्रोतोदुष्टि -** संग, विमार्गगमन। अग्नि - मंद
- **अधिष्ठान -** त्वक्, नेत्र, नख, मूत्र, मल
- **स्वभाव -** चिरकारी
- **साध्यतासाध्यता -** साध्य
- **प्रत्यात्म लक्षण -** "हारिद्रनेत्र स भृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः। "

पूर्वरूप - कामला के पूर्वरूपों का वर्णन संहिताओं में प्राप्त नहीं है।

सामान्य लक्षण -

" हारिद्रनेत्रः स भृशं हारिद्रत्वङ्नखाननः। रक्तपीतशकृन्मूत्रो भेकवर्णो हतेन्द्रियः ॥

दाहाविपाकदौर्बल्यसदनारुचिकर्षितः। कामला बहुपित्तौषा कोष्ठशाखाश्रया मता ॥ "

(च. चि. 16/35-36) (मा. नि. 8 / 17-18)

- नेत्र, त्वक्, नख, मुख का हारिद्र वर्ण होना (Yellowish colour of eyes, skin, nails)
- मल तथा मूत्र का रक्त मिश्रित पीत वर्ण का होना (Yellowish or reddish colour of urine and stool)
- **भेकवर्ण -** रोगी का वर्ण बरसाती मेंढ़क के समान हो जाता (Discolored like rainy frogs)
- इन्द्रियाँ अपने विषय को ग्रहण करने में असमर्थ हो जाती हैं (Sense organs not works properly)
- दाह (Burning senssation)
- दौर्बल्य (Weakness)
- अविपाक (Indigestion)
- साद (Lassitude)
- अरुचि (Anorexia)
- कर्षित (Emaciated)

भेद -

1) शाखाश्रित कामला,
2) कोष्ठाश्रित कामला,
3) उभयाश्रित कामला

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आचार्य वाग्भट के अनुसार -

1) स्वतन्त्र कामला - स्वकारणों से उत्पन्न कामला
2) परतन्त्र कामला - पाण्डु रोग या अन्य रोगों के पश्चात् अपथ्य सेवन उत्पन्न कामला

भेदानुसार सम्प्राप्ति तथा लक्षण -

1) शाखाश्रित कामला -

निदान -

- रुक्ष, शीत, गुरु, मधुर आहार का सेवन करने से
- अत्यधिक व्यायाम करने से
- वेग विधारण करने से

सम्प्राप्ति -

उपरोक्त निदान सेवन से कुपित कफ द्वारा मार्गवरोध होने से, प्रकुपित वायु पित्त को अपने स्थान से निकाल कर शाखाओं (रस रक्ताधि धातुओं) में ले जाती है। पित्त के शाखओं में आश्रित होने से त्वक, नेत्र, मुख हारिद्र वर्ण के हो जाते हैं। कफ द्वारा मार्गवरोधित होने से शाखाओं में आश्रित पित्त दोष पुनः कोष्ठ में नही आ पाता फलस्वरूप श्वेत वर्ण का पुरीष त्याग करता है। कामला की इस अवस्था को शाखाश्रित कामला कहते हैं ।

सम्प्राप्ति चक्र -

गुरु शीत मधुर आदि निदान सेवन → कफ कुपित

अतिव्यायाम, वेगविधारण → वात प्रकुपित

↓

कुपित कफ द्वारा मार्गावरोध

↓

वृद्ध वात पित्त को अपने स्थान (पित्ताशय) से निकाल कर शाखाओं में आश्रित करना

↓

त्वक्, नेत्र, नख, मूत्र का हारिद्र वर्ण होना

↓

(कफ द्वारा मार्गवरोध होने से पित्त कोष्ठ में पुनः नहीं आ पाता)

↓

मल का श्वेत वर्ण होना

↓

शाखाश्रित कामला

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लक्षण -

- नेत्र, मुख, त्वक्, नख का वर्ण पीत होना (Yellowish discoloration)

" तिलपिष्ट निभं यस्तु वर्चः सृजति कामली ॥ " (च. चि. 16/124)

- पुरीष का श्वेत वर्ण होना (White colored stool) आटोप (Gargling sound in abdomen)
- विष्टम्भ (Staris of feces and urine)
- हृदय में गुरुता (Heaviness in cardiac region)
- दुर्बलता (Weakness)
- अल्प अग्नि (Dimnished digestive capacity)
- पार्श्व में पीड़ा (Pain in costat region)
- हिक्का श्वास (Hiccough and breathlessness)
- अरुचि (Anorexia)
- ज्वर (Fever)

2) कोष्ठाश्रित कामला -

" कटुतीक्ष्णोष्णलवणैर्भृशाम्लैश्चाप्युपक्रमः। आपित्तरागाच्छकृतो वायोश्चाप्रशमाद्भवेत्।

स्वस्थानमागते पित्ते पुरीषे पित्तरञ्जिते ॥ निवृत्तोपद्रवस्य स्यात् पूर्वः कामलिको विधिः॥ "

(च. चि. 16/130-132)

निदान - कटु, तीक्ष्ण, ऊष्ण, लवण, अम्ल का अधिक सेवन, पित्त प्रकोपक अन्य उपक्रमों का सेवन।

सम्प्राप्ति चक्र - कटु, तीक्ष्ण, ऊष्ण आदि पित्तवर्धक निदान सेवन

↓

पित्त अत्यधिक कुपित हो रक्त धातु को अत्यधिक दूषित कर देता है (रक्तकणों को नष्ट कर)

↓

पुनः कोष्ठ में आश्रित हो पुरीष को रञ्जित कर पीत वर्ण का पुरीष त्याग करता है।

↓

शाखा में आश्रित हो त्वक्, नख, नेत्र को पीत वर्ण का कर देता है

↓

उभयाश्रित कामला

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लक्षण -

- त्वक्, नख, नेत्र का पीत वर्ण होना (Yellowish discolouration of skin, nails, eyes etc.)
- पुरीष का पीत वर्ण होना (Yellowish stool)

कुम्भकामला -

कालान्तरात् खरीभूता कृच्छ्रा स्यात्कुम्भकामला । (च. चि. 16/37)

युक्त समय व्यतीत होने पर पित्त की ऊष्मा से समस्त धातुओं के खर होने से धातुओं की रुक्षता से की उत्पत्ति होती है। जिसे कृच्छ्रसाध्य माना गया है। आचार्यों के अनुसार कुम्भकामला कामला की ही कुम्भकामला प्रवृद्ध अवस्था है ।

लक्षण -

भेदस्तु तस्याः खलु कुम्भसाह्व शोथो महास्तत्र च पर्वभेदः ।। (सु. उ. 44 / 11)

- महान शो युक्त (Edema)
- पर्वभेद (Pain in joints)

साध्यतासाध्यता -

छर्दि, अरुचि, हृल्लास, ज्वर, क्लम, श्वास, कास, अतिसार से पीड़ित कुम्भकामला असाध्य होता है ।

हलीमक - पाण्डु की अवस्था विशेष - वात पित्त प्रधान ।

लक्षण -

- हरित, श्याव, पीत वर्ण (Greenish, blackish, yellowish discolouration)
- बल तथा उत्साह नष्ट हो जाय (Loss of strength and enthusiasm)
- अग्नि मंद हो (Decreased digestive fire)
- मृदु ज्वर (Mild fever)
- स्त्रियों से व्यवाय की इच्छा न हो (Lack of sexual desire)
- अङ्गमर्द (Body ache)
- दाह, तृष्णा, अरुचि, भ्रम से पीड़ित होता है (Burning sensation, thirst, anorexia, vertigo)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628, 896225728

कामला साध्यतासाध्यता -

- जिस रोगी के मल-मूत्र, कृष्ण-पीत वर्ण के हों,
- नेत्र, मुख, रक्त वर्ण के हो,
- मूर्च्छा, दाह, अरुचि, तृष्णा, आनाह,
- जिसकी अग्नि तथा संज्ञा नष्ट हो गई हो, ऐसे रोगी असाध्य होते हैं
- शोथ युक्त हो,
- रक्त वर्ण का वमन, मल, मूत्र हो,
- तन्द्रा, मोह से पीड़ित हो,

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728